''ढूंढाड़ के आदिवासी लोकगीतों में स्त्री की छवियाँ''

(IMAGES OF WOMEN IN DHUNDHAR TRIBAL FOLKSONGS)

एम.फिल. की उपाधि के लिए प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध

शोध-निर्देशक
डॉ. रमण प्रसाद सिन्हा

शोधार्थी
सीमा मीणा

भारतीय भाषा केन्द्र
भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अध्ययन संस्थान
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय
नई दिल्ली-110067

2014

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय
JAWAHARLAL NEHRU UNIVERSITY
Centre of Indian Languages
School of Language, Literature & Culture Studies
New Delhi-110067, INDIA

Dated : 28/07/2014

DECLARATION

I hereby declare that the research work done in this M.Phil Dissertation entitle "**DHUNDHAR KE AADHIWASI LOKGEETON MEIN STREE KI CHHAVIYA (IMAGES OF WOMEN IN DHUNDHAR TRIBAL FOLKSONGS)**" by me is the original research work and it has not been previously submitted for any other degree in this or any other University/Institution.

Seema Meena
(Research Scholar)

Dr. Raman Prasad Sinha
(Supervisor)
Centre of Indian Languages
School of Languages,
Literature & Culture Studies
Jawaharlal Nehru University
New Delhi-110067

(Chairperson)
Centre of Indian Languages
School of Languages,
Literature & Culture Studies
Jawaharlal Nehru University
New Delhi-110067

अनुक्रमणिका

भूमिका i-v

प्रथम अध्याय : ढूंढाड़ प्रदेश का परिचय 1-15

(क) ढूंढाड़ प्रदेश का ऐतिहासिक परिचय

(ख) ढूंढाड़ प्रदेश का भौगोलिक परिचय

(ग) ढूंढाड़ प्रदेश का सांस्कृतिक परिचय

(घ) ढूंढाड़ प्रदेश का सामाजिक जीवन परिचय

(ङ) ढूंढाड़ के आदिवासी समाज की सामान्य जीवन शैली

द्वितीय अध्याय : ढूंढाड़ी लोकगीतों का परिचय 16-70

(क) लोकगीतों का अर्थ, परिभाषाएँ एवम् महत्व

(ख) ढूंढाड़ के आदिवासी लोकगीतों का वर्गीकरण

(ग) ढूंढाड़ के आदिवासी लोकगीतों में स्त्री की भूमिका

(घ) ढूंढाड़ के लोकगीतों में प्रयुक्त होने वाले वाद्य और उनका प्रयोग

(ङ) ढूंढाड़ के लोकगीतों की शिल्प विधान व्यवस्था

तृतीय अध्याय : ढूंढाड़ी लोकगीतों में स्त्री की छवियाँ 71-119

(क) परिवार में स्त्री की छवि

(ख) परिवार के बाहर बृहत्तर आधुनिक समाज में स्त्री की छवि

(ग) ढूंढाड़ की पौराणिक लोकगीतों में पारिवारिक स्त्री की छवि

उपसंहार 120-123

परिशिष्ट 124-219

I. ढूंढाड़ के आदिवासी लोकगीतों का हिन्दी अनुवाद

II. ढूंढाड़ के आदिवासी लोक-गायक-गायिकाओं से किए गए साक्षात्कार

संदर्भ ग्रंथ सूची 220-222

भूमिका

जयपुर की पुरानी राजधानी आमेर राज्य को 'ढूंढाड़' कहते हैं इस में जयपुर, दौसा, टोंक, अलवर, करौली तथा सवाईमाधोपुर के कुछ भाग आते है। ऐसे भी जयपुर के जिले को बोलचाल की भाषा में 'ढूंढाड़' ही कहा जाता है यहाँ की भाषा ढूंढाड़ी है राजस्थान की जनसंख्या का छः प्रतिशत मीणा आदिवासी जाति का है इसके साथ ही यह प्रदेश बड़गूजर, जाट, गुर्जर, राजपूत आदि कई जातियों का मिलाजुला सांस्कृतिक बिम्ब प्रस्तुत करता है।

मेरा बचपन ढूंढाड़ प्रदेश के दौसा जिले में बीता। यहाँ का रहन-सहन, बोली, खान-पीन, रीति-रिवाज, उत्सव, त्यौहार, वेशभूषा ने सदा मुझे आकर्षित किया है, विशेषतौर पर ढूंढाड़ी लोकगीतों से मेरा हमेशा आत्मीय लगाव रहा। जब मुझे शोध करने का अवसर मिला तो मेरी प्रबल इच्छा हुई कि मैं ढूंढाड़ी लोकगीतों को वृहत्तर समाज के समक्ष रखूँ। राजस्थान के अन्य भागों पर काफी कार्य हुआ है किन्तु अतः मैंने ढूंढाड़ प्रदेश पर काम हुआ है। जिस प्रकार स्त्री के बिना समाज की कल्पना नहीं की जा सकती उसी प्रकार स्त्री का दुख, भय, पीड़ा, प्रतिरोध की ध्वनि के बिना किसी संस्कृति व समाज के लोकगीत का सृजन हो पाना नामुमकिन है। लोकगीतों में स्त्री के आसुओं का एक समन्दर लहराता दिखता है। वह अपने शोक, दुःख और पीड़ा को लोकगीतों में गाकर व्यक्त करती आई है, इसलिए यहाँ महिलाओं को लोकगीतों का जनक या रचयिता माना गया है। क्योंकि प्राचीनकाल से स्त्रियाँ अपने दुखों को गीत बनाकर समाज के समक्ष रखती आई हैं, ऐसे में लोकगीतों में उनके दुख दर्द का इतिहास आज भी सुरक्षित है। परन्तु ढूंढाड़ क्षेत्र में लोकगीत आज भी जनश्रुति पर आधारित है ये पारंम्परिक लोकगीत किसी पुस्तक से नहीं, सीधे लोकहृदय से, लोक वाणी में उतरे है, अतः इन गीतों से लोक को समझा जा सकता है यदि यह लिखित रूप में हमारे समक्ष होते तो साथ ही समाज के अन्य लोग भी इनका आनन्द ले पाते इसके साथ ही ढूंढाड़ प्रदेश का वास्तविक स्वरूप समाज के समक्ष आ पाता।

अतः इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए मैंने अपने एम. फिल. के लघु शोध प्रबंध में "ढूंढाड़ के आदिवासी लोकगीतों में स्त्री की छवियाँ" शीर्षक विषय

पर अपना लघुशोध कार्य शुरू किया। मैंने यह विषय इसलिए भी चुना था कि ढूंढाड़ क्षेत्र की मौखिक परम्परा जो कि लोकगीतों में बसती है। उसे लिखित परम्परा में लाकर लिपिबद्ध भी किया जा सके।

इस कार्य हेतु मैंने तीन तरीके अपनाए। प्रथम तरीके में इस विषय से सम्बन्धित पुस्तकों का अध्ययन किया, दूसरा ढूंढाड़ अंचल का भ्रमण कर गायक-गायिकाओं से सम्पर्क किया। ढूंढाड़ के अचंलों में प्रचलित लोकगीतों को गायक-गायिकाओं से सुनकर, रिकॉर्ड किए तथा सुन-सुनकर उनको लिपिबद्ध करके उनका संकल्प किया जा सकता। तीसरा तरीका सुनकर लिपिबद्ध किए गए ढूंढाड़ी लोकगीतों का हिन्दी में अनुवाद का कार्य भी किया। अनुवाद कार्य के जरिए यह लोकगीत अन्य संस्कृति व समाज के जनमानस्य तक पहुँचाएँ जा सकेंगे। इससे अन्य संस्कृति व समाज के लोग ढूंढाड़ की आदिवासी समाज से परिचित हो सकेंगे। साथ ही इस शोध कार्य के द्वारा ढूंढाड़ प्रदेश की स्त्रियों की दशा स्थिति व भिन्न-भिन्न स्त्री स्वरूप की छवियों का अध्ययन किया जा सकेगा।

इस कार्य में मुझे बहुत असुविधाओं का सामना करना पड़ा, जिसमें से सर्वप्रथम समस्या लोकगीतों को इकट्ठा करने में काफी समस्या आयी क्योंकि लोकगीतों में स्त्रियों की छवि का अध्ययन करने के लिए लोकगीतों का होना अतिआवश्यक है। क्योंकि अभीतक ढूंढाड़ प्रदेश के लोकगीत लिपिबद्ध व संकलित रूप में नहीं है इसके लिए मुझे ढूंढाड़ प्रदेश के प्रचलित लोक गायक-गायिकाओं से प्रत्यक्ष सुनकर गाने लिपिबद्ध करने पड़े। इसके अलावा ढूंढाड़ी लोकगीतों पर गाने वाले प्रचलित लोक गायक-गायिकाओं पर बनाई गई कैसेट्स से भी लोक गीत सुनकर लिपिबद्ध करना पड़ा। इसके साथ ही आज के भौतिकवादी इस युग में मानव मात्र के पास समय की कमी है। अपने दैनिक कार्यों में वह मशीन की भाँति अथवा यंत्रवत् हो गया है। उनका खान-पान, रहन-सहन, कामकाज सब यंत्रवत् है। आधुनिक समय में वह अपने से दूर, अपनी संस्कृति से दूर है। अतः लोकसंगीत के वे पुराने मदमस्त आयोजन होता ही नहीं और यदि होते भी हैं तो मात्र औपचारिक। क्योंकि परम्परागत लोकगीत वृद्धा, बुर्जुग महिलाओं को ही आते हैं किंतु वे परस्पर एक दूसरे की मदद के बिना गा नहीं सकतीं और आजकल 6-7 बुर्जुग महिलाओं को एकत्रित करना असंभव तो नहीं, मुश्किल अवश्य है। क्योंकि हर एक की अपनी मजबूरी है, किसी का गला नहीं चलता, किसी को

साँस की शिकायत है। अत: एक-एक, दो-दो गीतों के लिए मुझे कई बार चक्कर लगाने पड़े क्योंकि गाँवों के चौपालों पर भी अब टेप रिकॉर्डर और रेडियो की धूम है। आज का ग्रामीण भी शहरी चकाचौंध से चुँधिया गया है। वह भी अपने बालक के डिस्कों डांस को ज्यादा ऊँचा मानकर सम्मान दे रहा है और बड़ा खुश हो रहा है। रिक्शे पर लटका ट्रांज़िस्टर उसे खेत की हरियाली के बीच गाये जाने वाले गीत से अधिक प्रभावित कर रहा है।

अपनी संस्कृति से दूर सभ्यता की अंधी दौड़ का वह अनाम पथिक विद्युत मानव के समान अपनी चलती-फिरती लाश को ढो रहा है। काम है आनन्द नहीं, भोजन है पर रस नहीं, सब कुछ है पर संतोष नहीं। जीवनयापन की समस्त सुविधायें, समस्त तामझाम हैं, किन्तु शांति नहीं।

शोध कार्य के समय आने देहिक, दैविक, एवं भौतिक समस्त कठिनाईयों के बावजूद मेरा अन्तर्मन प्रसन्न है कि जीवन में आनन्द रस की वृष्टि करने वाले, मानव जीवन के लिए अनमोल इन रत्नों को स्त्री से सम्बन्धित लोकगीतों का सांगीतिक आकलन कर में सुधी समाज के सम्मुख रख सकी।

प्रथम अध्याय में ढूंढाड़ी क्षेत्र की लोकसंस्कृति को समझने के लिए इस क्षेत्र का इतिहास प्रस्तुत किया गया है। इस अध्याय में ढूंढाड़ प्रदेश का नामकरण के साथ यहाँ के ऐतिहासिक, भौगोलिक, सांस्कृतिक, सामाजिक व दैनिक जीवन शैली का परिचय देने का प्रयत्न किया गया है।

द्वितीय अध्याय में ढूंढाड़ प्रदेश के लोकगीतों का विवेचन करने से पूर्व लोकगीतों का अर्थ विभिन्न विद्वानों द्वारा लोकगीतों की विभिन्न परिभाषाएँ तथा लोक संगीत के मर्मज्ञ विद्वानों द्वारा किए गये लोकगीतों के विभिन्न वर्गीकरणों को स्पष्ट किया गया है। इसके साथ ही ढूंढाड़ लोकगीतों में प्रयुक्त होने वाले वाद्य क्षेत्र, राग, लय-ताल आदि पर भी चर्चा की गई है। तृतीय अध्याय में आदिवासी स्त्रियों को लोकगीतों को जनक मानते हुए।

अलग-अलग अवसरों जैसे- विवाह, रीति-रिवाज, परम्परा, त्यौहार, उत्सव मेले आदि से संबंधित लोकगीतों व लोककथाओं पर आधारित लोकगीतों को सुनकर लिपिबद्ध करते हुए उनमें स्त्रियों की तरह-तरह की छवियाँ व दशा-स्थिति का अध्ययन करने की कोशिश है।

परिशिष्ट में ढूंढाड़ प्रदेश के प्रचलित लोक गायक-गायिकाओं से सुनकर लिपिबद्ध किए गए लोकगीतों का हिन्दी में अनुवाद प्रस्तुत किया गया है। इससे हमारे पास ढूंढाड़ के प्रदेश में आदिवासी लोकगीतों का संकलन हो जाएगा। इसके साथ ही शोध कार्य के दौरान ढूंढाड़ प्रदेश में प्रचलित लोक-गायक व गायिकाओं से लिये गये साक्षात्कार को भी प्रस्तुत किया गया है।

अंत में उपसंहार में शोध के निष्कर्ष प्रस्तुत किये गये है। इस शोध-कार्य में मेरे गुरूवर और शोध निर्देशक डॉ. रमन प्रसाद सिन्हा का विशेष सहयोग रहा। उन्होंने मुझे अपनी तमाम व्यस्तताओं के बावजूद पूर्ण सहयाग किया तथा गुरूवर ने ही मेरा मार्ग-दर्शन किया और मेरी हर समस्या का समाधान किया, जिसकी वजह से मैं इस कठिन कार्य को अंजाम दे पायी हूँ मैं उनका हृदय से आभारी हूँ।

इसके बावजूद मैं माननीय श्री प्रभुनारायण मीणा जी की आभारी हूँ जो कि राजस्थानी आदिवासी इतिहास और संस्कृति के ज्ञाता होने के साथ-साथ आदिवासी समाज के जाने-माने समाज सेवी व चिंतक है। इनके द्वारा ही ढूंढाड़ प्रदेश के इतिहास व संस्कृति से संबंधित पुस्तकों आदि की सूची उपलब्ध हो पाई साथ ही शोध के लिए बहुत से लोकगीतों, लोकगायकों व गायिकाओं से मिलवाने का श्रेय भी इन्हीं को जाता है। साथ ही ये मुझे समय-समय पर शोधकार्य के लिए उत्साहित भी करते हैं।

इसके साथ ही मैं डॉ. गोविन्द सिंह जो सहायक पुरातत्वविद, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग, जयपुर मंडल में कार्यरत है की आभारी हूँ इनके द्वारा मेरे शोध का प्रारूप तैयार करने में सहयोग मिला इसके साथ ही विषय पर आधारित कई पुस्तकें व लोक गायक-गायिकाएँ इनके जरिए ही उपलब्ध हो पाई। व्यस्त होते हुए भी इन्होंने मुझे पूर्ण सहयोग किया। अत: मैं इनकी बड़ी आभारी हूँ।

इस लघु शोध कार्य के लिए शीर्षक का चुनाव करने में श्री हरिराम मीणा जो कि राजस्थान के आदिवासी समाज के लेखक हैं का मार्गदर्शन मिला मैं उनको हृदय से आभार प्रकट करती हूँ।

इसके अलावा मैं ढूंढाड़ प्रदेश के उन गायक-गायिकाओं को धन्यवाद देना चाहती हूँ वे हैं लखनबाई मीणा जी, विष्णु मीणा, धवले मीणा, हर सहाय मीणा, पद्मावती मीणा, केशन्ती मीणा जी, रेखा जीणा आदि जिनके द्वारा गाए गए

लोकगीतों को सुनकर लिपिद्ध किया गया यदि इन लोक गायक-गायिकाओं का सहयोग नहीं होता तो मैं अपना शोध कार्य पूर्ण नहीं कर पाती क्योंकि ढूंढाड़ी लोकगीत अभी तक जनश्रुति पर ही आधारित है यह कहीं लिखित रूप में हमारे समक्ष नहीं है।

अंत में मैं मेरे माता, भाई-बहन मित्रों और परिवार के सभी सदस्यों के आशीर्वाद से ही सम्भव हो पाया है। उन्होंने तमाम कठिनाईयों और समस्याएँ झेलते हुए भी मेरी शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया। इसमें से मेरे भाई (बुआ जी का बेटा) देशबंधु मीणा का मुझे विशेष रूप से सहयोग मिला इन्हीं की बदौलत में जहाँ भी दंगल आयोजन या शोध से संबंधित कहीं भी भ्रमण की आवश्यकता पड़ने पर इन्होंने ही मुझे गंतव्य तक पहुँचाने का भार उठाते थे। उनके कारण ही अधिक से अधिक लोकगीत व शोध संबंधित सामग्री समय से जुटा सकी इसके लिए मैं उन्हें तहे दिल से शुक्रगुजार हूँ इसके साथ ही मैं अपनी बहन (मामा की बेटी) सीमा की बड़ी आभारी हूँ जिसके सहयोग से मैं गायक-गायिकाओं द्वारा गाए गए लोकगीतों को सुनकर-सुनकर लिपिबद्ध व उनका भावार्थ समझ सकी। इसके अलावा शोध से संबंधित कई कार्यों में उसका सहयोग मिला जिससे कार्य का भार, मुझे कुछ हल्का महसूस हो पाया और काम समय से पूरा कर पाई। अंत में भगवान को भी धन्यवाद करती हूँ।

अंत में अपने टाइपिस्ट श्री **प्रदीप सिंह** के प्रति हार्दिक आभार जिन्होंने मेरे शोधकार्य को शुद्धता के साथ, शीघ्रता के साथ-साथ टंकित किया।

दिनांक

सीमा मीणा
जे.एन.यू.
नई दिल्ली

प्रथम अध्याय

ढूंढाड़ प्रदेश का परिचय

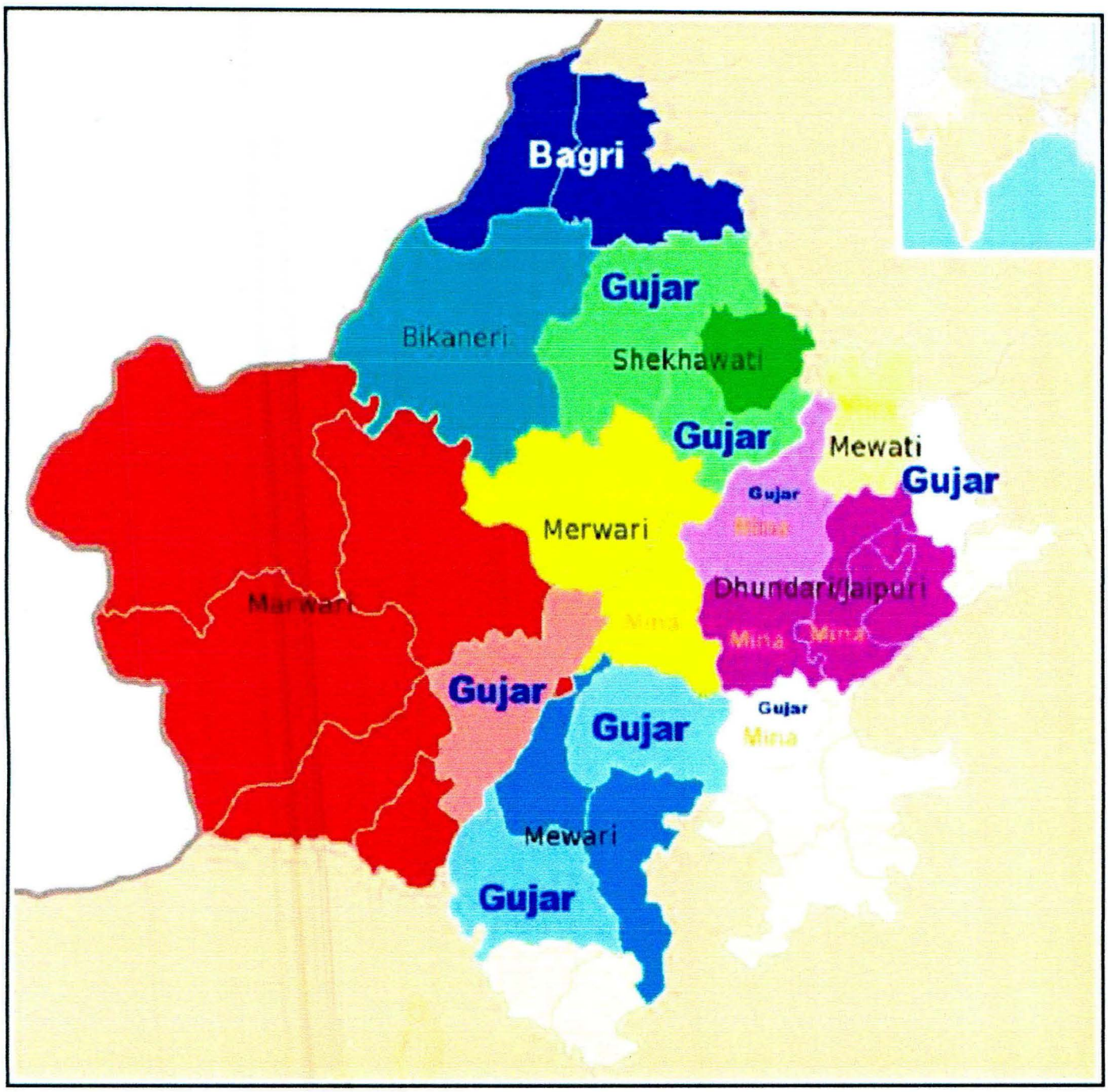

Bagri
Gujar
Bikaneri
Shekhawati
Gujar
Mewati
Gujar
Gujar
Merwari
Marwari
Dhundari/Jaipuri
Mina
Mina
Mina
Gujar
Gujar
Gujar
Mina
Mewari
Gujar

प्रथम अध्याय

ढूंढाड़ प्रदेश का परिचय

राजस्थान प्रदेश लोक संस्कृति की दृष्टि से अद्वितीय है, विभिन्न जातियों के सांस्कृतिक समन्वय से इस प्रदेश की लोक संस्कृति का रूप निखरा है। प्रत्येक जाति अपने जातीय स्वभाव; संस्कार और प्रवृत्ति के अनुरूप व्यवसाय, धार्मिक विश्वास, रहन-सहन, वेशभूषा, खानपान रीतिरिवाज परम्पराएँ, उत्सव, त्यौहार आदि में वैशिष्ट प्राप्त कर लेती है। राजस्थान के ढूंढाड़ी आदिवासी जनजाति भी इसका अपवाद नहीं है।

राजस्थान की ढूंढाड़ी आदिवासी में मीणा जनजाति ही आती है। 'ढूंढाड़' सांस्कृतिक और राजनैतिक दृष्टि से राजस्थान का एक महत्वपूर्ण प्रदेश है। इसका आधुनिक नाम जयपुर है। जंयपुर की पुरानी राजधानी आमेर राजय को ढूंढाड़ कहते हैं; इस क्षेत्र में जयपुर जिला अलवर, दौसा, करौली, टोंक व सवाई माधोपुर जिलों के कुछ भाग आते हैं। यहाँ की भाषा को इसी कारण ढूंढाड़ी भाषा से पुकारा जाता है ढूंढाड़ राज्य की सीमा-निर्धारण मीणों के एक जागा (मीणों का लेखा-जोखा रखने वाला पंडित) इस प्रकार किया है -

उत्तर टोंक टोड़ा से, सैंथल में आथूणी धरा।

इसड़ा मिनख बसै ढूंढाड़ में, परवत से उरा उरा॥

ढूंढाड़ की यह सीमा वर्तमान समय जयपुर जिले को आत्मसात् करते हुए, अधिकांश टोंक की लपेटती हुई सवाईमाधोपुर एवं अलवर की उत्तरी व पश्चिम सीमाओं को बेंधती हुई अजमेर तथा नागौर जिलों की सीमाओं पर परवतसर के समीप समाप्त होती है। अधुनातन ज्ञात ऐतिहासिक वृत्तान्तों के आधार पर ढूंढाड़ राज्य को प्राचीन मत्स्य प्रदेश के अन्तर्गत मीणों का सर्वाधिक विख्यात एवं महत्वपूर्ण स्थान माना जाता था।

ढूंढाड़ प्रदेश का ऐतिहासिक परिचय

ढूंढाढ़ का नामकरण

इस प्रदेश का नामकरण विशेषज्ञों की चर्चा का विषय रहा है ढूंढाड़ को ढूंढाड़ भी कहा जाता है। लोक प्रचलित धारणाओं में किवंदत्ति के अनुसार अजमेर के चौहान राजा बीसलदेव प्रजा पर बहुत अत्याचार किया करते थे। इसी के चलते बीसलदेव राक्षस योनि में चला गया, वह राक्षस होकर प्रजा का संहार करके उसे खा जाया करते थे। वहाँ के मनुष्यों ने उसी के पोते को उसके सम्मुख ला खड़ा किया; अपने पोते के प्रेम भरे कातर वचनों से बीसलदेव चैतन्य हो गये और जब चैतन्य हुए तो उन्होंने ढूँढ शिखर पर जाकर तपस्या की और यही उनका समाधि स्थल बन गया।[1] इसलिए इसका नाम 'ढूंढाड़' पड़ा।

नाथावतों का इतिहास लेखक श्री हनुमान शर्मा ने लिखा है कि आमेर के ढूंढाकृति पहाड़ के नाम पर रस स्थल को नाम ढूंढाड़ पड़ा। कई लोग इस क्षेत्र की मुख्य नदी ढूंढ के नाम से ढूंढाड़ की व्युत्पत्ति खोजते हैं।[2]

भूतपूर्व जोबनेर ठिकाने के स्वामी स्वर्गीय रावल नरेन्द्र सिंह के मतानुसार चौहान नरेश बीसलदेव ने ढूंढ के पहाड़ पर इस प्रदेश के स्वच्छन्द मीणों का दमन के लिए ढूंढ पहाड़ पर एक चौकी स्थापित की थी। सभी मीणा मेवासों को नष्ट करके ढूंढ-ढूंढ कर उनको समाप्त किया। इसी कारण इस प्रदेश का नाम पुराने मत्स्य प्रदेश से बदल कर ढूंढाड़ पड़ गया।[3]

मेजर जनरल कनिंघम ने अपनी पुस्तक आकर्योलोजिकल सर्वे ऑफ इंडिया में लिखा है कि जयपुर के समीप गलता तीर्थ में धुन्ध की गुफा देखी है और यह बताया कि ढूंढ नदी के दोनों किनारों पर उड़ने वाले बालू रेत के बथुलों से शायद इस क्षेत्र का नाम ढूंढाड़ पड़ा।[4]

---

[1] कर्नल टॉड: "अनैल्स एण्ड एण्टीक्विटीज ऑफ राजस्थान", पृष्ठ 280

[2] लोक साहित्य- जनवरी 1968, पृष्ठ 85

[3] नरेन्द्र सिंह - 'ब्रीफ हिस्ट्री ऑफ जयपुर', पृष्ठ 21-22

[4] श्री महाभारत खंडन, वन-वन पर्व अध्याय, पृष्ठ 201-204, गीता प्रेस

स्वर्गीय रावत सारस्वत की दृष्टि से महाभारत और विष्णु पुराण में उल्लेखित प्रसिद्ध पौराणिक योद्धा धुन्ध की स्थली होने के कारण ही इसका नाम "धुन्धवाट" अथवा ढूंढाड़ पड़ा।[1] यद्यपि मीणा समाज के लोग अपने आपको तथाकथित क्षत्रियों में मानते आये हैं, परन्तु यदि उन्हें पराक्रमी योद्धा धुन्धु के वशंज मानने की कल्पना भी की जाये तो गलत नहीं है। पौराणिक कथाओं के अनुसार इस भूमि आदिवासी लोगों को असुरदानव आदि की संज्ञा देकर आर्यों ने उनसे युद्ध किया था। प्रसिद्ध इतिहासकार पृथ्वीसिंह मेहता ने अपनी पुस्तक "हमारे राजस्थान" में लिखा है कि इस भूमि पर कमलनयन विष्णु को मधु कैटव नामक दो महाबली राक्षसों से पाँच हजार वर्ष तक युद्ध करना पड़ा।" इसी प्रकार ढूंढाड़ के आदिवासी मीणों का क्षत्रियों के साथ संघर्ष सहस्त्रों वर्षों से चला आ रहा है। यही कार्य गुर्जर, प्रतिहारों का रहा। राजपूतों के आ जाने पर तो मीणों और राजपूतों के मध्य अपने सत्व के लिए संघर्ष होता ही रहा। इन विनाशकारी आक्रमणों में यह प्रदेश उजड़ता ही चला गया। कहीं नगर फूले-फले नहीं और यह प्रदेश वीरान ही रहा। उदाहरण के लिए दौसा, मॉच व आमेर को ले सकते हैं पुरानी बस्तियों में आज भी मकान खण्डहरों के रूप में खड़े दिखाई पड़ते हैं। इस उजाड़ भूमि के खण्डहरों के कारण भी इसका नाम ढूंढाड़ पड़ा हो, यह भी संभव है।

ढूंढाड़ प्रदेश का भौगोलिक परिचय

भौगोलिक दृष्टि से राजस्थान के दो प्रमुख भाग हैं - एक पश्चिमोत्तर और दूसरा दक्षिण पूर्वी। प्रथम भाग रेगिस्तान और द्वितीय में मैदानी व पठारी भाग हैं। इन दोनों भागों के बीचो-बीच अर्द्धवर्ती पर्वत श्रृंखला ईशानकोण से प्रारम्भ होकर नैऋत्य कोण तक फैली हुई है।

राजस्थान का पश्चिमोत्तर भाग समतल है, परन्तु अधिकांश भाग मरुस्थल है जिसमें मारवाड़, बीकानेर और जैसलमेर के रेगिस्तान है जो उपजाऊ नहीं है। दक्षिणपूर्वी भाग में जगह-जगह मैदानी भाग हैं। इसी में ऊपर की ओर ढूंढाड़ प्रदेश है यह भाग 15°,579 वर्ग किलोमीटर में फैला हुआ है। ढूंढाड़ प्रदेश उत्तरी अक्षांश $26^{0}00'$ से $27^{0}00'$ तक तथा पूर्वी देशान्तर के $74^{0}55'$ से $78^{0}17'$ के मध्य फैला हुआ है। इस प्रदेश का औसतन तापमान ग्रीष्मकाल में 30 डिग्री सेल्सियस से 45

[1] रावत सारस्वत : मीणा इतिहास, पृष्ठ 36

डिग्री सेल्सियस तथा शीतकाल में 10 डिग्री सेल्सियस से 25 डिग्री सेल्सियस के बीच रहता है। इस भाग में कई नदियाँ बहती है जो इस भाग को उपजाऊ बनाती हैं। इसमें चंबल, काली सिंध, पार्वती, माही बनास लूणी आदि प्रमुख हैं। बनास कुभलगढ़ से निकलकर उदयपुर, जयपुर (ढूंढाड़), बूंदी टोंक, करौली जिलों में बहती हुई ग्वालियर के पास चंबल में जा मिलती हैं।[1]

बाणगंगा नदी बैराठ की पहाड़ियों से निकलकर रामगढ़, आमेर, दौसा, हिण्डौन आदि क्षेत्रों में बहकर भरतपुर की ओर चली गई। इसके अतिरिक्त ढूंढाड़ में कई बरसाती नदियाँ है जो वर्ष भर कुछ समय के लिए सिंचाई का काम करती हैं अथवा विभिन्न तालाबों और झीलों को भरने का काम करती हैं। यथा ढूँढ़, ताला, बाणगंगा, बाण्डी। ढूंढाड़ पूर्व में दौसा से पश्चिम में दूदू तक, उत्तर में चौमू, श्रीसवाईमाधोपुर से लेकर दक्षिण में डिग्गी मालपुरा तक फैला है।[2]

ढूंढाड़ प्रदेश का सांस्कृतिक जीवन परिचय

प्राचीन काल में विख्यात ढूंढाड़ प्रदेश अपनी लम्बी विकास यात्रा में कई सोपानों से गुजरा। कभी उसकी यात्रा रूकी, कभी सुस्ताई, कभी द्रुत गति से बढ़ी। किन्तु अपनी आंचलिक विशेषताओं के कारण सभ्यता की दौड़ में अग्रणी गुलाबी नगरी जयपुर अपनी सांस्कृतिक धरोहर को अपने में समेटे हुए भारत की उज्ज्वल दैदीप्यमान मणि है।[3]

ढूंढाड़ की जलवायु प्रायः सुहावनी है। इसमें लोगों के रहन-सहन एवं व्यवहार सरल और निश्चल हैं। जीवन में आवश्यकताएँ कम होने से होड़ और छल, कपट इनके नैतिक जीवन में नहीं है, लोग मेहनती धर्मभीरू हैं, आस्थावान हैं। जीवन-यापन के लिए ढीले-ढाले एवं कम वस्त्र, खुले घर जिन पर घास-फूस का छप्पर, भोजन में छाछ-राबड़ी, प्याज रोटी, चटनी, सब्जी आदि अर्थात् इनके जीवन में सहजता का साम्राज्य है। खुली हवा व खुले आकाश में रहने से यहाँ के निवासियों में बौद्धिक विकास, विचारशीलता और आत्मविश्वास को सहज में बढ़ावा मिलता रहा है। धन-धान्य की कमी ने यहाँ के लोगों को परिश्रमी और

---

[1] डा. गोपीनाथ शर्मा : राजस्थान का सांस्कृतिक इतिहास, पृष्ठ 5

[2] मंजुलता भट्ट - जयपुर राज्य के भट्ट परिवारों का संगीत के क्षेत्र में योगदान, शोध प्रबंध, पृष्ठ 16

[3] वही

अव्यवसायी बनाने में सहयोग दिया तथा ऐश्वर्य की कमी ने उन्हें चरित्रवान् बनाया।

राजस्थान की भौगोलिक स्थिति और प्राकृतिक बनावाट ने यहाँ के जनजीवन व संस्कृति को अत्यधिक प्रभावित किया। अरावली पर्वत श्रृंखलाओं ने यहाँ की जनजाति को बाह्य प्रभाव से अछूता रखा। इसी कारण प्राचीन भारतीय संस्कृति की, जनजीवन की मान्यताओं तथा विचारों की झलक हमें आज भी राजस्थान में ही देखने को मिलती हैं। विदेशी आक्रमणों के समय भी पर्वतीय दीवारों के कारण राजस्थान इनके कुप्रभावों से बचा रहा। यहाँ दीर्घकाल तक सुव्यवस्था और शान्ति रह सकी तथा संस्कृति को प्रश्रय मिलता रहा।

सातवीं शताब्दी से राजस्थान में क्षत्रिय विजेताओं ने जनजाति के संपर्क से जीवन के कतिपय मूल्यों को आत्मसात् किया, साथ ही वे भारतीय संस्कृति के रक्षक व पोषक बन गये। अपने अथक परिश्रम से उन्होंने भारतीय जीवन मूल्यों को बनाए रखने व परिवर्धित करने में पूरा योग किया।

पर्वतीय श्रृंखलाओं में अपने धन और जीवन की रक्षा हेतु गुजरात तथा मध्यप्रदेश से अनेक समृद्ध परिवार यहाँ आये और उन्होंने अपनी सम्पत्ति का सदुपयोग मन्दिरों, धर्मशालाओं अथवा पुण्यग्रहों के निर्माण में किया। पर्वतीय वृक्ष, लता, पत्र, पुष्प आदि प्राकृतिक सौन्दर्य यहाँ के निवासियों के जीवन का अंग बन गया। त्योहारों पर्वों, उत्सवों व मेलों पर ऋतु के अनुकूल वेशभूषा का उपयोग राजस्थान में ही दिखाई देता है। सावन में लहरिया शीतलाष्टमी के मेले पर चटक लाल व गणगौर आदि पर्व पर गोटेदार पीली चूँदड़ी व पुरुषों के सिर पर रंग-बिरंगे साफे देखते ही बनते हैं।

इस भू-भाग के विशुद्ध तथा शांत वातावरण ने धार्मिक तथा बौद्धिक विकास में बड़ा सहयोग दिया। आमेर का दादू, अमानीशाह की दरगाह, जोबनेर का शक्तिपीठ, आमेर का शिलादेवी का मंदिर, मोती डूँगरी व गणेश गढ़ के गणेश मन्दिर, गोविन्द देवजी व गोपीनाथ जी का मंदिर इसके प्रत्यक्ष उदाहरण हैं। वैसे राजस्थान मे नदियों का अभाव है किन्तु जो भी नदियाँ यहाँ रही है उन्होंने देश को समृद्ध बनाने में मदद की। बनारस लूणी, ढँढ आदि ने इसे सँवारा। गुजरात और मालवा जैसे समृद्ध प्रदेश का निकटतम पड़ोसी तथा आयात-निर्यात के मार्ग राजस्थान से गुजरने के कारण यह कमी एकांत प्रदेश नहीं रहा। राजनीतिक दृष्टि से अशोक एवं अकबर जैसे शासकों ने भी इसे अपनी नैतिक और राजनैतिक

शक्ति का केन्द्र बनाया। बैराठ व ढूंढाड़ इन सम्राटों के नियन्त्रण के प्रमुख बिन्दु थे।

ढूंढाड़ की भौगोलिक स्थिति ने यहाँ के जन-समुदाय को निरन्तर रूप से यहाँ बसने का अवसर दिया और उन्हें अपनी संस्कृति के लिए निष्ठावान बनाया। उन्हें अपनी भाषा, वेशभूषा तथा विचारों के प्रति सचेतन किया। देशाभिमान के लिए चिन्तित व जागरूक बनाये रखा। यहाँ की भौगोलिक स्थिति को निरन्तरता व अक्षुण्णता के कारण निवासियों में अपने मूलभूत अधिकारों और संस्कृति के प्रतीकों की ओर ममत्व बना रहा। घाघरा-ओढ़नी व साफा, रखड़ी, इतने परिवर्तन होने के बाद आज भी प्रचलित हैं। अनेक बोलियाँ होते हुए भी यहाँ की भाषा मूलत: राजस्थानी (ढूंढाड़) ही है। अधिकांशत: इसी भाषा में लोकगीत गाये जाते हैं। राजस्थान के किसी भी भाग में रहने वाला व्यक्ति किसी भी जाति का क्यों न हो उसकी भाषा व पहचान में एकरूपता मिलेगी। ढूंढाड़ के अन्य नाम झाडशाही तथा काईकुर्ड है। इसके पाँच स्थानीय रूप मिलते हैं - तोरावरी, काठेड़ा, चौरासी, नागरचाल तथा राजावादी। इसका एक रूप हाड़ौती भी है जो बूँदी और कोटा में बोली जाती है। इसका आदर्श रूप जयपुर में बोला जाता है। ग्रियर्सन के अनुसार उस समय जयपुरी बोलने वालों की संख्या (हाड़ौसी बोलने वालों सहित) 2,907,200 भी है। जयपुरी में साहित्य भी लिखा गया है। विशेष रूप से दादू पंथी साहित्य यहाँ की भौगोलिक स्थिति ने सांस्कृतिक ऐक्य और विशिष्टता को अनुप्रणित किया है।

ढूंढाड़ की सांस्कृतिक पहचान बनाए रखने में यहाँ की वेशभूषा व आभूषण काफी महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। इन्हीं पहनावे व आभूषणों की वजह से राजस्थान को रंगीला राजस्थान कहा जाता है।

वेशभूषा व आभूषण

वनवासी होने के कारण ढूंढाड़ी मीणा जनजाति को वेशभूषा के लिए अधिक ध्यान देने की आवश्यकता नहीं पड़ती। सिर पर पगड़ी, रुमाल या नंगे बदन ही तथा नीचे घुटनों तक की एक धोती पर्याप्त है। स्त्रियाँ घाघरा, कुरती और ओढ़नी धारण करती है। समय पड़ने पर घाघरे का 'काछटा' (घाघरे के घेर को घुमा कर झोला जैसा बना कर टाँग लेना) मार लिया जाता हो। ढूंढाड़ी मीणा स्त्रियाँ लाख के चूड़े पहनती है जिसे सुहाग की निशानी माना जाता है। यहाँ की

मीणा स्त्रियाँ नथ नहीं पहनती। आज भी स्त्री-पुरुष गोदने का शौक रखते हैं। भारतीय संस्कृति के ग्रामीण परिवेश में गोदना नारी के शारीरिक सज्जा के लिए एक महत्वपूर्ण साधन है और लोकगीतों में गोदनों का भी वर्णन मिलता है।

आभूषण (पुरुषों के) : पुरुषों के आभूषण, कुण्डल, कड़ा, भुजबंद, करधनी, अंगूठी और कानों में सोने के झाले भी धारण करते थे। हाथ व पैरों में चांदी के कड़े होते थे। कतिपय मीणा पुरुष कमर में चांदी की करधनी पहनते थे। विवाह व मृत्यु भोज के अवसरों पर मीणा पुरुष हाथ में सोने का एक-एक कड़ा तथा कुर्ते में सोने चांदी के बटन भी लगाते थे। दांतों में सोने की चोंप भी लगवाने का उन्हें चाव होता था परन्तु आज के नवयुवक यह सब आभूषण धारण करना पसन्द नहीं करते और न ही धारण करते हैं।

आभूषण (स्त्रियों के) : स्त्रियों को आभूषणों का चाव सदैव से रहा है, सोने के जेवर यहाँ की स्त्रियाँ कम ही पहनती हैं परन्तु माथे का बौरला सोने का ही होता है। इसलिए विवाह में बहु को सोने का ही बोरला चढ़ाया जाता है। विवाह के दूसरे दिन मुख्य तौर पर आदिवासी स्त्रियाँ दुल्हन के गहने देखने के लिए आती हैं और आभूषणों को देखकर वर पक्ष की स्तुति व बुराई की जाती है। बोरले के अलावा यहाँ की स्त्रियाँ नथ, हंसली, गुलीबंद हार, सीतारानी हार, पायजेब, बिछिया आदि भी पहनती हैं। यहाँ की स्त्रियाँ शादियों, उत्सवों, मेलों, त्यौहारों आदि के समय इन आभूषणों को विशेष रूप से धारण करती हैं। इस प्रकार मीणा आदिम जाति में आभूषणों का विशेष प्रचलन है।

ढूंढाड़ प्रदेश का सामाजिक जीवन परिचय

जब हम मीणा जनजाति के वर्तमान जीवन पर भी दृष्टिपात करते हें तो अन्य जातियों के सामाजिक जीवन से पिछड़ा ही दृष्टिगत होता है। उनके ग्रामीण आवास, उनका रहन-सहन, उनका खान-पान, तथा वेशभूषा आज भी मध्यकालीन ही प्रतीत होती है। अंधविश्वास से वे आज भी जकड़े हुए हैं। अपने अंधविश्वास व पुरानी वेशभूषा को त्यागने के लिए तैयार नहीं है। शिक्षा का आज भी संतोषजनक विकास एवं विस्तार नहीं हुआ है। नगरों से दूर आबाद होने के कारण वर्तमान में हो रहे तेजी से परिवर्तनों के प्रभाव में नही आए है। पुरुष व स्त्रियों के लिबास आज भी पुरातन ही है। गाँवों का पारिवारिक जीवन भी पुराने ढाँचे पर ही

चल रहा है। मनोरंजन के साधन पुराने बने हुए हैं। आज भी कई प्रथाएँ व रीति-रिवाज जैसे पर्दा प्रथा, मृत्युभोज, दहेज प्रथा आदि प्रचलित हैं, जो समाज के पिछड़ेपन को ही दर्शाती हैं। आज भी मीणें कई वर्गों के विभवत हैं। जैसे चौकीदार मीणा और जमींदार मीणा, भील मीणा आदि इनके गौत्र आपस में अलग हैं और विभिन्न रीति-रिवाज भी। उनके व्यवाय व रहन-सहन में भी अंतर है।

परन्तु मीणा जनजाति का सामाजिक जीवन आज निराशापूर्ण नहीं रहा है। शिक्षा के विकास का प्रसार हो रहा है। ग्राम व अपनी ढाणियों को छोड़कर नगरों की ओर आ रहे है। आधुनिक वेशभूषा को अपना रहे हैं तो शिक्षित महिलाएँ भी पुराने लिबास को उतार फेंक कर आधुनिकता मे प्रवेश कर रही हैं। मनोरंजन के साधन आधुनिक हो रहे हैं। खेती में भी आधुनिक तरीके अपनाए जा रहे हैं तो रहन-सहन के तरीकों में तीव्रता से बदलाव आ रहा है।

मीणा समाज में स्त्री की स्थिति देखी जाए तो तुलनात्मकरूप से कहा जा सकता है कि गाँव की महिलओं की तुलना में शहरों में रहने वाली बालिकाओं एवं महिलाओं की स्थिति बहुत अच्छी हो। अत: वह पढ़ लिखकर पुरुषों के समान स्तर तक पहुँचने लगी है तथा उनका सामाजिक स्तर उठ रहा है, वह शिक्षा पाकर अधिक स्वावलंबी हो गयी है। परिवार के खर्च वहन करने में पुरुषों की बराबर की सहभागी है। जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में स्त्रियाँ खेती करके या मजदूरी करके जीवन यापन कर रही हैं। जिनके घर की स्थिति ठीक नहीं होती वह भवन निर्माण, सड़क निर्माण या दूसरों के खेतों में मजदूरी करने जाती हैं। जंगल से लकड़ियाँ काटकर शहरों में बेचती है। समाज व्यक्ति से बनता है और व्यक्ति से परिवार।

आदिवासियों के जीवन में संरक्षण व समाज का मूल आधार परिवार था[1] और आज के संक्रमण काल में भी परिवार ही है। संयुक्त परिवार का मुखिया पुरुष सदस्य ही होता है। परिवार में दादा-दादी, माता-पिता, भाई-बहन, चाचा-चाची आदि होते हैं। स्त्रियाँ ससुर व जेठ से परदा करती है। अतिथियों व पड़ौसी पुरुषों से उनका सम्पर्क सीमित होता है। इस प्रकार पारिवारिक व्यवस्था परिवार की महिलाओं के लिए स्थान एवं अधिकार निश्चित कर देती है। आज भी गाँवों में संयुक्त परिवार की प्रथा विद्यमान है।

---

[1] लक्ष्मीनारायण मीणा : मीणा जनजाति एक परिचय, पृष्ठ 89

आवास व्यवस्था

मीणा जाति एक आदिवासी जनजाति है जो वह प्राय: पहाड़ियों पर अथवा घने जंगलों या खेतों, जहाँ दूर-दूर तक खुलापन हो, ऐसी जगह पर रहना पसंद करती है। हर आवास स्थान के पास बड़ा सा 'बाड़ा' होता है जिसमें पशुओं को रखा जाता है। कृषि कार्य के लिए बैल, सवारी के लिए ऊँट और दूध के लिए भैंस, गाय और बकरी रखते हैं। परन्तु धीरे-धीरे शिक्षा के प्रभाव के कारण आधुनिकीकरण ने इन सब में महान परिवर्तन ला दिए है। आवास के लिए गाँवों में भी विशाल भवन हैं तो शहरों में इनके लिए बंगले हैं। ग्रामीण अंचल में अधिकतर कच्चे झोपड़ें होते हैं जिनकी छते घास फूस (झांन) से बनी होती है। आंगन में गोबर व मिट्टी से लिपाई की जाती है। शुभ अवसर पर स्त्रियाँ इन पर ''मांडने'' बनाती हैं। घरों में ये अनाज रखने के लिए गोबर और मिट्टी से बड़े-बड़े 'कोठियाँ' बना लेते हैं। शिक्षा के विकास की वजह से ही इनकी आवास स्थिति में काफी सुधार आया है क्योंकि गाँव में भी आजकल शिक्षा का महत्व समझने लगे हैं। अत: वे अपने बच्चों को पढ़ा-लिखाकर खेती के काम न करा कर शिक्षा की ओर प्रेरित करते हैं जिसके कारण वे अच्छी-अच्छी नौकरियों करने लगे हैं और अपने घर की स्थिति को सुधारने का पूर्ण प्रयास करते हैं। यही कारण है कि आजकल अधिकांश मीणा परिवारों के घर पक्के बने होते हैं, जो उनकी सम्पन्नता को दर्शाते हैं।

सामुदायिक जीवन

यहाँ आदिम जनजातियाँ सामुदायिक या सामूहिक जीवन जीती हैं। इनकी जीवन पद्धति, व्यवस्था, कृषि सामुदायिक भावना पर ही आधारित है। यही कारण है कि आज भी यहाँ इस जनजाति में संयुक्त परिवार की महत्ता बनी हुई है। यहाँ सभी संस्कार जैसे जन्म, सगाई, विवाह व मृत्यु तक के संस्कार सामूहिक रूप से सम्पन्न किए जाते हैं। इस प्रकार के उल्लास एवं उमंग के पर्व लोकगीतों के उद्‌भव व विकास का माहौल तैयार करते हैं। मनुष्य का हृदय प्रकृति, ऋतु कल्याण-कामना एवं सामूहिक भावना से जुड़कर उत्सव त्यौहारों का सृजन करता है। ढूंढाड़ी प्रदेश की मीणा जनजाति उत्सवप्रिय होने के कारण नाचना, गाना, बजाने की शौकिन है इसके लिए वह समय-समय पर मेलों, दंगलों, भजनों, रामायण पाठ आदि का आयोजन करती हैं। जिसके कारण लोकगीतों का समाज में

महत्व बढ़ा है। इन अवसरों पर मीणा जनजाति के स्त्री-पुरुष विभिन्न अलंकरणों एवं वेशभूषा से सुसज्जित होकर उन्मुक्त भाव से सम्मिलित होते हैं। इन मेलों, दंगलों में गीत, नृत्य आदि के रूप में इनके वास्तविक जीवन की रूप की अभिव्यक्ति होती है। इस प्रकार ये मेले दंगल आदि लोकगीतों के सृजन के मुख्य हेतु है।

आदिम जनजाति ज्ञान-विज्ञान एवं जीवन के आधुनिकतम साधनों से परे नैसर्गिक जीवन जीती है। इस नैसर्गिक जीवन में प्रकृति से उनका सीधा साक्षात्कार कभी मनोहारी रूप से होता है, तो कभी विनाशकारी रूप मे। ढूंढाड़ी प्रदेश में रहने वाली आदिम जाति ऐसी ही श्रमजीवी कृषक जाति के जिसके जीवन में वर्षा न होने पर, फसल या पशुओं में रोग लगने पर या स्वयं के रोगग्रस्त होने पर भाग्यवाद, अंधविश्वास या जादू-टोने, जन्तर-मन्तर जन्म लेते है। ऐसे में लोक देवता, ज्योति जलाने के अवसर लोकगीतों की व्यवस्था की जाती है। इस प्रकार की जागरण व्यवस्था भी लोकगीतों के निर्माण या चलन हेतु अहम् भूमिका निभाते हैं।

उत्सव और त्यौहार

समाज के प्रांगण में प्रफुलित एवं विकसित सम्पूर्ण भावनाएँ, मान्यताएँ, रीति-रिवाज एवं विश्वास आदि लोक संस्कृति का हिस्सा होते हैं और ये ही लोकगीतों के प्रेरक तत्व बनते हैं। मनुष्य का हृदय, प्रकृति ऋतु कल्याण, कामना एवं सामूहिक भावना से जुड़कर उत्सव एवं त्यौहारों का सृजन करता है। ये उत्स एवं त्यौहार उसे उल्लास एवं उमंग में भर देते हैं। उल्लास एवं उमंग के इन क्षणों में वह मानव समुदाय लोकगीतों का सृजक बन जाता है।

ढूंढाड़ के आदिवासी मीणा लोकगीतों को प्रेरित करने वाले प्रमुख उत्सव, त्यौहार आदि इस प्रकार हैं -

1. उत्सव - होलिकोत्सव, वसन्तोत्सव आदि।
2. त्यौहार - दीपावली, गोवर्धन पूजा, देवउठणी, ग्यारस, रक्षा बंधन, कार्तिक पूर्णिमा, शीतलाष्टमी आदि।
3. पर्व - अक्षण तृतीया, गणगौर, रामनवमी, दशहरण, अणंत चतुर्थी, मकर सक्रांति, शिवरात्रि, जन्माष्टमी आदि।

मेले

'मेले' अथवा 'मेला' शब्द में मेल निहित है, जिसका भाव है 'मिलन'। समुदाय का किसी स्थान विशेष पर उल्लास एवं उमंग से युक्त कारण विशेष से एकत्रित होने के रूप को ही 'मेला' कहते हैं। ऐसे उत्साहवर्द्धक अवसर पर सामूहिक रूप से कण्ठ मुखरित हो उठते हैं। पैर थिरकने लगते हैं इस प्रकार सहज ही नृत्य और गीतों का सृजन आरम्भ होता है। ये मेले अकारण नहीं होते, इनके पीछे सुख या उल्लास के क्षण को एक साथ जीने की भावना निहित रहती है। इस भावना को प्रेरित करने वाले मुख्य तत्व तीन हैं - (1) प्रकृति प्रेम (2) धार्मिक भावना, (3) आनन्द भावना।

अधिकांश मेले मंदिरों, तीर्थ स्थानों, सरोवरों, तालाबों, झरनों के पास या पहाड़ी भागों में अथवा नदियों के संगम पर लगते हैं। जैसे - अलवर जिले में भरथरी (भतृहरि) का मेला, नारायणी देवी का मेला, जयपुर में गलता का मेला, सवाई माधोपुर जिले में गणेश जी का मेला, चौथ माता का मेला आदि। ये मेले प्रकृति प्रेम एवं धार्मिक भावना से युक्त हैं।

कृषक जाति होने के नाते मीणा जाति फसल पर निर्भर करती है। जिस वर्ष फसल अच्छी होती है, उस वर्ष इनके मेले भी धूमधाम से लगते है। अधिकांश मेले श्रावण, भादो या ग्रीष्म काल में लगते हैं क्योंकि यह समय किसान वर्ग के लिए कृषि कार्य से विश्रास्ति का समय होता है। इन अवसरों पर मीणा जाति के स्त्री-पुरुष विभिन्न अलंकरणों एवं वेशभूषा से सुसज्जित होकर उन्मुक्त भाव से सम्मिलित होते हैं। इन मेलोंमें गीत, नृत्य आदि के रूप में इनके वास्तविक जीवन रूप की अभिव्यक्ति होती है। इस प्रकार ये मेले लोक गीतों के सृजन के मुख्य हेतु हैं।

धार्मिक विश्वास एवं पूजा उपासना

आदिम जनजाति ज्ञान-विज्ञान एवं जीवन के आधुनिकतम साधनों से परे नैसर्गिक जीवन जीती है। इस नैसर्गिक जीवन में प्रकृति से उसका सीधा साक्षात्कार रहता है। प्रकृति का यह साक्षात्कार कभी मनोहारी रूप में होता, तो कभी विनाशकारी रूप में। इसलिए प्रकृति उनके लिए सम्मोहक, विनाशक एवं रहस्यात्मक शक्ति का पात्र है। मीणा जाति भी ऐसी ही श्रमजीवी कृषक जाति है

जिसके जीवन में वर्षा न होनेपर फसल यापशुओं में रोग लगने पर या स्वयं के रोग ग्रस्त होने पर भाग्यवाद, अंधविश्वास या जादू-टोने, जन्तर-मन्तर जन्म लेते हैं। ऐसे ही किसी अवसर पर सामूहिक रूप से एकत्रित होका मीणा स्त्रियाँ गीत गाकर या पुरुष 'बरजाण' गाकर अपने देव-देवताओं को मनाते हैं अथवा ऐसी ही किन्हीं घटनाओं, विश्वासों या अंधविश्वासों से अनेक लोककथाएँ और उन पर लोकगीत जन्म लेते हैं।

मीणा जाति में लोक देवता की ज्योति जलाने या जगाने या जागरण की विशेष प्रथा है। ज्योति जलाने का सम्बन्ध प्रायः भेरु जी भोमिया से या रात्रि जागरण का सम्बंध देवी की मनोनति से है। इसका सम्बंध नवजीवन की सुखमय कामना से है।

मनोरंजन एवं मनोविनोद के साधन

मानव जीवन में मनोरंजन का विशेष महत्व है जिनके माध्यम से वह उल्लास, प्रफुल्लता एवं जीवन की नवगति प्राप्त करता है। शिष्ट वर्ग में मनोरंजन के अनेक साधन है, जबकि ज्यादातर के पास मनोरंजन के साधनों का अभाव रहता है, लेकिन लोकरुचि मनोरंजन के लिए अपने साधन खोज लेती है। लोक-जीवन की आनन्द एवं मनोरंजन की यह खोज लोक-कला एवं लोकगीतों को विभिन्न आयाम प्रदान करती है।

मनोरंजन के लिए यहाँ समय-समय भजन, दंगल आदि आयोजित होते हैं। इन दंगलों में कन्हैया, रसिया पद, सुड्डा गायनों के द्वारा लोकगीत मंच पर गाए जाते हैं जहाँ हजारों की संख्या में लोग पहुँचते हैं। यहाँ मनोरंजन के लिए मेले आदि का आयोजन किया जाता है। इन मेले में गीत, नृत्य व बैलों, ऊँटों को सजाकर नचाया जाता है।

यहाँ आपसी हास-परिहास एवं मनोविनोद के क्षणों में आपसी वार्तालाप में कहावतें या मुहावरे जन्म लेते रहते है। इसी प्रकार देवर-भाभी, नंनद-भाभी, जीजा-साली आदि के मधुर मनोविनोद के क्षण दोहा-चौपाई पर लोकगीतों को जन्म देते रहते हैं।

इस प्रकार मनोरंजन के ये क्षण लोक-साहित्य को विभिन्न आयाम देते रहते हैं।

ढूंढाड़ के आदिवासी समाज की सामान्य जीवन शैली

ढूंढाड़ का आदिवासी समाज घने वनों-जंगलों और खेतों में रहने जाती हैं। प्रकृति से जुड़े होने के कारण उसे जंगलों के पशु-पक्षी, फल-फूल, नदी-सरोवर का चिर सानिध्य प्राप्त हुआ है। प्रकृति की गोद में ही उनका मन मुक्त होकर खिल उठता है। इस प्रकार उनका प्रकृति प्रेम एवं प्रकृति निष्ठा दृढ़ तथा विलक्षण जान पड़ता है। प्रकृति के सानिध्य में ही उसे प्राकृतिक स्वतंत्रता का अनुभव होता है। उनकी जीवन दृष्टि तथा जीवानुभूति इसी अनुभूति तथा जीवनदृष्टि का प्रतिबिम्ब ही उनके लोकगीतों में दिखाई देता है। प्रकृति ही उसका सर्वस्व होने के कारण उसकी प्रेरणा भी है। वह पेड़ों और अपने पूर्वजों की पूजा करता है। उनके देवता आकाश में नहीं रहते हैं। वे उनके घट द्वारा, जमीन, जंगल में बसते हैं। वह मिट्टी के (डगड़) मिट्टी के ढेले को गणेश मानकर खेतों पर बुवाई शुरू करता है।

आदिवासियों का जीवन अनेक कलाओं से युक्त हैं उनकी चित्रकला, संगीतकला, नृत्य गायन आदि कलाएँ प्रशंसनीय हैं। उनका अपना समृद्ध लोक साहित्य है जो लोककथाओं, लोकगीतों तथा लोकोक्तियों से सुसज्जित है। प्रत्येक आदिम जनजाति का अपना विशेष तथा परम्परागत लोकसाहित्य है जो विविधताओं से परिर्पूण है। इनके लोकगीत परम्परा से गाये जाने वाले गीत को प्रत्येक गीत के पीछे श्रद्धालू, मनप्रवृत्ति आचरण पद्धति, सामाजिक संक्रमण, ईश्वर, परस्ती, अंधविश्वास, रूढ़ि, परम्परा, संस्कृति होने वाले नवीन बदलाव, शहरीकरण, स्त्री-पुरुष भेद, रिश्ते-नातों से संबंधित अनेक बातें दिखाई देती है।

यहाँ के आदिवासियों का मानस सौन्दर्य पर रीझता है - माटी से घरों को लीपना, उस पर मांडने (चित्रकारी खड़िया चॉक से) बनाना आदि बहुत मनमोहक लगता है। गायन और नृत्य आदिवासियों के जीवन के महत्वपूर्ण अंग जो उनके कठिन और कष्टमय जीवन को सरल बनाते हैं। इसमें उपयोग में आने वाले वाद्यों का वे स्वयं निर्माण करते हैं। उपयोग की हुई वस्तु या प्रकृति प्रदत्त वस्तुओं का इस्तेमाल करके वे बिना खर्च के वाद्य यंत्र तैयार कर लेते हैं। 'मीणा जनजाति के लोग उत्सव प्रिय होते हैं।'[1] विभिन्न अवसरों पर ये विभिन्न प्रकार के गीत गाते हैं तथा उत्व व मेलों के अवसरों पर अपनी कला का प्रदर्शन करने से पीछे नहीं

---

[1] रावत सारस्वत - मीणा इतिहास, पृष्ठ 117 (नवीन संस्करण)

रहते। इन मेलों में ये लोग अपनी मौलिक व परम्परागत वेशभूषा में आते हैं।

ढूंढाड़ जनजाति की चारित्रिक विशेषताओं में अतिथि सत्कार प्रमुख विशेषता है। आर.व्ही रसेल और हीरलाल राजपूत व मीणों के बीच की सामाजिक स्थिति एवं मीणों के चारित्रिक गुणों तथा विशेषताओं का विश्लेषण करते लिखते हैं कि ''जयपुर के परिवार में मीणा जनजाति को सर्वोच्च प्रतिष्ठा, सम्मान तथा विशेषाधिकार स्वीकृत थे। इसके प्रमाण स्वरूप वे आमेट नरेश के राज्यभिषेक का उल्लेख करते हैं कि जब नरेश के काल पर टीका किया जाता तो कालीखोह के एक मीणे के पैर के अंगूठे के खून से तिलक किया जाता था।

श्री स्टीफन ने मीणा नर-नारियों की विशेषताओं के संदर्भ में लिखा है - ''आकार में सिंधियों जैसे लगते हैं वे सुन्दर तथा बलिष्ट जाति के दृष्टिगत होते। कद के लम्बे तथा लम्बे व घुंघराले केश वाले होते हैं। सघन सुव्यवस्थित दाड़ी और मुंडे हुए चेहरे की आकृति वाले होते हैं। उनकी त्वचा रंग गौण व अच्छा होता है। उनकी स्त्रियाँ आकृति में सुन्दर लगती हैं।[1]

जनजातीय लोकगीतों में प्रेम सम्बन्धों और नारी का वर्णन प्रतीकों, रुपकों या संकेतो की शैलियों में मिलता है। परन्तु इनमें नग्नता नहीं रहा करती। ऐसे गीत गाँवों के अखाड़ों में भी अपना श्रृंगारिक सौन्दर्य बिखेरा करते हैं। इस प्रकार के गीतों में उभरे शब्द चित्र इन लोगों के शब्द जाल भले ही जान पड़ते हों, परन्तु रसिक हृदय उनका रसास्वास किए बिना नहीं रह सकते। भिन्न-भिन्न, रूप, रस, गंध शब्द और स्पर्श के सौन्दर्यपूर्ण फल-फूल, लता-गुल्म, पशु-पक्षी, कीट-पतंग आदि उन गीतों के नायक नायिकाओं के प्रतीक हुआ करते हैं।

ढूंढाड़ी संस्कृति में व्यक्ति को जन्म से लेकर मृत्यु तक कई संस्कारों से गुजरना पड़ता है। ये संस्कार उनके सर्वांगीण जीवन शैली को प्रभावित करते हैं। इन जनजातियों के विवाह संस्कार के बाद मृत्यु संस्कार को भी महत्वपूर्ण माना जाता है। पहले मृतक के परिवार वाले फिर पड़ोसी दहाड़े मार कर रोते हैं। गाँव की सारी औरतें एकत्रित होकर सहानुभूति जताने के लिए मृतक की अच्छाईयों को याद करते हुए रोती हैं। इस प्रकार आदिवसी लोकगीतों में शोक गीत भी बड़ी मात्रा में पाए जाते हैं। इस प्रकार आदिवासियों का कर्म ही उनका धर्म है और यह

---

[1] लक्ष्मीनारायण मीणा - मीणा जनजाति : 'एक परिचय', पृष्ठ 3

उनकी जीवन शैली में दिखता भी है। आदिवासियों का धर्म उनकी भलाई-बुराई से संबंधित है। उनकी परम्पराएँ, रीति-रिवाज प्रकृति से जुड़ी हुई हैं। परन्तु आज आदिवासियों का धर्म एक राजनीतिक मुद्दा बनता जा रहा है। आज आदिवासियों का सबसे बड़ा खतरा उसकी पहचान मिटने का है। इक्कीसवीं सदी में उसकी पहचान और नाम छीनकर उसे 'वनवासी' घोषित किया जा रहा है। उसे असभ्य घेषित किया जा रहा है ताकि वह भूल जाए कि अपनी संस्कृति, अपनी भाष। वह यह भूल जाए कि वह इस देश का मूल निवासी है अथवा आदिवासी।

खान-पान

खान-पान की दृष्टि से मीणा शाकाहारी माने जाते हैं। परन्तु कई-कई जिलों के मीणे मंदिरा व मांस का सेवन करते हैं। इनका मुख्य रूप से भोजन गेहूँ, जौं, चना, बाजरा है। शहरों में अधिकतर गेहूँ का प्रयोग किया जाता है। गाँव में इनके स्वयं के पशु गाय, भैंस, बकरी होने के कारण, दही, मट्ठा, छाछ का सेवन आवश्यक रूप से करते हैं। राबड़ी इनका सबसे प्रिय नाशता होता है। गर्मियों में गेहूँ की रोटी और सर्दियों में बाजरे की रोटी खाई जाती है। त्यौहार, पूजा आदि में चावल-बूरा का सेवन किया या कराया जाता है। ग्रामीण इलाकों में लड़की का पति ससुराल आता है तो उसके लिए चावल बूरा ही बनाया जाता है। ये ज्यादातर अपने खेतो में उपलब्ध साधनों से अपना जीवन यापन कर लेते हैं। बाजार से सब्जी मेहमान या त्यौहारों पर ही लाई जाती है। दाल-बाटी चूरमा, यहाँ का विशेष खानपान है। खानपान के लिए अधिकतम कांसे जस्ते के बर्तनों का किया जाता है। पीतल का प्रयोग सम्पन्न घरों में ही किया जाता है। यहाँ आटा गूंदने के लिए मिट्टी की परात 'कूण्डा' होता है। रोटियाँ चूल्हे पर मिट्टी के तवे में बनाई जाती है। सब्जी बनाने व परोसने के चम्मच लकड़ी के बने होते हैं जिन्हें चाटू कहा जाता है।

अत: हम कह सकते हैं कि मीणा जाति रहन-सहन में, खान-पान में, मनोरंजन, मेले, उत्सवों में विशेष आनन्द लेती है। इसलिए राजस्थान व वहाँ के लोगों को रंगीला कहा जाता है।

द्वितीय अध्याय

ढूंढाड़ी लोकगीतों का परिचय

द्वितीय अध्याय

ढूंढाड़ी लोकगीतों का परिचय

लोकगीत का अर्थ

आत्माभिव्यक्ति मानव का स्वभाव को लोकगीत मानव के आनन्दमय व कारुणिक क्षणों के उद्‌गार और प्रफुल्लित एवं आत्मरत अनुभूतियों के महत्वपूर्ण स्रोत है। मानव हृदय की भावनाओं का यह स्रोत अपनी संजीवनी शक्ति के बल पर अब तक जीवित है और एक से दूसरे कंठ में, एक हृदय से दूसरे हृदय में प्रतिध्वनित होता चला आ रहा है। "संवेदनशील एवं भावुक जनहृदय जब बोझिल हो उठता है तो गाकर अपने मन का बोझ हल्का करता है इस गान में जनजीवन के हर्ष, विषाद, आशा-निराशा और सुख-दुःख सभी की अभिव्यक्ति होती है। इसमें मानव की कल्पनाशक्ति भी अपना काम करती है तो रसवृत्ति और भावना एवं नृत्य की हिलोरे थी; पर ये सब खास है। "लोकगीत हृदय के खेत में उगते है। 'सुख के गीत, उमंग के जोर से जन्म लेते है और दुख के गीत तो खोलते लहू में पनपते है और आँसुओं के साथी बनते हैं।'"[1] ऐसा भी कहा जाता है कि "आत्मा का आनन्द आंगिक चेष्टाओं में व्यक्त होकर नृत्य बन जाता है और वाचिक होकर गीत।"[2]

लोकगीतों का सृजन कुछ व्यक्तियों द्वारा होता है, परन्तु उनकी अनुभूति व्यापक होती है। वह जन-सामान्य के हृदय से मेल खाकर सार्वजनिक वस्तु बन जाती है; यही कारण है कि लोकगीतों में वैयक्तिकता का नितान्त अभाव रहता है मौखिक परम्परा पर आधारित होने के फलस्वरूप लोकगीतों का बाह्य आवरण परिवर्तित होता रहता है। इतना होने पर भी उसकी आत्मा में आमूल-चूल परिवर्तन नहीं होता है, उसमें पुरातन और नवीन का मिश्रित रूप परिलक्षित होता है। स्पष्ट है वह न तो पुराना होता है और न नया। वह तो वृक्ष के समान है जिसमें निरन्तर नयी शाखाएँ, नये पत्ते, नये फूल लगते रहते है।[3]

---

[1] देवेन्द्र सत्यार्थी - धरती जाती है, आजकल (मासिक नवम्बर 1951), पृष्ठ 106

[2] डॉ. चिन्तामणि उपाध्याय - मालवी लोकगीत : एक विवेचनात्मक अध्ययन, पृष्ठ 4

[3] डॉ. श्याम परमार - भारतीय लोक साहित्य, पृष्ठ 54

लोकगीत लोकसाहित्य की सर्वाधिक महत्वपूर्ण विद्या है जीवन का कोई ऐसा पहलू नहीं, ऐसा दृष्टिकोण नहीं, ऐसा स्पन्दन नहीं जो लोकगीतों की सीमा स्पर्श न करता हो। लोकगीत परम्पराओं के उस महानक के समान है जिसे छोटी-मोटी धाराओं ने मिलकर महानक बना दिया। मन की विभिन्न स्थितियों ने इसमें अपने ताने-बाने बुने है। इसकी ध्वनि में बालक सोये है, जवानों में प्रेम की मस्ती आयी है, बूढ़ों ने मन बहलाये है, वैरागियों ने उपदेश का पान कराया है, पथिकों ने थकावट दूर की है, किसानों ने अपने बड़े-बड़े खेत जोते हैं, मजदूरों ने विशाल भवनों पर पत्थर चढ़ाये है।[1]

हिन्दी साहित्य कोश के अनुसार लोकगीत का अर्थ है - लोक में प्रचलित गीत, लोक निर्मित गीत व लोक विषयक गीत। रवीन्द्रनाथ टैगोर ने लोकगीतों को संस्कृति का सुखद संदेश ले जाने वाली कला कहा है।[2] महात्मा गांधी के शब्दों में लोकगीत ही जनता की भाषा है, लोकगीत हमारी संस्कृति के पहरेदार हैं। लोक संगीत में प्रेम, भक्ति, अनुराग, धर्म आदि मानव जीवन के सभी अवयवों का सन्निवेश है।[3] आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लोकगीतों को ग्राम गीत कहा है - उनके अनुसार इन गीतों में आयों के आगमन से पूर्व भारत में जो सभ्यता प्रचलि थी उसका मूल रूप सुरक्षित है।[4]

लोक जीवन का सुन्दरतम प्रतिबिम्ब लोक संगीत में दिखाई पड़ता है क्योंकि लोकगीतों के शब्दों व स्वरों के चयन में कृत्रिमता का अभाव रहता है उनमें लोकजीवन का सीधा-सादा परिचय होता है वे व्यक्ति के बाह्य जीवन के साथ-साथ उनके मानसिक भावों के भी परिचायक होते हैं।[5]

विश्व के सभी देशों में लोकधुनों का साम्राज्य है जैसे साधारण बोलचाल की भाषा से साहित्यिक भाषा का विकास हुआ वैसे ही लोक संगीत से शास्त्रीय संगीत का विकास हुआ।

---

[1] भगवती लाल शर्मा - भारतीय संगीत को राजस्थान की देन, शोध प्रबन्ध, पृष्ठ 285

[2] वही

[3] डॉ. मदन लाल - राजस्थान के लोकगीतों का सांस्कृतिक अध्ययन, पृष्ठ 30

[4] वही

[5] महेश नारायण सक्सेना - लोकगीतों का संगीत-पक्ष, लोक संगीत अंक 1966, पृष्ठ 46

लोकगीतों की परिभाषाएँ

विभिन्न विद्वानों ने लोकगीतों के आत्मा अनुभूति मानते हुए विभिन्न परिभाषाएँ दी हैं -

श्री रामनरेश त्रिपाठी के अनुसार - ग्राम गीत प्रकृति के उद्‌गार हैं। इनमें अलंकार नहीं केवल रस है। छंद नहीं केवल लय है ग्रामीण मुनष्यों के, स्त्री पुरुषों के मध्य में हृदय नामक स्थान पर बैठकर प्रकृति गान करती है। प्रकृति के वे ही गान ग्राम गीत हैं। जब गृह-देवियाँ एकत्र होकर पूरे उन्माद के साथ लोकगीत गाती हैं तब उन्हें सुनकर चराचर के प्राण तरंगित हो उठते हैं।[1]

देवेन्द्र सत्यार्थी - लोकगीत किसी संस्कृति के मुँह बोला चित्र हैं।[2]

श्री नरोत्तम स्वामी - आदिम मनुष्य-हृदय के गानों का नाम लोकगीत है। मानव जीवन की, उसके उल्लास की, उसकी उमंगों की, उसकी करुणा की, उसके रुदन की, उसके समस्त सुख-दुख की कहानी इनमें चित्रित है, 'काल का विनाशकारी प्रभाव इन पर नहीं पड़ता है किसी कलम ने इन्हें लेखबद्ध नहीं किया, पर ये अमर हैं।[3]

जवाहर लाल नेहरू के अनुसार लोकसंगीत से हमें उल्लास मिलता है औरयह शिक्षा मिलती है कि जीवन का आनन्द केवल भौतिक पदार्थों की उपलब्धि में ही नहीं है।[4]

सारत: कहा जा सकता है कि सांस्कृतिक दृष्टि से विश्व के सभी राष्ट्रों में आरम्भ से ही लोकगीतों का महत्व रहा है। इसीलिए कवीन्द्र रवीन्द्र ने तो लोकगीतों को संस्कृति का सुखद संदेश ले जाने वाली कला कहा है। लोकगीत की परम्परा बहुत ही प्राचीन है। उक्त परिभाषाओं को देखने पर ज्ञात होता है कि लोकगीत असभ्य अथवा आदिम जातियों की ही वस्तु विशेष न होकर सम्पूर्ण मानव समाज की सभी युगों की नैसर्गिक भाव ऊर्मियाँ है, जिन्हें मानव समय के साथ परिवर्तित करता हुआ प्रकट करता रहता है।

---

[1] डॉ. मदनलाल शर्मा - राजस्थान लोकगीतों का सांस्कृतिक अध्ययन, पृष्ठ 30

[2] वही

[3] वही

[4] पं. रविशंकर : लोकधुनों की धड़कनें, संगीत (लोक-संगीत अंक, 1966), पृष्ठ 2

लोकगीतों का महत्व

लोकगीत अपने में हमारी संस्कृति का परिधान धारण कर समाज की एक अमूल्य निधि बने हुए है अपेक्षित जातियों के प्राचीन जीवन का ज्ञान कराने के लिए इतिहास के पृष्ठ मूक है शिलालेख और तामृपत्र भी उपलब्ध नहीं है, वहाँ इस अंधकार में उसके लोकगीत आदि ही दिशा-निर्देश देते है, क्योंकि लोकगीतों की परम्परा उतनी ही प्राचीन है जितनी मानव संस्कृति। जातीय प्रवृत्तियों को जानने के लिए, उनकी प्रामाणिक एवं मौलिक खोज के लिए लोकगीत ही सबसे उपयोगी साधन है। लोकगीतों के इस महत्व को निम्नलिखित बिन्दुओं में प्रस्तुत किया जा सकता है -

समाजशास्त्रीय दृष्टि से

लोकगीतों में सामाजिक जीवन ही मुखर होता है। समाज में प्रचलित, रूढ़ियाँ, परम्पराएँ, रीति-रिवाज, सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्य एवं विश्वास ही लोकगीतों में अभिव्यक्ति पाते है। अतः किसी भी जाति का वास्तविक समाजशास्त्रीय अध्ययन उसके लोकगीतों के माध्यम से सहज सम्भव है।

ढूंढाड़ की आदिवासी मीणा जाति के लोकगीतों में बाल-विवाह, मृत्युभोज जैसी कुरीतियों का संश्लिष्ट चित्र एवं उनके कारणों तथा परिणामों के मार्मिक संकेत प्राप्त होते हैं। इसी प्रकार तात्कालिक धार्मिक मान्यताओं, पारिवारिक सम्बन्धों एवं स्थितियों आदि का सजीव वर्णन मिलता है, उसके विश्वास, अविश्वास, अंधविश्वास, भाव, अभाव, जन्म से मरण तक के सभी संस्कार यहाँ तक की अन्तःस्थल में छिपी हुई मनोतियाँ लोकगीतों के रूपों में फूट पड़ती है। अतः इन लोकगीतों के माध्यम से उनकी सम्पूर्ण सामाजिक एवं पारिवारिक संरचना का प्रामाणिक एवं वास्तविक समाजशास्त्रीय अध्ययन किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त लोकगीतों की सबसे बड़ी उपयोगिता यह भी है इनके माध्यम से एक-दूसरे से जुड़कर लोकमानस का निर्माण होता है। ये लोकगीत व्यक्ति के सुख-दुख को समष्टि का सुख-दुख बनाकर सामूहिक चेतना का निर्माण एवं विकास करते है।

ऐतिहासिक दृष्टि

लोकगीतों में देशकाल और वातावरण की किसी न किसी रूप में अभिव्यक्ति होती है अत: इन लोकगीतों को किसी भी देश, जाति या समाज का इतिहास भी कहा जा सकता है। ये लोकगीत अपने देश-काल समाज इतिहास को इन लोकगीतों में या उनके माध्यम से सुरक्षित रखता है, सार्वकालिक बनाता है। लोकगीत अपने समाज के संकटों, सुखों-दुखों, हर्ष-उल्लास के अवसरों तथा उसके चरित्र नायकों के विविध चित्र अपने में अंकित रखते हैं। उन चित्रों को स्वर में ढालकर जन-जन के कंठ तक पहुँचाकर चिर-परिचित बनाये रखते है। अत: लोकगीतों को किसी जाति या समाज का स्वरलिपि में रचित इतिहास कहना अनुचित नहीं होगा। पृष्ठों में लिखित इतिहास तो मूक होता है पर स्वरलिपि में रचित इतिहास न केवल मुखर होात है अपितु दीर्घजीवी भी होता है दीर्घजीवी एवं कंठजीवी होने के कारण तिथियाँ, कालबोध अवश्य इनसे सम्भव नहीं है।

ढूंढाड़ी जनजाति के पास लिखित इतिहास का नितान्त अभाव रहा है ऐसी स्थिति में उसके लोकगीतों का महत्व और भी अधिक बढ़ जाता है। उनके लोकगीतों में बिखरी हुई ऐतिहासिक कड़ियों को जोड़कर ऐतिहासिक तथ्यों का संकलन किया जा सकता है। इनमें अतिरंजना भले ही हो किन्तु इतिहास के विद्यार्थी के लिए ऐसे तथ्य अवश्य मिल जायेंगे जिनके माध्यम से इस प्राचीन जाति के इतिहास को प्रकाश में लाया जा सकता है। इसके अतिरिक्त इन लोकगीतों के माध्यम से समाज अपने इतिहास को वर्तमान में जीवित रखता है उससे प्रेरणा और शक्ति लेता है। कहा जा सकता है कि समाज का अतीत बन लोकगीतों के माध्यम से अपनी ऊर्जा को वर्तमान को प्रेषित करता है। उदाहरणस्वरूप एक लोकगीत यहाँ प्रस्तुत कर रही हूँ जो एक हजार साल का इतिहास अपने में समेटे हुए है जो पीढ़ी-दर-पीढ़ी हम सुनते आ रहे है जो ऐतिहासिक दृष्टि से अनूठा उदाहरण है -

कुँची[1] को छो बोतड्यो[2], लढा[3] मै जोड़ दियो।

आछी[4] बिगड़ी रै मीणा की हाथो राज खो दिया

हाथौ राज खो दियो।।

---

[1] कुँची- चाबी

[2] बोतड्यो- ऊँट के ऊपर बैठने के लिए रखा जाने वाला सिंहासन

[3] लढा- गाड़ी

[4] आछी- अच्छी

एक और गीत -

फाटी फाटी लितर्‌या[1] हाथ में लेगा।

कोई पूछै तो खै[2] दिज्यो, चांदा राड़ मै लेगा

चांदा राड़ में लेगा।।

ये दोनों गीत आमेर के एक हजार साल पुराने इतिहास को व्यक्त करता है। जब ग्वालियर के नरवर के बालक कच्छावा राजपूत, दूल्हाराय और उसकी माँ को खो गँग के मीणा आलनसिंह चांदा ने शरण दी और उसने किस प्रकार विश्वासघात कर राज छीन लिया और उसके बाद किस प्रकार चांदा मीणाओं को संघर्ष करना पड़ता है।[3] इन दोनों गीतों में दिखाया गया है कि मीणाओं ने सूझ-बूझ से काम न लेते हुए किस प्रकार अपने हाथों से सत्ता खो दी।

भौगोलिक दृष्टि से

लोकगीतों में स्थानीय भौगोलिक स्थिति की अनेक संदर्भों सहित चिह्न मिलते है। ऋतुओं तथा कृषि से सम्बन्धित गीतों से हम स्थानीय पर्यावरण का बहुत कुछ ज्ञान प्राप्त कर सकते है। इन लोकगीतों में नदी, पर्वत, पशु, पक्षी, पेड़-पौधे, फसल आदि का चित्रण होता है। अतः इनके माध्यम से उसके भौगोलिक परिवेश का बहुत कुछ परिचय प्राप्त किया जा सकता है और इस ज्ञान एवं परिचय से हम उसमें पलने वाले मानव समाज की सामाजिक एवं मानसिक संरचना का अध्ययन-विवेचन कर सकते हैं।

सांस्कृतिक दृष्टि से

लोकगीतों की वाटिका में सबसे मनोहारी पुष्प संस्कृति का ही खिलता है। लोकगीतों की हर पंक्ति में संस्कृति की गंध भरी रहती है। संस्कृति का कोई भी पक्ष चाहे रीति-रिवाज, परंपरा, रूढ़ि या पर्व-त्यौहार हो अथवा मूल्य आदर्श, विश्वास या अंधविश्वास हो अथवा जन्म से मृत्यु तक का कोई भी संस्कार हो लोकगीतों से अछूते नहीं रहते। निश्चित ही लोकगीतों को संस्कृति का दर्पण कहा

---

[1] लितर्‌या- कपड़ों के टुकड़े

[2] खै- कह देना

[3] रावत सारस्वत-1, मीणा इतिहास, पृष्ठ 78-79

TH23042

जा सकता है। अत: मीणा जाति की संस्कृति का अध्ययन या विवेचन भी उसके लोकगीतों के सहयोग के अभाव में असम्भव है।

सांस्कृतिक दृष्टि से लोकगीतों की महत्ता इसलिए और भी अधिक है कि ये लोकगीत उस समाज की संस्कृति को अमरत्व प्रदान करते हैं। इन लोकगीतों के माध्यम से ही सांस्कृतिक धारा पीढ़ी-दर-पीढ़ी अनवरत बहती है। सांस्कृति का दर्शन कराता एक लोकगीत उदाहरण स्वरूप -

कोठ्या[1] बोयो बाजरो[2], कोठे बोई ज्वार?

डगर[3] बोयो बाजरो, खेता बोई ज्वार।

कांई[4] सूँ[5] बोयो बाजरो, कांई सूँ बोई ज्वार?

हड़[6] सूँ बोयो बाजरो, कुड़ी सूँ बोई ज्वार।

कांई सूँ नीदयो[7] बाजरो, कांई सूँ नीदी ज्वार?

खुरपा[8] सूँ नीदयो बाजरो, कैंची सूँ नीदी ज्वार।

यहाँ खेतों में 'बोई गई फसल में' ज्वार, बाजरा आदि निराई के साथ लहलहा उठती है। सर्वत्र हरियाली छा जाती है, यहाँ कृषि प्रक्रिया का वर्णन आसानी से देखा जा सकता है। यहाँ लोकगीत प्रश्न पूछने पर आधारित है एक पंक्ति में प्रश्न पूछा गया तथा दूसरी पंक्ति में पूछे गए प्रश्न का उत्तर दिया गया है।

इसी प्रकार पनघट के गीत जहाँ ग्रामीण नारियाँ सामूहिक रूप से मिलती है अपनी इच्छानुसार अपनी मनोभावनाओं को गीतों के रूप में व्यक्त करती हैं। इसमें ग्रामीण संस्कृति के सजीव चित्र कुआँ, बावड़ी, इडी, लेज (रस्सी) आदि का

---

[1] कोठ्या- किधर

[2] बाजरो- बाजरा

[3] डगर- रास्ता

[4] कांई- क्या

[5] सूँ- से

[6] हड़- हल

[7] नीदयो- नीराई

[8] खुरपा- खुरपी

उल्लेख होता रहा है, कुआँ बावड़ी रस्सी आदि के साथ पारिवारिक सम्बन्ध की झाँकी भी इन गीतों में दिखाई पड़ती है -

पणिहारी[1] पाणी[2] भरण चाली रै,

कोण[3] खुदायो कुओ-बावड़ी, कोण खुदाई लम्बीकाड[4]?

सुसरो खुदायो कुओ-बावड़ी, बस्तीन[5] खुदाई लम्बीकाड।

कोण गुथाई पणिहारी थारी इंडिणी[6], कोण न बटाई थारी[7] लेज[8]।

देवरानी गुथाई म्हारी इंडिणी, जेठ बटाई लम्बी लेज।

गीत में प्रश्नोत्तर शैली के माध्यम से भावों व सम्बन्धों की मार्मिक व सघन रूप में वर्णित किया गया है। यहाँ पणिहारी अपने ससुराल पक्ष के संबंधों का विवरण देते हुए यह बताना चाह रही है कि उसके ससुराल पक्ष के लोग ससुर, जेठ-जेठानी के साथ उसके किस प्रकार के सम्बन्ध हैं।

साहित्यिक दृष्टि से

लोकगीत जनमानस के नैसर्गिक भावोद्‌गार होते हैं इनकी परम्परा भी प्राचीन होती है अत: लोकगीतों की भाषा एवं शब्दों का रूप समयानुसार बदलता रहता है। इस दृष्टि से लोकगीतों के माध्यम से समय-समय पर हुए भाषागत परिवर्तनों का एवं उसकी भाषा-सम्पदा का अध्यन सम्भव है। इस प्रकार लोकगीतों का भाषा की समृद्धि एवं उसके विकास में सहयोग असंदिग्ध है।

जनमानस के भाव-रत्न मगढ़ रूप में ही सही जितने लोक-साहित्य में मिलते है - उतने शिष्ट का विशिष्ट साहित्य में नहीं, शिष्ट साहित्य इन लोकगीतों

---

[1] पणिहारी- पानी भरने जाती महिला को पणिहारी कहा जाता है

[2] पाणी- पानी

[3] कोण- कौन

[4] लम्बीकाड- कुआँ व बावड़ी में पानी निकालने के लिए की गई खुदाई

[5] बस्तीन- गाँव का समूह

[6] इंडिणी- मटका रखने के लिए बनाई गई टिकाव

[7] थारी- तेरी

[8] लेज- रस्सी

में प्रचुर भाव-सम्पदा, रस-सम्पदा, अंलकार सम्पदा एवं स्वर सम्पदा ग्रहण कर सकता है।

लोकगीतों में प्राप्त भावों की विविध लहर, स्वाभाविक अलंकार छंद, कहावतें, मुहावरें एवं काव्यरूढ़ियाँ साहित्य की अमूल्य निधि हो सकती है।

इस प्रकार लोकगीतों का अपना महत्व है, ये लोक-संस्कृति एवं लोक जीवन के अध्ययन के मुख्य माध्यम है तो साथ ही उनकी अंतरंग झाँकी भी है। मीणा जाति इस देश की विशेषकर राजस्थान की आदिम जातियों में से एक प्रमुख जाति है, जिसकी अपनी एक विशिष्ट संस्कृति है किन्तु अध्ययन की दृष्टि से यह आज तक अछूती ही रही है। यहाँ तक कि इसका इतिहास भी अंधकार की परतों में खो चुका है। ऐसी स्थिति में इसके लोक-साहित्य तथा लोकगीतों का विशेष महत्व हो जाता है और लोकगीतों का अनुवाद तो बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान रखता है क्योंकि आज अनुवाद के माध्यम से ही मीणा जनजाति की युवा पीढ़ी जो ढूंढाड़ी भाषा व लोकगीत से काफी दूर हो गई इसके साथ ही अन्य जनसमुदाय तक ढूंढाड़ी भाषा संस्कृति व लोकगीतों का परिचय प्राप्त कराया जा सकता है।

ढूंढाड़ के आदिवासी लोकगीतों का वर्गीकरण

यहाँ के लोकगीतों का वर्ण्य विषय इतना विस्तृत एवम् विशाल है कि उनको निश्चित वर्गों एवं सीमा की परिधि में बाँधना असम्भव कार्य है। इन आदिवासी लोकगीतों के वर्गीकरण की समस्या का मूलभूत कारण यह भी है कि लोक जीवन में भावों का परस्पर अन्योन्याश्रित सम्बन्ध रहने के कारण लोक-हृदय से प्रस्फुटित गीतों में एक साथ कई भावों की एकरसता निहित रहती है इसलिए किसी भी लोकगीत को मात्र किसी भाव विशेष का कहना कठिन होता है। इसी प्रकार एक ही लोकगीत कई प्रसंगों पर गाया जाता है। जैसे मीणा आदिवासी जाति में देवी-देवताओं के गीत प्रत्येक शुभ अवसर पर गाये जाते है तथा मीणा समाज का प्रायः हर पर्व त्यौहार या उत्सव किसी न किसी धार्मिक भावना को साथ लिए होता है। ऐसी स्थिति में यह कहना कठिन हो जाता है कि उस समय गाये जाने वाले गीत मात्र त्यौहार के है या उत्सव के है अथवा भक्ति भावना के?

ढूंढाड़ आदिवासी लोकगीतों का अध्ययन करके इन्हें दो दृष्टियों से वर्गीकृत किया जा सकता है-

(I) विषय वस्तु की दृष्टि से

(1) संस्कार विषयक गीत- जन्म से पूर्व के गीत जन्म के बाद के गीत, कुआँ पूजन, माँडा गाड़ना गीत, भात के गीत, विवाह के गीत, सामान्य गीत आदि।

(2) त्योहारों के गीत- तीज, गणगौर, होली, दिवाली।

(3) धार्मिक गीत

(4) मिश्रित विषयवस्तु वाले, गीत, दोहे इत्यादि।

(5) हास्य गीत।

(II) गाने की पद्धति की दृष्टि से

(1) कन्हैया गीत

(2) हेला ख्याल

(3) पद

(4) पचवारिया

(5) रसिया (राम रसिया)

(6) सुड्डा

(7) ढाँचा गीत (जोड़ू गीत)

(I) विषय वस्तु की दृष्टि से

विद्वानों द्वारा गए लोकगीतों के वर्गीकरण के आधार पर हम ढूंढाड़ के लोकगीतों का दो प्रकार से वर्गीकरण कर सकते हैं। विषय वस्तु के आधार पर, गाने को प्राप्त की दृष्टि से आधार पर किये गये वर्गीकरण में निम्न विषयों को आधार बनाया गया है-

लोक-गीतों का विवेधन समाजस्त्रीय, ऐतिहासिक एवं मनोवैज्ञानिक आदि विभिन्न पद्धतियों में किया जा सकता है किंतु प्रस्तुत प्रबन्ध से अध्ययन का विषय सम्पूर्ण मीणा लोक-साहित्य होने के कारण यहाँ गीतों का विस्तार से विवेधन

संभव नहीं है। यहाँ हमें मीणा लोकगीतों का विषय वस्तु की दृष्टि से ही विवेधन प्रस्तुत है-

(1) संस्कार विषयक गीत

लोकजीवन के प्रत्येक पक्ष का प्रत्येक अवसर गीतों से मुखरित रहता इसलिए संस्कार गीतों का विस्तार जन्म से लेकर मरण तक है। इसका गीत हर्ष और विवाद कि विभिन्न मनोवृत्तियों से संबंधित होते हैं।

भारतीय धर्मशास्त्रों में सोलह संस्कारों का विधान किया है। इनमें ये मीणा जाति में निम्नलिखित संस्कारों की प्रधानता है- (क) जन्म, (ख) विवाह, (ग) गौना।

इनमें मृत्यु को छोड़कर शेष संस्कार, उल्लास और खुशी के साथ सम्पन्न होती है। इन अवसरों पर नारी का मधुर एवं कंठ मुखरित हो उठता है। मीना जाति में गाये जाने वाले संस्कार गीत इस प्रकार हैं-

(I) (क) जन्म संस्कार के गीत

बन गीतों का सम्बन्ध जन्म संबंधी संस्कार, परम्परा और लोकाचार से है। मीना जाति में जन्म से सम्बन्धित लोकाचारों को रुढ़ परम्परानुसार सम्पन्न किया जाता है। जन्म संस्कार से सम्बन्धित गीतों का दो अवस्थाओं में देखा जा सकता है-

(i) जन्म से पूर्व के गीत एवं

(ii) जन्म से बाद के गीत

जन्म से पूर्व के गीत- जन्म से पूर्व के गीतों में नारी पुत्र प्राप्ति के लिए देवी-देवताओं की मनौतियाँ रखती है और पूजा कार्य सम्पन्न करती है।

बांझपन के अभिशाप से मुक्त होने की भावना जन्म सम्बन्धी गीतों में बड़ी ही मार्मिक ढंग से प्रकट हुई है। वह कुलदेवी से पुत्र प्राप्ति की कामना करती है एवं माँ न पाने पर कसे जाने वाले तानों से भयभीत होकर उसकी तीव्र मातृत्व की लालसा इस गीत के माध्यम से साकार हो उठती है-

माई म्हानै[1] एक बालूड़ो[2] दो।

एक बालूड़ा के करणै[3] म्हारी सासूजी दै च बौल[4]।

एक बालूड़ा के कारणै म्हारी जेठाणी दै च बोल।

भावार्थ- यहाँ माँ जानती है कि यदि उसके गर्भ में पलने वाली संतान यदि लड़की हुई तो उसे सास के, जेठानी व आस-पड़ोस के ताने सुनने पड़ेगे ऐसे वह इस स्थिति से बचने के लिए पहले ही अपनी कुल देवी से प्रार्थना करती है कि उसके गर्भ से पैदा होने वाली संतान लड़का ही हो। यह समाज की कैसी विडम्बना है कि एक स्त्री स्वयं यह नहीं चाहती कि उसके गर्भ से स्त्री छवि के रूप में बेटी जन्म लें।

बालक- जन्म से पूर्व प्रसव-पीड़ा से सम्बन्धित गीतों में नारी अपनी सास-जेठानी से दाई बुलाने को कहती है-

''जच्चा कहे दाई बेग[5] बुलाओ।''

(iii) **जन्म के बाद के गीत**- नवागन्तुक के जन्म के बाद 'जापा' के गीत गाये जाते हैं जिनमें जच्चा एवं बच्चा की दीर्घायु की कामना निहित होती है और पूत्र जन्म पर खुशी मनायी जाती है।

(iv) **कुआ पूजन के गीत**- छठी के बाद या किसी भी शुभ दिन प्रसूता द्वारा कुआँ पूजन किया जाता है। इस अवसर पर घर की लीपा-पोती होती है और देवी-देवताओं के गीत गाये जाते हैं। इस उत्सव को 'उजलाई' भी कहते हैं।

(v) **विवाह के गीत**

विवाह एक महत्वपूर्ण संस्कार है। ढूंढाड़ प्रदेश में 'विवाह के अवसर पर ब्याई ब्याण (समधी समधिन) से सम्बन्धित गीत गाये जाते हैं। प्रत्येक जाति इसे

---

[1] म्हाने- मुझे

[2] बालूड़ो- लड़का

[3] करणै- कारण

[4] बोल- कड़वे वचन

[5] बेग- जल्दी

नये-नये ढंग से सम्पन्न कराती है विवाह की शुरुआत 'पक्की' से होकर दुल्हन वापस अपने पीहर लौट आने पर समाप्त होती है। विवाह की प्रत्येक रस्म पर गीत गाये जाते हैं। जिन्हें इस प्रकार बाँटा जा सकता है।

(1) सामान्य गीत, (2) वर पक्ष के गीत और (3) मधू पक्ष के गीत

(vi) **सामान्य गीत**- ये गीत वर-वधु दोनों पक्षों द्वारा समान रूप से गाये जाते हैं। इन गीतों के प्रमुख रूप इस प्रकार हैं-

(vii) **लगन के गीत**- सगाई के बाद में शुभ मुहूर्त देखकर लगन सम्पन्न होती है। कन्या का लगन कार्य पहले सम्पन्न होता है एवं इसी दिन संध्या को वर पक्ष के यहाँ लग्नोत्सव सम्पन्न होता है। इस अवसर पर गाये जाने वाले गीतों में 'बन्ना-बन्नी' (दुल्हा-दुलहिन) सम्बन्ध एवं बन्नी (दुल्हन) की स्वाभाविक लज्जा का चित्रण मिलता है, यथा-

'बन्ना- बनड़ी[1] थारा दादाजी ने खीज्यो लगन लिखाये।

बन्नी- म्हांसूं[2] कह्यो[3] न जाय, थे ही लिख भेजो।

बन्ना- म्हांसू कह्यो न जाय, थें[4] ही लिख भेजो।

बन्ना- बनड़ी थारा[5] मामाजी सूं कीज्यो भात संजोय।'

भावार्थ- यहाँ बन्ना (दूल्हा) होने वाली दुल्हन से कहता है कि जल्दी से लग्न उत्सव सम्पन्न हो इसके लिए वह अपने दादा, बाबा, और मामाजी को कहें कि वह सभी संस्कार कह ब्याह रचाए परन्तु यहाँ बनड़ी कहती है कि मुझे शर्म के मारे नहीं कहा जा रहा अर्थात् तुम ही लिख कर लग्नउत्सव के लिए तैयार करो अत: दिखता है कि स्त्री को अपने विवाह की बात करने पर लज्जा अनुभव होती है। नामक गीत की पुनरावृत्ति की जाती है। इसके अतिरिक्त भी उनके गीत गाये जाते हैं।

---

[1] बनड़ी- दुल्हन

[2] म्हांसू- मुझसे

[3] कह्यो- कहा

[4] थे- तुम

[5] थारा- तुम्हारा, तेरा

(viii) **मांडा गाड़ना का गीत**- मीना जाति में घर के आंगन में बांस या खेज़ड़ी की लड़की से मण्डप बनाया जाता है। सभी वैवाहिक रीति-रिवाज इसके नीचे ही सम्पन्न कराये जाते हैं। मण्डप के नीचे आहुति हेतु कुण्ड बनाया जाता है। इस अवसर पर देवी-देवताओं के गीत मनोति के रूप में गाये जाते हैं।

(ix) **भात भरनें के गीत**- बहन के घर पर भाई उनके उत्सवों पर जाता रहता है, भार भरना भी उनमें से एक अवसर है। बहन की पुत्री या पुत्र के विवाह के अवसर पर भी भाई अपनी एवं उसके परिजनों हेतु वस्त्र एवं उपहार आदि ले जाता है जिसे 'भात' कहते हैं और भाई 'भातई' कहलाता है। बहन के मन का भाई-प्रेम उनके लोकगीतों में व्यक्त हुआ है। भात के लोकगीतों के माध्यम से उस स्त्री की पीड़ा भी दिख जाती है जिसका कोई भाई नहीं होता और भात करने के लिए उसके यहाँ कोई नहीं जाता है ऐसे वह अपनी पीड़ा का गान लोकगीत से ही करती है। जबकि जिसका भाई होता है तो वह खुले दिल से भात भरने के लिए कहती है और भात में क्या-क्या उपहार लाना है यह भी वह गीत के माध्यम से उसके समक्ष प्रस्तुत करती है। यथा-

'बीरा म्हारे रमा-झमा[1], सूं अज्यों[2] रे'

आज अज्यो ने भावज[3] लारे लाज्यो रे।

सिरदार भतीजा लारे लाज्यो रे।

बीरा म्हारे रमाझमा लूं आज्योरे।

भावार्थ- यहाँ बहन अपने भाई जिसे कि भात लेकर अपने घर अपनी बहन के घर जाना है ऐसे में बहन विनति करती है कि भाईयाँ जब आयो तो सज-धज कर आना और साथ में भजीता व भाभी को संग लेते आना। जब भाई सज-धज कर और बहन के ससुराल के सभी सदस्यों के लिए अच्छे-अच्छे उपहार ले जाता है

---

[1] रमा-झमा- सज-धज कर आना

[2] आज्यो- आना

[3] आवज- भाभी

और उसके ससुराल में उनके उपहार की बढ़ाई की जाती है तो ऐसे में बहन गर्व का अनुभव करती है। अत: भात संस्कार भाई-बहन के अटूट प्रेम का संस्कार है। अत: इसी प्रकार ढूंढाड़ प्रदेश में विवाह से सम्बन्धित विदाई गीत, दुल्हन के ससुराल तक जाने से सम्बन्धित गीत व बहु की गृह प्रवेश से सम्बन्धित गीत समय-समय पर स्त्रियों द्वारा समूह में गाये जाते हैं।

(2) त्योहारों के गीत

राजस्थान का ढूंढाड़ प्रदेश प्राकृतिक रूप से बड़ा अनूठा प्रदेश है। अरावली पर्वतमाला इसके मध्य से गुजरी है। शुष्क परिवेश होने से यहाँ त्योहार, मेलों के आयोजन कर जन-मानस अपना हर्षोल्लास प्रकट करता है। स्थानीय संस्कृति प्राचीन परम्पराएँ और विचारधाराएँ, लोकोत्सवों में स्पष्ट देखी जा सकती है। इनमें प्रत्येक तबके का व्यक्ति बड़े उत्साह से भाग लेता है। इन उत्सवों, ऋतुओं और मैलों का ऐसा संयोजन होता है कि जन-भावना में नैसर्गिकता दृष्टिकोण होती है। इन उत्सवों स्त्रियाँ माँडनों या व्रतों द्वारा एक नई उमंग भर देती है।

(i) **तीज**- तीज ढूंढाड़ का जीवन्त त्योहार है, यह त्योहार ऋतु प्रधान होते हुए भी भावुकता से अधिक सम्बन्धित है। श्रावण मास की तृतीया के दिन तीज का त्योहार बड़े उत्साह के साथ मनाया जाता है। एक दिन पूर्व 'सिंझारा' मनाया जाता है। जिसमें बालिकाएँ नववधुएँ हथों व पाँवों में महेंदी लगाती। लहरिया, मोठड़ा (ढूंढाड़ की विशेष ओढ़नी) पहनती है। खोलह शृंगार करती हैं तथा अपने पितृगृह जाती हैं। जिन बालिकाओं की सगाई हो जाती है उन्हें ससुराल से सिंझारा (शृंगार सामग्री, घेवर व लहरिया) भेजा जाता है। सहेलियाँ समूह बनाकर बागों में जाती हैं, पेड़ों पर झूले डाले जाते हैं, जिन पर झूलती हुई स्त्रियाँ विभिन्न शृंगार प्रधान गीतों को गाती है। लोक गीतों एक और इस अवसर को सुख सुरंगी और सुहावना गाया जाता है वहीं दूसरी ओर विरहियों के लिए यह बड़ा कष्टमय है, प्रकृति का सुखद वातावरण, मेघ विरहाकुल हृदय को अधिक दग्ध करता है।

इस दिन सुहागनें व्रत रखती हैं तथा अपने सौभाग्य की मंगल कामना करती

हैं। तीज माता पालकी पर आरुढ़ हो निकलती हैं। तीज माता के दर्शन कर सब अपने को धन्य समझते हैं तथा स्त्रियाँ माता को नमन कर अपना व्रत खोलती हैं।

(1) **तीजाँ का रे मेला में, सावण को झूलो।**

धाल्यो[1] मंगली,

तने लेर[2] तो चलूँ लो ये॥

(2) **जैपर का मेला में, काको काकी ने खो दी बेगो[3] हेंर रे गोपल्यो,**

हम्बे हेर रे गोपाल्या, काकी कोने लादी[4], काकी कोने लादी

भावार्थ- तीज में झूला डाला जाता है तथा उसपर लड़कियाँ बैठ कर मंगल गीत गाती हैं। तीज के दिनों में मेला लगता है यहाँ पता चल रहा है कि मेले में इतनी चहल-पहल होती है कि लोग खो जाते हैं। अर्थात् तीज में झूलों व मेलों का विशेष महत्व होता है।

तीज पर्वों और उत्सवों का खजाना लेकर ढूंढाड़ की भूमि में अवतरित होती है। जन-साधारण उत्सवों की तैयारी में जुट जाते हैं। देव शयनी एकादशी (देव सोणी ग्यारस), देव उठनी ग्यारस, नाग पंचमी, जल झूलनी एकदशी, रक्षाबंधन, जन्माष्टमी, गोगानवमी, ऋषि पंचमी, वन-सोमवार अर्थात् श्रावण मास में आने वाले चार सोमवार। सभी इस भूमि के आनन्ददायी और धार्मिक अनुष्ठानों से पूर्ण पर्व है। इसी के साथ शिवमन्दिरों में फूल बंगला महोत्सव बड़ा आनन्दपूर्वक मानते हैं। श्रावण मास में शिव मंदिरों में विशेष उत्साह रहता है। इस अवसर पर गाये जाने वाले कुछ लोकगीत (भजन) इस प्रकार हैं-

भोला शिवाजी म्हाने पिहरिया[5] रो चाव

पीहर म्हाने भेज द्यो भोला नाथ।

---

[1] घाल्यो- डाला

[2] लेर- लेकर

[3] बेगो- जल्दी

[4] लादी- पाई

[5] पिहरिया- पिहर

पारवती जे थे पीहर जाओ म्हाने भी लार[1] ले चालो भोलानाथ।

महादेव जी जोगी की आवे म्हाने[2] लाज।

सहेल्या म्हारी हँस पड़े भोलानाथ।

महादेव कर मोची को भेस

मोचाँ[3] बेचण नीलक्या भोलानाथ

पारवती हेला[4] देर बुलायो

कहो र मोची मोल कांई[5], भोलानाथ।

भावार्थ- तीज त्यौहार एक तरह से सुहागने स्त्रियों का पर्व है ऐसे पौराणिक व धार्मिक भजन व गीतों को गाकर स्त्रियाँ तीज त्यौहार में शिव-पार्वती के पारस्परिक अंतरंगता को लेकर बहुत लोकगीत गाए जाते हैं। यहाँ पार्वती अपने पीहर जाती है तो शिव जी कहते है कि साथ में भी चलेंगे परन्तु पार्वती, शिव जी यह कह अपने साथ नहीं ले जाती है उन्हें उनके साथ चलने में लज्जा आती है सो वे यही रहे। ऐसे शिव जी को पार्वती जी याद आती है तो वह मोची वाले का वेश बनाकर पहुँच जाते हैं पार्वती को छलने क लिए। इस प्रकार यहाँ स्त्री-पुरुष संबंधो के बीच मधुर संबंधों की प्रस्तुति देख सकते हैं।

(ii) **दीपावली**

दीपावली पर अमावस्था की घोर अंधियारी रात्री में सारा ढूंढाड़ अंचल दीपों की जगमग से जगमगा उठता है। घरों की छतों, दिवारों, पोलियों, खिड़की, दरवाजों, गोखों, मंदिरों, पीपल के वृक्षों तथा विशिष्ट देवों (हनुमान, भोभ्या, भैरु सती) पर दीपक जलाये जाते हैं साथ ही अड़ोसी-पड़ोसी परस्पर एक-दूसरे के यहाँ यथा श्रद्धा दीपक या मोमबत्ती रखते हैं। बाजारों में विशेष रोशनी की प्रतियोगिता का आयोजन किया जाता है तथा विशेष आकर्षक रूप से सजे बाजारों,

---

[1] लार- साथ

[2] म्हाने- मुझे

[3] हेला- आवाज़ देकर बुलाना

[4] कांई- क्या

[5] मोचाँ- जूतियाँ

दुकानों तथा प्रतिष्ठानों को पुरस्कार दिए जाते हैं। इस अवसर पर विशिष्ट इमारतों पर भी जगमगाहट देखने योग्य होती है। ईसरलाट, अलबर्ट हॉल, चन्द्रमहल बड़े मंदिर चांदपोल छोटी-बड़ी चौपड़ आदि विशेष आकर्षण का केन्द्र होता है। इन दिनों ढूंढाड़ में कार्तिक स्नान की बड़ी परंपरा है। वहाँ कार्तिक की कथा तथा भजन कीर्तन का आयोजन रहता है। पूरे महीने प्रति व्यक्ति एक समय भोजन करता है विशेष तिथियों पर तीर्थों पर स्नान करते हैं तथा दान पुण्य करते हैं।

ऐ आई असवारी राजा राम की, गढ़ लंका मांही

ऐ जी कहत मंदोदरी सुण पिया रावण, सपणो बिसवा बीस

कूदत देख्या बांदरा[1] जी राम टूटत देख्या दस सीस[2]

भावार्थ- यहाँ मंदोदरी रावण को अपना सपना बता रही है कि उसने बहुत से बंदरों को कूदते देखा और साथ में राम जी के द्वारा दस सरों को कटते देखा। अपनी मंदोदरी को आगे होने वाली अनहोनी को लेकर पहले ही स्वप्न आ जाता है।

(iii) **होली**

कृषि प्रधान इस दिन होली की पूजा की जाती है। कई दिन पूर्व से ही गोबर के बड़ूकले (छेद वाले छोटे कंडे) बनाकर उनकी मालाएँ बनाते हैं। ढूंढाड़ के गाँवों में ग्रामवासी एकत्रित हो गाँव के बाहर होलिका दहन करते हैं। सांयकाल होली की पूजा कर परिक्रमा की जाती है, गोबर की बनाई वस्तुएँ होली पर चढ़ाई जाती है। नवीन धान की बाले सेकी जाती है। लज्जा व संकोचवश स्त्रियाँ अपनी जिन भावनाओं को प्रकट नहीं कर पाती। होली का उन्मुक्त वातावरण उन्हें उद्दीप्त कर प्रकट करवा देता है। लोकगीतों के माध्यम से वे अपनी दबी भावनाएँ प्रकट कर देती है। इस अवसर पर गाये जाने वाले कुछ लोकगीत इस प्रकार हैं-

होली खेले रे चतुर्भुज श्याम धणी[3]

होली खेले रे, हो होली खेले रे....

---

[1] बांदरा- बंदर

[2] सीस- सिर

[3] धणी- मालिक

यो कुण[1] खेले रे केसरिया बागा

यो कुण खेले रे उघाड़े[2] डीलों[3], होली....

राधा जी खेले रे केसरिया बावगा

कान्हूड़ो[4] खेले रे उधाड़े डीलों,

होली खेले रे...

भावार्थ- यहाँ राधा और कृष्ण के द्वारा खेली जा रही होली का विवरण दिया गया है गीत में प्रश्नोत्तर शैली के माध्यम से भावों का मार्मिक एवं सहज रूप में राधा-कृष्ण लीला को वर्णित किया गया है।

(iv) **गणगौर**

सामाजिक और धार्मिक त्यौहारों में गणगौर का बड़ा महत्व है। गणगौर सम्पूर्ण राजस्थान का विशिष्ट त्यौहार है। किंतु ढूंढाड़ अंचल में इसका विशेष महत्व है। होली के दूसरे दिन अर्थात् धूलंड़ी से इसे प्रारंभ किया जाता है जो 16 दिन तक चलता है। जो शिव पार्वती का रूप माना जाता है। शिव पार्वती की लौकिक पूजा के रूप में गणगौर पूजन किया जाता है। सुहागनें, आपने पति की दीर्घायु के लिए अर्थात् अपने अचल सौभाग्य के लिए तथा कन्याएँ शिव समान पति की प्राप्ति के लिए इस व्रत का अनुष्ठान करती है और आस-पास की महिलायें एकत्रित होकर पूजन करती है।

ऋतु तथा धर्म के परिप्रेक्ष्य में ढूंढाड़ में अन्य कई उत्सव हैं जिसमें अक्षय तृतीया (आखातीज) रक्षाबंधन, जन्माष्टमी, गोगानवमी, गणेश चतुर्थी, शरद पूर्णिमा, वसंत पंचमी, नाग पंचमा, शिव रात्रि आदि प्रमुख है। इन सभी उत्सवों में धर्मनिष्ठा और लोक जीवन की विविधता के साथ संस्कृति का निराकर स्वरूप साकार सा दिखाई देता है। ढूंढाड़ में निष्ठा व सरस जीवन का महत्व होने से सभी त्यौहार सजीव से हैं जिससे आधुनिक भौतिक युग में भी परम्परा की मान्यता है।

---

[1] कुण- कौन

[2] उघाड़े- खुला बदन

[3] डीलो- शरीर

[4] कान्हूड़ों- कान्हा

(3) धार्मिक गीत

ढूंढाड़ प्राचीन प्रदेश होने के कारण भारतीय जीवन का धर्म तत्व इसमें अंदर तक समाया हुआ है। संध्या आरती के समय होने वाली शंख व झाझ और विभिन्न घण्टों की ध्वनि दिक् दिगंत को गुजायमान कर देती है। एकादशी, चतुर्दशी, प्रदोश, पूर्णिमा, मंगलवार, बुधवार, शनिवार तथा विशेष पर होने वाले कीर्तन-भजन सारे प्रदेश को धर्ममय, संगीतमय बना देती है।

इनमें विशेष रूप से देवी देवताओं से संबंधित गीत आते हैं। इनमें रात्रिजगों में गाये जाने वाले पितरों के गीत, लोक देवताओं के गीत तथा ब्रह्माण्ड से संबंधित गीत, व्रत व पर्वों से संबंधित गीत हैं। भैरुं जी, भोम्या जी, माता जी इनमें विशेष रूप से उल्लिखित है-

भैरु मन्दर[1] के दरवाजे, भैरु रेण के दरवाजे

बामण[2] की हेला[3] दे घी रे, भैरु मतवाला

भैरु बाला जी म्हारी कणिया[4] री दरद[5] मिटाय

भावार्थ- यहाँ भैरु जी की पूजा वन्दना की जा रही है। भैरु से यहाँ विनति की जारी है कि भगवान मेरी कमर में जो दर्द है उसे मिटाने का कष्ट करें मुझे शीघ्र से शीघ्र स्वस्थ करें इसी प्रकार भोम्या, पितरों आदि का पूजन पारिवारिक सुख-शांति के लिए किए जाते हैं।

आज भी अनेक अनाम लोक-कवियों की वाणी पर्वों ऋतुत्सवां और संस्कार विधियों के अवसरों पर सामान्य लोक कण्ठ से अनुसृत हुई सुनाई पड़ती है। इन लोक गीतों के कुशीलवों का पैतृक परिचय भले ही संदिग्ध है किन्तु निश्चय ही इनकी जन्मदात्री भूमिका ही है।

---

[1] मन्दर- मंदिर

[2] बामण- ब्राह्मण

[3] हेला- बुलावा

[4] कणिया- कमर

[5] दरद- दर्द

(4) मिश्रित विषय वस्तु वाले गीत

ढूंढाड़ में कई दोहे प्रचलित हैं जो नितिपरक, श्रृंगारमय व वर्णनात्मक है। लोक-गीत गाते समय वर्ण्य विषयानुसार जोड़ लेते हैं। कभी-कभी मुख्य गीत का इनसें कोई लेना-देना नहीं होता पर गीत बढ़ाने हेतु ये सब साथ गाये जाते हैं जैसा गीत होता है वैसा ही संगतमय दोहा गा लिया जाता है।

''जैपर का बाजार में जी कोई चार लुगायाँ जाय

दो गौरी, दो सावँठ रे कोई दो दो फलका खाय''

भावार्थ- यहाँ मिश्रित विषय वस्तु वाले गीत में दोहे के प्रकार के दो पद होते हैं यहाँ जयपुर के मेले में जाने वाली स्त्रियों का विवरण दिया है कि कोई गौरी है कोई सांवली है आदि।

(5) हास्य गीत

मानव जीवन में मनोरंजन का विशेष महत्व है, जिसके माध्यम से वह उल्लास प्रफुल्लता एवं जीवन की नवगति प्राप्त करता है लोकजीवन की आनन्द एवं मनोरंजन की यह खोज लोकगीतों को विभिन्न आयाम प्रदान करती है। आपसी हास-परिहास एवं मनोविनोद के क्षणों में आपसी वार्तालाप में कहावते या मुहावरें तुकबंदी, जन्म लेते रहते हैं। इसी प्रकार देवर-भाभी, जीजा-साली, ननंद आदि के मनोविनोद के क्षण दोहा चौपाई या लोकगीतों को जन्म देते रहते हैं। यहाँ तुकबंदी से बनाया गया लोकगीत निम्न प्रकार व्यक्त किया गया है-

अरे बीच गाम[1] में, भई बीच गाम में

नई हबैली[2] बामें[3] रेहबे खाती[4] को

भई; बामे रेहबे खाती तो

ओ, मानी[5] लगा दे

---

[1] गाम- गाँव

[2] हबैली- हवैली

[3] बामे- उसमें

[4] खाती- लकड़ी का काम करने वाला

[5] मानी (कीला-मानी)- चाखी के मुख्य द्वार पर लगाने वाली लकड़ी जिसमें धान डाली जाती है।

घाट[1] फूट गो पाट[2] बिगड़ गो चाखी[3] को

तू बोले च्यूँ[4] ने रे...

ओ कंछड़ा[5] बोले च्यूँने...

अरे लालसोट का डाँगर[6] मैं

ओ लालसोट का डाँगर मैं, सँदर लग दिया भाटाँ[7] में

नमकीन मिलादी आटा मैं, और आग लाग दी टांटा[8] में,

तू बोले च्यूँने रे.... कंछडा बोले च्यूँने...

अँ...

उक्त वर्गीकरण को पूर्ण एवं अन्तिम नहीं कहा जा सकता, कह पाना सम्भव भी नहीं है क्योंकि जो विशेषत लोक-संस्कृति की रही है- विविधता में एकता वही विशेषता इस संस्कृति के लोकगीतों में भी मिलती है। अर्थात् इन लोकगीतों में वैविध्यपूर्ण एकरसता व्याप्त है।

(II) गायन पद्धति की दृष्टि से

ढूंढाड़ की मीणा जनजाति के लोकगीत कई रूपों में मिलते हैं, जैसे बालगीत स्त्री गीत, पुरुष गीत, दंगल, कन्हैया, रसिया हेला ख्याल, गोठ, फागुरिया, जागरण, पर्व, उत्सव, त्यौहार, ऋतु मेला संस्कार आदि गीत गाये जाते रहे है परन्तु आज वर्तमान में दांगलिक गीत, भजन, रसिया, पद, सुड्डा, ढांचा (जोड़ू) गीत, पचवारिया आदि गीत ही प्रचलन में अधिक है जिनसे उनसे अलग-अलग अवसर के अलग-अलग भाव प्रस्फुटित होते हैं। जिनसे आदिवासी जनजाति की

---

[1] घाट- जौ का पिसा हुआ आटा

[2] पाट- चाखी का वह भाग जिससे धान पिसा जाता है।

[3] चाखी- चक्की

[4] च्यूँ- क्यों

[5] कंछड़ा- बिच्छू

[6] डाँगर- खेत का किनारा

[7] भाँटा- पत्थर

[8] टांटा- घाँस-फूस की बनी झोपड़ी

लोक-संस्कृति उजागर होती है। ढूंढाड़ की आदिवासी जनजाति की बहुरंगी सांस्कृतिक धरोहर की अपनी अलग ही पहचान है, इनकी स्वच्छन्द, स्वावलम्बी और स्वाभिमानी जीवन शैली की रक्षा के लिए केवल बाह्य ताकतों से सामना किया है बल्कि अपनी मूल संस्कृति और सामाजिक परम्पराओं को भी सुरक्षित रखने का प्रयास किया है।

ढूंढाड़ की सांस्कृतिक धरोहर में लोक संगीत सर्वोपरि है लोक संगीत में लोकगीत में लोकगीत अटूट रूप से जुड़े हुए है। इन गीतों में कवित्र, कथा, स्वर, लय व ताल सम्मिलित होते है गायन द्वारा शाब्दिक चित्रण बड़ा सहज भाव से व्यक्त होता है। बोल व संगीत का प्रभाव युक्त समन्वय शास्त्रीय संगीत की तुलना संगीत का प्रभाव युक्त समन्वय शास्त्रीय संगीत की तुलना में लोक संगीत में अपेक्षाकृ रूप से अधिक होता है। प्राचीन काल से ही लोकगीत मीणा आदिवासी समाज में जीवन का एक अभिन्न अंग रहे है चाहे मांगलिक कार्य हो या कोई उत्सव, देवी-देवताओं को मनाने के लिए पूजा हो या किसी संस्कार से सम्बन्धित अनुष्ठान या चाहे वह अपने दैनिक कार्य कर रहा हो। वह अपने विचारों की अभिव्यक्ति लोकगीतों के रूप में करते है। इन लोकगीतों ने ही मीणा जाति की प्राचीन परम्पराओं को अभी तक संजोए रखा है। ये मर्मस्पर्शी गीत, श्रृंगार, विरह, प्रेम, शौर्य, भक्ति, गुरु महिमा, स्नेह व आध्यात्मक तथा वात्सल्य के विषयों पर आधारित होते है धार्मिक लोकगीत निर्गुण व सगुण दो प्रकार के होते है। संस्कारों के गीतों में बधावा, लोक, देवताओं के गीत, बारात के गीत, गाली, गायन एवं डांचा गीत जो तात्कालिक घटनाओं, जो सामाजिक, राजनैतिक व आर्थिक समस्याओं पर तर्क वितर्क के रूप में पाये जाते हैं। मीणा समाज का इतिहास व धार्मिक, सामाजिक विषयों पर तर्क-वितर्क द्वारा समस्याओं की तह तक जाकर लोकगीतों द्वारा तर्क-वितर्क से जो निष्कर्ष निकलता है उससे समाज को मार्गदर्शन मिलता है साथ ही इन लोकगीतों से इन विषयों पर जन साधारण का ज्ञान बढ़ता है। इसी प्रकार ढूंढाड़ी आदिवासी समाज में विभिन्न प्रकार के लोकगीत प्रचलित है जिनका समय-समय पर अपना विशेष महत्व रहा है।

दांगलिक गीत (दंगल समारोह)

हालाँकि इस क्षेत्र में लोकगीत बाकी दुनिया की तरह सदियों से गाए जा रहे हैं। इनके समय-समय पर कई रूप मिलते है जैसे कन्हैया गीत (हैला ख्याल),

राम रसिया (रसिया), पचवारिया, पद, सुड्डा, भजन, ढांचा गीत आदि। ये सभी प्रकार के लोकगीत दंगलों या दांगलिक आयोजनों के माध्यम से आज जन-जन तक पहुँच रहे है। इससे पहले की लोकगीतों के प्रकारों का परिचय दे उससे पहले दांगलिक गीत समारोह या आयोजन को समझना अति आवश्यक है।

ढूंढाड़ की आदिवासी जनजाति में अपने क्रममयी जीवन में समरसता लाने के लिए सामूहिक कार्यक्रमों का आयोजन करते हैं, जिसमें दंगल का भी एक महत्वपूर्ण स्थान माना जाता है। दंगल में मीणा जनजाति का एक दल सामूहिक रूप से एकत्रित होते ही है, साथ में अन्य जातियाँ भी समान रूप से शमिल होकर आनंद उठाते है। इनमें सभी तरह के गीत होते हैं, जिनमें पौराणिक कथाएँ, रामकृष्ण चरित्र एवं लीलाएँ समसामयिक विशेष कथाएँ रामकृष्ण चरित्र एवं लीलाएँ समसामयिक विशेष परिस्थितियाँ एवं समस्याएँ आदि होते है। दंगल में प्रतियोगिता होती है; प्रत्येक दल का एक नायक होतो है जिसे मेडिया (प्रधान) कहते है। ये दल क्रम से खुले गायन मंच पर आकर गीत गाते है इनमें से श्रेष्ठ दल का चयन दर्शकों पर पड़ने वाले प्रभाव के आधार पर किया जाता है। श्रेष्ठ दल को पुरस्कार और सभी दलों के पुरुष मेंडियाओं को पगड़ा बँधा कर रंग या गुलाल डालकर विदाई देते है। यह सब व्यवस्था आयोजक गाँव होता है। गाँव ही मंडलियों के खाने ठहरने की व्यवस्था करता है। इस प्रकार के सामूहिक कार्यक्रमों को 'दंगल जुड़ना' कहते हैं। अब ये दंगल पेशेवर ढंग से होने लगे हैं। मंडलियों के लिए इनायी राशि तय की जाने लगी है। मेडियों के शरीर पर भी होड़ाहोड़ नोट टांगे जाने लगे है, इन दंगलों में शुरू में कन्हैया, रसिया, पद आदि गाए जाते थे आज इनमें सुड्डा गायन शैली बड़ी प्रचलन में है। ये दंगलों में गाये जाने वाले गीत ही 'दंगल के गीत' या दांगलित गीत कहलाए। अत: अब दांगलिक समारोहों में गाए जाने वाले आदिवासी लोकगीतों का परिचय निम्न प्रकार से हैं -

(1) कन्हैया गीत

आदिवासी व संगीत एक-दूसरे के पूरक है। मन के भोले-भाले छेल-छबीले, रंग-रंगीले उमंग से त्यौहार मनाने वाले ढूंढाड़ की मीणा जनजाति के लोगों द्वारा कन्हैया संगीत मुख्य रूप से गाया जाता है, पूर्वी राजस्थान के करौली, दौसा, सवाई माधोपुर, अलवर, जयपुर, भरतपुर जिलों में कन्हैया संगीत लोकप्रिय है। सवाई माधोपुर के बामनवास, करौली की नांदौती, अलवर की राजगढ़ दौसा की

लालसो व महवा, तहसीलें कन्हैया संगीत के प्रमुख ठिकाने कहे जाते है।

कन्हैया संगीत एक विशेष प्रकार का सामूहिक गीत है जिसकी हर विधा नवीन होती है। इसकी शैली में अनेक लोकगीतों की शैली का मिश्रण देखने को मिलता है। कन्हैया संगीत के बारे में लोकगायक श्री हरसहाय मीणा ग्राम बड़ौली ने बताया कि कन्हैया गीत को 50-150 तक गायक एक साथ मिलकर गाते है। जिनके सूर व ताल में अद्‌भुत एकरूपता देखने को मिलती हैं। कन्हैया की लय चार मात्रा की और कहन की लय सात मात्रा की होती है। कन्हैया संगीत को ग्रामीण लोग समूह में खड़े होकर गाते है। एक मुख्य गायक होता है जो मेडिया कहलाता है और तीन-चार उसके सहायक मेडिया के रूप में होते है कन्हैया काफी प्राचीन विधा है इसमें पुरुष गायक ही होते है गायन के दौरान इसमें वाद्य यंत्र के रूप में नौबत का प्रयोग विशेष महत्व रखता है कि यह भैंस की खाल से मढ़ा जाता है जिस पर बबूल या शीशम के डंको का आघात करके बजाया जाता है। मेडिया गीत की शुरूआत करता है और इसी प्रक्रिया में जमीन से थोड़ा उछलता भी है। कन्हैया गाते समय दल के सभी सदस्य गोला बना हाथ मिलाए बल के सभी सदस्य मेडिया का अनुसरण करते हुए व हाथों में उंगलियाँ फँसाए हुए तालबद्ध तरीके से एक साथ झुकते हुए गायन करते है यह देखने में बहुत अच्छा लगता है।

जब गायकों का एक दल गा रहा हो तो दूसरा दल चुप रहता है और जब दूसरा दल गा रहा होता है तो प्रथम दल शांत रहता है साथ में वाद्य यंत्र भी मंद-मंद गति से बजते रहे है। उसके उपरांत दोनों दलों द्वारा मिलकर संयुक्त रूप से झड़ (मेडिया द्वारा गाए गई पंक्ति को दोहराना) गायी जाती है साथ में नौबत, घेरा, झांझ-मंजीरे बजाए जाते है।

जब कन्हैया की झड़ी समाप्त हो जाती है तब गायक दलों की ओर से चुने गए दो या तीन गायक प्रत्येक दल से बहुत ही कर्णप्रिय एवं सुरीली आवाज में दोनों तरफ चौपाई गाते है। यह चौपाई समाप्त हो जाती है तब कन्हैया की आगे की झड़ गायी जाती है।

कन्हैया संगीत का शेष 40 प्रतिशत भाग बैठक देकर पूरा किया जाता है बैठकों वाला गीत सबसे आकर्षक भाग होता है। इसमें वाद्य यंत्र-तीव्र गति से बजाए जाते है और गीत अपने पूर्व यौवन पर होता है। कई बार कन्हैया गीतों में

एक दल के द्वारा गाए पद की व्याख्या दूसरे पद के सदस्यों को करनी होती है यह एक तरह की वाद-विवाद प्रतियोगिता होती है। सामने वाला दल द्वारा व्याख्या न कर पाने पर वह दल हार जाता है। यहाँ कन्हैया गीत का उदाहरण प्रस्तुत किया गया है -

दंगल बीच लड़े दोनों भैया

बचावे कौन मेरी भैया

सूरया में से उठ आयो कालो पीलो बादला

बलम बिन फीको लगे मेरा कजला...[1]

(2) हेला ख्याल

हेला ख्याल, कन्हैया गीतों के साथ-साथ ही प्रचलन में आया। इसमें गाई जा रही लंबी कथाएँ, वेदों का सार, शिव व विष्णु पुराण, कृष्ण लीलाएँ व अधिकतर रामायण, महाभारत, रामचरितमानस (तुलसीकृत) आदि प्रसंगों को गढ़ा जाता हैं। इसमें 15-20 व्यक्ति एक घेरे में गाते है तथा अन्य 20-30 व्यक्ति दूसरे घेरे में। एक घेरे द्वारा छोड़ी गयी टेर को ही दूसरी पंक्ति के व्यक्ति शुरू कर देते है। हेला ख्याल में वाद्य यंत्र के रूप में मंजीरा, ढोलक व नौबत का प्रयोग किया जाता है। हेला ख्याल पुरुष मेडियाओं द्वारा अलग-अलग समूहों द्वारा गाया जाता हैं। भारत की भ्रष्ट राजनीतिक व्यवस्था पर आधारित, गायब हरसहाय मीणा द्वारा गाया गया हेला ख्याल लोकगीत निम्न प्रकार से है -

अरे देश म्हारे में तुम देखो तो बापू महात्मा जी गांधी

सच्चाई पर अड़ कर उनने, देश को दिन्ही आजादी

अरे आजकाल का नेता, देश की कर लीनी बर्बादी

और नइ जाणे क, खा की पूँछ, पर फैरे धोड़ी खादी

इन सबको खाबो चइए, कोई सामे कसर हत नई है

ये खाबा का डांकी, छोड़े नइ कोई में बाकी

---

[1] गायक हरसहाय मीणा, ग्राम कैमड़ा, जिला करौली से सुनकर लिपिबद्ध किया गया है।

चाहे होवे काका काकी, ऐसी-तैसी कर दे बाकी

देखो रहते जेंटलमैन, जांणे ये हो चेयरमैन

जेब में टांके फोनटेंण पेंन, इनसे कैसे तो बचे

अरे है के ऐसे नेता भारत में... हेए हेए हेए.....[1]

(3) पद

पदों को विशेष पहचान मीणा जनजाति के पुरुषों द्वारा ही मिली। जब भी ढूंढाड़ के आदिवासियों को जब भी समय मिला लोकमानस में विविध माध्यमों से अपना मनोरंजन करता रहा है। इसलिए वह समय-समय पर विभिन्न आयोजन कर सामूहिक रूप से अपना मनोरंजन करने का प्रयास करता रहता है। मेले, त्यौहार, उत्सव आदि के अतिरिक्त गीतों के दंगल आयोजित करता रहता है। पदों के दंगल भी उनमें से एक है। पर सूर एवं कबीर की प्रसिद्ध रचना पद्धति 'पद' पर आधारित गीत, लोकमानस में प्रचलित गीत है जिन्हें पद कहते है। ये विषय आकार-प्रकार, शिल्प एवं गेयता की दृष्टि से इनमें साम्य है। गेयात्मकता इनकी प्रमुख विशेषता है। जब गायक दल एकत्र जनसमूह में पद गाकर सुनाता है तो जनमानस आनंद से जूझ उठता है इनकी मधुर स्वरलहरी में लयात्मकता का विशेष महत्व होता है। पद गायन में घेरा ढोलक का बड़ा रूप जिसे हाथ से बजाकर, साथ ही मंजीरा पद गीतों में मधुरता लाई जाती है, पद-गायन में दो-दो पंक्तियों से मिलकर एक पद बनता है और उन पदों को जोड़-जोड़ कर एक लम्बा लोकगीत तैयार होता है ये पद ज्यादातर या तो भक्ति के होते है या कोई न कोई नैतिक शिक्षा देने वाले होते है। पद गायन में मीरा, कबीर, सूर आदि के पद काफी प्रमुख है -

1. **हरि भजन करू तो बलम लडे, बेसोदी पाने पड़गो रे**

   कैसे लाज करू घुँघट में जोबन मरगो रे।।[2]

(मीरा पद)

---

[1] हरसहाय मीणा, आयु 45 वर्ष, ग्राम कैमड़ा, जिला करौली से सुनकर लिपिबद्ध किया।

[2] दोनों ही पद गीत पद्मावती मीणा, उम्र-26 ग्राम-मौरेड़, जिला-दौसा से सुनकर लिपिबद्ध किया गया।

2. **हारे जामण जायो हो तो भातईयों बण आ जातो।**

हिरमा लहंगा में पपैया मोर मड़ा ल्यातो॥

हारे जामण जायो होतो तो सबर कर लेती रे।

पोहड़ी हि पे मन भर लेती रे॥[1]

भात प्रसंग (हरधौड़ भक्त और उसकी बेटी)

(4) पचवारिया गीत

इन गीतों का नामकरण क्षेत्र के नाम पर हुआ है। 'पचवारा' जयपुर, जिले का भू भाग है जो जयपुर जिले की लालसोट तहसील के पश्चिम और उत्तर की ओर फैला हुआ है। पूर्व में बांसरडो से लेकर पश्चिम में आड़ा पर्वत तक तथा दक्षिण में मोरेल नदी और लालसोट घाटे से लेकर उत्तर में सैथ तक फैला हुआ है। ये 'पचवारा' की भूमि पर लघु और त्वरित गति से गाये जाने वाले गीत इतने प्रसिद्ध हुए कि दूर-दूर तक फैल गए और उनके आधार पर उसी भाषा में, राजस्थान के अधिकांश भाग में गीत गाये जाने लगे इन गीतों की भाषा पचावारिया क्षेत्र की होती है इन क्षेत्रों में 'है' की जगह छः का इस्तेमाल किया जाता हैं पचवारिया गीत हमेशा त्वरित गति से गाये जाते हैं। ये आकार में लघु होते है इनका व्यर्थ-विषय रामकृष्ण के चरित्र पौराणिक कथाओं, सामाजिक परिस्थितियाँ आदि हैं। पचवारिया गीतों में छोटे व बड़े आकार के मंजीरे ढोलक, खड़ताल आदि वाद्य यंत्रों का प्रयोग किया जाता रहा हैं। पचवारिया गीतों के उदाहरण दृष्टव्य है -

1. **धनुष तोड़ सीता ने लातो जद मिलती जोड़ी,**

तेने बुरी करी रे रावण कर लायो राम की चोरी।[2]

2. **बड़ा दुखन सू देह पाई मानस थाने तो**

विरथा मत खोवे म्हारी बात माने तो[3]

---

[1] वही।

[2] दोनों गीत ही पचवारिया पद गीत हरसहाय मीणा उम्र-45, ग्राम-बड़ौली से सुनकर लिपबद्ध किया गया।

[3] वही।

(5) रसिया या राम रसिया

रसिया अधिकतर पचवारा क्षेत्रों (जयपुर, लालसोट) में गाए जाते हैं। इसमें कृष्ण, राम की लीलाओं से जनजाति द्वारा गाया जाने वाला रसिया ब्रज 'रसिया' का रूप है। 'रसिया' की व्युत्पत्ति 'रसिक' से हुई हैं। 'रस से युक्त' बातें ही 'रसिया' में कहीं जाती हैं कृष्ण रसिक है अतत: उनकी रसपूर्ण लीलाओं का वर्णन 'रसिया' में हुआ है। आगे चलकर यह शब्द घिस गया और केवल श्रृंगारपरक लोकगीत के लिए प्रयुक्त होने लगा।[1] ब्रजरसियों का वर्ण्य-विषय कृष्ण लीलाएँ रही है जबकि मीणा जनजाति में गायेजाने वाले रसियों का वर्ण्य-विषय राम-कृष्ण आदि की लीलाओं के साथ-साथ समाज की समसामयिक दशा, रीति-रिवाज एवं श्रृंगारिक भाव आदि है। रामकृष्ण लीलाओं से सम्बन्धित रसियों में 'टेर' पंक्ति के अंत में 'हरि हर मेरे' वाक्यांश का प्रयोग होता है और सामाजिक या श्रृंगारिक भावों से युक्त रसियों की 'टेर' का अन्त 'मिला पी मेरे' वाक्यांश से होता है। 'टेर' के अंत में लगने वाले वाक्यांश 'हरि हर मेरे' व 'मिला पी मेरे' के प्रयोग का शाब्दिक अर्थ का महत्व न होकर भावों के लयात्मक प्रकटीकरण में सौन्दर्य वृद्धि करना है।

रसिया की ढूंढाड़ी लोकगीतों का एक ऐसा रूप था जिसमें स्त्री और पुरुष सामूहिक रूप से गाते है तथा यह ही एकमात्र ढूंढाड़ी लोकगीत का उदाहरण जिसमें गायन के समय किसी प्रकार का वाद्य यंत्र उपयोग में नहीं लाया जाता। इसकी प्रमुख विशेषता यही है कि इसमें स्त्रियों का दल पुरुष दल संवादात्मक शैली में रसिया गाते हैं। राम रसिया को सर्वप्रथम गुर्जर महिलाएँ गाती थी। इसके माध्यम से स्त्री मंच तक पहुँची। लेकिन इसमें यह शर्त थी कि उन्हें मंच पर सावधान की मुद्रा में गाना होता था, वे मंच पर नाच नहीं सकती थी धीरे-धीरे राम-रसिया लोकगीतों में मीणा जनजाति के स्त्री पुरुष भी शामिल होने लगे। रसियों में स्त्री को स्थान मिलने से यह गायन शैली अधिक लोकप्रिय हो गई तथा दोनों और से श्रृंगारिक भावनाओं की अभिव्यक्ति ने इसे ओर भी रोचक बना दिया। यहाँ उदाहरण स्वरूप 'उषा अनिरुद्ध' की कथा से सम्बन्धित रसिया में 'उषा' को प्रिय के 'स्वप्न दर्शन' से उत्पन्न मिलन और सहवास की भावना दर्शनीय है -

'दिन ऊगत परमात सखिन सू कह रही मन की बतिया[2] हरि हर मेरे।'

सहेली बहणा सोई री अकेली हो गए दोऊ जने,

---

[1] डॉ. मदनलाल शर्मा : राजस्थानी लोकगीतों का अध्ययन, पृ. 25.

[2] बतिया - बात।

ऊँची तो अटारिया पलक्या[1] बिहयो मेरी,

पलक्या में दर्शबतगियो भरतार[2], हरि हर मेरे।

दिन ऊगत परमात ..... हरि हर मेरे।

सखी री बहणा सपनों मोकू[3] आयो आधी रात

सपने में मेरे पिया के सो गई साथ हरि हर मेरे।।.....[4]

इसी प्रकार अनेक रसिया गीत प्रचलित है, जिनमें भाभी-देवर के मधुर सम्बन्ध, सास बहू के सम्बन्ध, सामाजिक परिवेश, पति-पत्नी का मिलन, धार्मिक स्थिति आदि का वर्णन हुआ करता था परन्तु धीरे-धीरे राम रसियों की जगह सुड्डा गायन ने ले ली तथा रसियों का महत्व धीरे-धीरे कम होता चला गया।

(6) सुड्डा गीत

सुड्डा लोकगीत का चलन नया है इन्हें प्रचलन में आए चार से पाँच साल ही हुए है, सुड्डा लोकगीत में महिलाएँ मेडिया (प्रधान) होती है और एक समय में एक महिला ही मंच पर गाती है तथा पुरुष मंच के साथ में वाद्य यंत्रों के साथ-साथ 'टेक' (मुख्य पंक्ति) गाते है। 'सुड्डा' गीतों में मंजीरा, झांझ ढोलक के साथ-साथ आधुनिक वाद्य यंत्रों का भी प्रयोग करना आरम्भ किया गया है। सुड्डा गीतों में लम्बी कथाएँ (हरदौड़ को भात, नरसी को भात, नबर्दा सती की कथा) रामायण, महाभारत और अन्य मिथकीय प्रसंगों को गाया जाता है एक 'सुड्डा' आधे से एक घंटे तक गाया जाता है। सुड्डा गीतों में बीच-बीच में कुछ-कुछ प्रसंग लोक से लिए जाते हैं। 'सुड्डा' गीत एक नवीन विधा होने के कारण इसमें अक्सर सामाजिक समस्याओं जैसे - शराबखोरी, दहेज, शिक्षाा, पत्नी-त्याग, बाल-विवाह वगैरह को विषय बनाया जा रहा है एक तथ्य यह भी है कि 'सुड्डा' गीतों की शुरुआत पुरुषों ने की लेकिन वे महिला सुड्डा की तरह चर्चित नहीं हो सकें इसलिए पुरुषों ने गाना बंद कर इसका विरोध करना आरम्भ कर दिया। जबकि महिलाएँ इनको खूब पसंद कर रही हैं। लोक संगीत में सुड्डा को एक क्रांति की तरह देखा जा सकता है और इसमें स्त्रियों की अहम भूमिका

---

[1] पलक्या - पलंग।

[2] भरतार - कर्ताधर्ता।

[3] मोकू - मुझे।

[4] हरसहाय मीणा, उम-45, ग्राम-कैमड़ा, जिला-करौली से सुनकर लिपिबद्ध किया गया।

कहीं जा सकती है।

सुड्डा गीतों के पहले मीणा जनजाति की स्त्रियों को इस प्रकार मंच पर गाते-नाचते नहीं देखा गया 'सुड्डा' गीतों में ही पहली बार स्त्रियों को नाचते गाते व मटके आदि रखकर धूमर नाच करते देखा गया। हालांकि घूँघट अब भी रखना होता है पर अब कई महिलाएँ एक साथ मंच पर उन्मुक्त होकर नाच सकती है उन्हें किसी तरह की कोई रोक-टोक नही यह एक तरह का बदलाव ही है। गाँव की आम महिलाएँ लोक गायिकाओं को 'सेलिब्रिटी' के रूप में देख रही है तथा धीरे-धीरे आम महिलाएँ भी सुड्डा गायन से जुड़ रही है इसके लिए इन महिलाओं को कथाएँ, प्रसंग व संगीत कला सीखने के लिए गुरु बनाना पड़ता है, ढूंढाड़ की आदिवासी जनजाति में हर एक गायक व गायिकाओं का अपना गुरु जिनसे इन्होंने कथाओं, प्रसंगों व लोकगीतों को कंठस्थ कर लिया जिन्हें वे कभी नहीं भूलती और जो व्यक्तिगत तौर पर लिखा लिया करती है। लोकगीतों को उन्होंने पेशेवर तौर पर अपना लिया है वे 'अपने कौशल का इस्तेमाल कर धन और सम्मान कमाने के साथ गर्व महसूस करने लगी है 'सुड्डा' गीतों की लोकप्रियता के बाद स्थिति यह है कि इन गायिकाओं के पति भी सम्मानित हो रहे है जिससे स्त्री की स्थिति में सुधार होने के आसार दिखने लगे लेकिन फिर भी यह स्त्रियाँ कुछ स्वार्थी तत्वों की आँख की किरकिरी बनती जा रही है क्योंकि शहरों में बैठे तथाकथित सभ्य और पढ़े-लिखे अधिकारी-कर्मचारी, जो समाज की सारी ठेकेदारी अपने पास ले चुके हैं, उनको ये लोकगीत पसंद नहीं है और न ही उन्हें लोक भाषाओं के हो रहे पतन की चिंता है और न ही लोकगीतों के बने रहने की खुशी है। ऐसे में इन अनपढ़ लोक गायक और गायिकाओं को ही मिलकर साहस करना होगा और लोकगीतों को बचाना होगा। हरधौड़ के भात से सम्बन्धित कथा सुड्डे का एक उदाहरण -

हाँरे रे जामण जायो[1] हो तो भातईयो बण आ जातो,

हिरमा लहंगा में पपैया, मोर मड़ा[2] ल्यातो।

हाँरे रे जामण जायो होतो तो सबर कर लेती रे

पोड़ी[3] हि पे मन-भरा लेती रे.....[4]

---

[1] जामण जायो - न माँ बेर से जन्मा भाई।

[2] मड़ा- फूल पत्ती की कढ़ाई बनाना

[3] पोड़ी - सिढ़ियाँ, मड़ा - फूल पत्ती की कढ़ाई बनाना।

[4] पद्मावती मीणा, उम्र 26, ग्राम मैरेड़ से सुनकर लिपिबद्ध किया।

(7) मीणा ढाँचा गीत

ढूंढाड़ के आदिवासी मीणा समाज में मीणा 'ढाँचा गीत' चटपटे, मनोरंजक, तार्किक एवं विशेष रसीले होते हैं। यह मीणा समाज में काफी प्रचलित है। इन्हें जोड़ू गीत भी कहा जाता है क्योंकि विषय या तत्कालिक घटना के आधार पर तुरंत तैयार किए जाते हैं। ये 'ढाँचा गीत' जवाब प्रति जवाब के रुप में तार्किक रूप से एक-दूसरे के तर्क से मात देने के रूप में गाये जाते हैं। इनमें प्रचलित ज्वलंत समस्याओं, शासन, प्रशासन एवं राजनीतिक घटनाओं, क्षेत्र विशेष की पहचान किसी चीज के प्रचलन, चुनाव प्रचार, पहनावा आदि विषयों को चुनकर आपसी तर्क-वितर्क द्वारा अपनी बात को उचित ठहराने का प्रयास करते हैं। इनके द्वारा समाज की समस्याओं एवं बुराईयों की ओर गायन द्वारा समाज का, सरकार का ध्यान आकृष्ट किया जा सकता है। इनमें कई बारकुछ अलहड़पन व फूहड़पन की भी झलक दिखाई देती है। इसी फूहड़पन के चलते ढाँची गीतों को बुरा मानने लगे और उन पर रोक लगाने की कोशिश की जा रही है, परन्तु स्वच्छन्द प्रकृति के युवा लोगों द्वारा मेलों में अभी भी गाये जाते हैं।

अत: इन पर पूर्णता रोक लगाने के बजाय उनको ज्वलंत समस्याओं, बुराईयों, कुरीतियों पर रचनात्मक तर्कपूर्ण गीत गाने के लिए प्रेरित कर हम समाज में काफी सुधार किया जा सकता है जिस प्रकार अधिकतर आध्यात्मिक विषयों पर मीणा दंगलों का आयोजन किया जाता है। उसी तर्ज में ढाँचा गीतों के दंगल आयोजित हो जिसमें प्रत्येक समस्या पर विषय दिए जाएं जैसे दहेज प्रथा, बाल विवाह, साक्षरता सम्मेलन में विवाह, समाज की एकता, मीणा इतिहास, नारी अत्याचार, मीणा अधिकार, आरक्षण शासन प्रशासन, राजनैतिक पार्टियाँ नशाखोरी आदि विषयों पर 'ढाँचा गीत' डीबेट होनी चाहिए जिनसे इनकी अच्छाई और बुराई का जनसाधारण को भी ज्ञान होगा जिससे समाज सुधार में सहयोग मिलेगा।

अत: इन सभी लोकगीतों के प्रकारों द्वारा समाज सुधार के लिए लोगों को मानसिक रूप से तैयार किया है। साथ ही लोकगीत गाने वाले गायक गायिकाओं को समय-समय के अनुसार अपने लोकगीतों की विषय-वस्तु में नयापन लाना चाहिए जिससे लोकगीतों के माध्यम से समाज को नई दिशा मिल सकेगी। यह 'ढाँचा गीत' का हास्यपरक लोकगीत प्रस्तुत किए गया है -

अरे बीच गाम[1] में भई बीच गाम में ऐ ऐ ...
नई हबैली[2] बामे रेहवे खाती[3] को
भई बामे रेहवे खाती को ....
मानी[4] लगा दे ओ मानी लगा दे
घाट[5] फूटगो पाट[6] बिगड़ गो
चाखी[7] पे तू बोले च्यूँने[8]
रे रे .... ओ कंछड़ा[9] बोले च्यूँने ...
अरे लालसोट का डूँगर[10] में
ओ लालसोट का डूँगर में
संदूर लगा दियो भाँटा में
नमकीन मिला दी आटा[11] में
और आग लगा दी टांटा[12] में
तू बोले च्यूँने रे ...
कंछड़ा बोले च्यूँने ....
अँ ..... ह ह ह.....[13]

---

[1] गाम - गाँव।

[2] हबैली - हवेली।

[3] खाती - लकड़ी का काम करने वाली एक जाति (बढ़ई)।

[4] मानी - अस्तर।

[5] घाट - जौ का पीसा हुआ आटा।

[6] पाट - चक्की में लगे दो पत्थर जिनसे धान पीसता है।

[7] चाखी - चक्की।

[8] च्यूँ - क्यों।

[9] कंछड़ा - बिच्छू।

[10] डूँगर - पहाड़।

[11] भाँटा - पत्थर।

[12] टांटा - घास-फूंस की बनी झौंपड़ी।

[13] गायिका लखनबाई, उम्र-45, ग्राम-दानारपुर से सुनकर लिपीबद्ध किया गया।

विशेषकर चुनाव के दिनों में ढाँचा गीत का महत्व ओर बढ़ जाता है नेता लोक गायन-गायिकाओं को मुँह माँगा इनाम देकर उन्हें प्रचार के लिए तैयार करते हैं और बहुत से गायक-गायिकाएँ ढाँचा गीतों के निर्माण करने में माहिर होते हैं। राजस्थान के ढूंढाड़ी इलाके में विधानसभा चुनाव 2008 में ढूँढा के आदिवासियों ने जो राजनैतिक शक्ति डॉ. किरोड़ी लाल मीणा के नेतृत्व में अर्जित कर राष्ट्रीय पार्टियों व उनके नेताओं को जो सामाजिक आईना दिखाया है। अब तक कांग्रेस और भाजपा के साथ गलबहियां करने वाले आदिवासी ने पृथक राजनैतिक पहचान बनाकर भाजपा को सत्ता से बाहर किया और रिकार्ड 29 विधानसभा सीटों पर जीत दर्ज की उस जीत की मीणा आदिवासी ढाँचा लोकगायक विष्णु मीणा व उनके साथियों ने महर कैसेट के माध्यम से लोकगीतों में व्यक्त किया है -

राजी-बोल्याँ जा रै राजन्ती

आगो राज करौड़ी को।

राजी रह रै बावली, छः रै करोड़ी को राज।

पढ़ी लिखी छः री बावली, ठाली करे छः[1] लाज॥

मुंडो[2] देखे तो वसूंदरा,

ले जा कांच करोड़ी को

तोई सूँ[3] गैर करी रै वसून्दरा

किरोड़ी मीणा नै।

घणा दना में अबकाणै[4] वसुन्दरा हेगी फैल।

हैली काप्टर मै करोड़ी करगो रामगढ़ मै सैल॥

भावार्थ

आदिवासी पुरुष अपनी पत्नि को कह रहा कि राजन्ती अब प्रसन्नतापूर्वक रह क्योंकि अपने मसीहा श्री करोड़ी लाल के हाथों में सत्ता आ गई। अब शोषण

---

[1] छः - है।

[2] शब्दार्थ : मुडो - मुँह।

[3] शब्दार्थ : सूँ - से।

[4] शब्दार्थ : अबकाणै - अबकी बार।

से मक्ति मिलेगी किरोड़ी के राज में तू सुख शान्ति से रहेगी और अब तो आप भी पढ़ लिख गई। अत: इन सामाजिक बंधनों से मुक्त हो जा पर्दा करने की आवश्यकता नहीं। वसुन्धरा जी आपकी जो शक्ल किरोड़ी मीणा ने इस चुनाव में बिगाड़ी हूँ अगर वो सूरत देखना चाहती हो तो किरोड़ी का शीशा ले जाओ। हे वसुन्धरा जी (मुख्यमंत्री राजस्थान) तुम्हारे साथ किरोड़ी मीणा ने गैरो (दूसरो) जैसा व्यवहार किया हूँ जबकि वे आपकी ही पार्टी के व्यक्ति थे। सोचो ऐसा क्यों किया? हे वसुन्धरा राजे ने राजस्थान में : जो भी उसका विरोध किया उसे झुकने पर मजबूर कर दिया था किन्तु किरोड़ी मीणा को नतमस्तक नहीं कर पाई और किरोड़ी मीणा ने हेलीकाप्टर में घूम-घूम कर ऐसा प्रचार किया कि वसुन्धरा जी को बोरी बिस्तर बांधने पड़े और वह पुन: सत्ता प्राप्त करने में असफल रही।

अत: देशज भाषाओं के लोकगीतों का अध्ययन करना चाहिए क्योंकि लोकगीत लोकभाषा में पाये जाते हैं ये सब अलंकारों एवं अन्य कलात्मक कृत्रिमताओं से दूर होते हैं। लोकगीतों का निर्माता कोई कवि अवश्य होता होगा, लेकिन इनका कोई विशेष रचनाकार नहीं होता, यानी लोकगीत जन-जन की सांस्कृतिक सम्पत्ति होते हैं। इनकी कार्ई विशिष्ट शैली नहीं होती। एक सहज एवं स्वाभाविक शैली ही इनकी विशिष्टता होती है।

ढूंढाड़ के आदिवासी लोकगीतों में स्त्री की भूमिका

अगर किसी कालखण्ड के इतिहास को भली भांति समझना हो तो उस काल के लोकगीतों को अवश्य देखना चाहिए। हालाँकि यह सब आज लिखित रूप में अब प्राप्त होने लगा, लेकिन आज से पाँच दशक पूर्व हमारे लोक-गीत जनश्रुति पर आधारित थे। लोकगीत परम्परागत रूप से महिलाएँ अपने से उम्र में बड़ी महिलाओं से सीरड कर गाथा करती हैं। यह परम्परा आज की ढूंढाड़ के ग्रामीण अंचलों में देखी जा सकती है। भारत में स्त्री जाति का क्रमबद्ध इतिहास देखने को नहीं मिलता। सामंती व्यवस्था का जो इतिहास (मध्यकाल) हमें प्राप्त होता है, उसमें स्त्री की दशा का ज्ञान तो होता है मगर स्त्री गायब है लेकिन लोकगीतों का अध्ययन करते हुए हमें लगता है कि हमारे लोकगीतों की रचयिता भी स्त्रियाँ ही रही होंगी। हजारों वर्षों का उनके दुख-दर्द का इतिहास यहाँ आज भी सुरक्षित है।

यहाँ हम ढूंढाड़ के आदिवासी अंचलों में व्यवस्था का कन्यादान की

संस्कृति में पली-बढ़ी लड़की (स्त्री) जो पैदा होते ही माँ-बाप के लिए पराया धन होती है, के दुखों को भी एक सीमा तक जानने का प्रयास किया जाता है, मगर लोकगीत जिसमें स्त्री के आँसुओं का एक समन्दर लहरा रहा है, को लोक संस्कृति कहकर या तो ग्लेमराइज किया जाता है या फिर मात्र मनोरंजन के रूप में चिह्नित किया जाता है। भारत में पर्वों, त्योहारों में गाये जाने वाले लोकगीत स्त्री संत्रास के दर्पण होते हैं। ये आज भी गाये जाते हैं मगर इन्हें कभी गम्भीरता से नहीं लिया गया है। यह कभी नहीं सोचा गया कि शुभ अवसरों पर गाये जाने वाले ये मंगल गीत दुख भरे क्यों होते हैं? क्यों इनमें खुशी का अंश कम और शोक, दुख या पीड़ा का अंश अधिक होता है? लेकिन इस बात को कभी गम्भीरता से नहीं लिया गया क्यों? क्योंकि कि उनमें द्वारा भोगा गया जीवन ही दुखों व पीड़ा से भरा हुआ है।

स्त्री को तो पहले पढ़ने-लिखने का अधिकार नहीं था। वह अपने दुखों को अपनी बोली-वाणी में ही गाती थी और आज भी गाती है दुख में गाना गाया जाना आश्चर्य का विषय नहीं है हिन्दी फिल्मों की नायिकाएँ नायक के वियोग या दुख पाने की स्थिति में गाती रहती है। वहीं ढूंढाड़ ग्रामीण इलाकों की महिलाएँ चाहे बेटी की विदाई हो या पति की मृत्यु अपने दुख को गाकर ही व्यक्त करती हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि स्त्री जाति अपनी बोली वाणी में अपने दुखों के गीत बनाकर किसी खास अवसर पर पुरुष वर्ग के सामने रखती आई है। यह भी सत्य है आधुनिक स्त्री की भाँति पहले वर्गीय चेतना नहीं थी। मगर व्यवहार में उसे जो कष्ट भोगने पड़ते थे, उसका अनुभव तो उसे था ही। वह एक परिवार में पलकर बड़ी होती है, और उसी परिवार के द्वारा गुलामी करने के लिए दूसरे परिवार को सौंप दी जाती रही है। तब वह ब्याह के समय यदि उसे वर पसंद नहीं आता है या कोई ओर वजह होती है, तब भी वह आवाज नहीं उठा सकती है। लेकिन वह अपने प्रतिरोध को लोकगीत के माध्यम से दर्ज कराती है।

यहाँ स्त्री से सम्बन्धित लोकगीतों में सुख की अपेक्षा दुख की अनुभूति अधिक अभिव्यक्त हुई है, जिन्हें कई बार सुनते या पढ़ते हुए पहाड़ सी छाती भी दरक जाती है। बहुत सम्भव है कभी इन लोकगीतों का संवेदनापूर्ण मारक प्रभाव पुरुष मनोवृत्ति पर भी पड़ा हो और कोई पिता या कोई भाई अपनी बेटी या बहन के लिए रोया भी हो। जहाँ तक माँ का प्रश्न है, वह तो बेटी के जन्म से ही रोना

प्रारम्भ कर देती है। इस तरह के स्त्री की करुणा से प्लावित लोकगीत हजारों की संख्या में है, जो हजारों अवसरों पर गाये जाते हैं, जैसे खेत बोने के समय के गीत फसल काटते समय के गीत। चक्की पीसने का गीत, पनिहार से सम्बन्धित गीत, तीज, त्योहार के गीत, गोना गीत; विदाई गीत आदि ये सभी शुभ अवसर हैं फिर भी स्त्री की व्यथा का बखान करते हुए दुख भरे हो जाते हैं। इन लोकगीतों के द्वारा पितृसत्तात्मक समाज में स्त्री की क्या स्थिति रही है, को बहुत आसानी से समझा जा सकता है। हाँ, इन लोकगीतों में प्रतिरोध तो है, कहीं-कहीं व्यवस्था विद्रोह के स्वर भी है, मगर परिवर्तन की कोई रूपरेखा न होने के कारण, क्रांतिमूलक स्वर नहीं है, यह सब अपनी मुक्ति भी इसी परम्परा या व्यवस्था में देखती है। निम्नांकित लोकगीत में प्रकट करती है।

लोकगीत में स्त्री जाति की एक त्रासद इतिहास बोध है अब भी वह अपने जीवन से सम्बन्धित चयन और निर्णय के लिए पिता या परिवार पर ही निर्भर रहती है चाहे उसे सुख मिले या दुख। चाहे उसे वर पसंद हो या न पसंद, कई बार तो यहाँ गरीबी के कारण माँ-बाप अधेड़ उम्र के व्यक्ति के साथ ही विवाह बंधन में बांध देते हैं ऐसे में भी वह जहर की घूँट पीकर रह जाती है क्योंकि उसे अपने परिवार की दशा का ज्ञान है इसलिए उसे ही अपना भाग्य मान लेती है और जिस व्यथा स्थिति को वह अपने परिवार को बयान नहीं कर पाती उसे वह लोकगीत के माध्यम बाहर अपने हृदय से बाहर निकालती है यही कारण है कि कई बार शुभ अवसरों पर भी गाये जाने वाले गीत दुख भरे हो जाते हैं इनमें खुशी का अंश कम और शोक, पीड़ा का अंश अधिक होता है।

शोक, पीड़ा के अतिरिक्त व अपने दैनिक कार्यों को करते हुए जैसे पनिहार पर पानी भरते हुए, फसलों की कटाई, बुवाई करते समय, जंगलों या खेत-पथारों में पत्ते या साग तोड़ती धान की रोपनी करती हुई जनजातियाँ स्त्रियाँ कोई न कोई गीत गुनगुनाती है ऐसे साथ वह नए-नए गीतों का सृजन करती चली जाती है। वे सारा दिन व्यस्त रहने के बाद सांझ को जब घर लौटती है तो वे छोटे बच्चों को सुलाते समय माँ के हृदय से अमृत की सोतियाँ फूट पड़ती हैं जो बच्चे की मुस्कान पर झर-झर उठती है। ऐसे में वह खुश होकर नए-नए गीतों, लोटियो का सृजन करती है।

ढूंढाड़ी क्षेत्रों में शादी-विवाह के अवसर पर भी स्त्रियाँ सभी रश्तों-रिवाजों,

संस्कारों की शुरूआत गीतों से ही करती है जैसे- बन्ना-बन्नी गीत, हल्दी-मेंहदी गीत, चाक-भात गीत, तोरण, विदाई गीत आदि और सभी गीत स्त्रियों द्वारा सृजन किए गए विवाह के तोरण रस्म पर स्त्रियाँ दूल्हे व उसके रिश्तेदारों के लिए गालियाँ गाती हैं जो ठन्रत जोड़कर तैयार किए जाते हैं ये मौलिक गीत कब समाज का हिस्सा बनकर प्रचलित हो जाते हैं यह पता ही नहीं चल पाता। इसी प्रकार विदाई के समय अपनी पुत्री को विदा करते माता-पिता अपने संबंधियों के साथ विदा कर देते हैं। विदा के समय ढूंढाड़ प्रदेश में लोकगीतों को लेकर दंगल आयोजन किए जाते हैं जिनकी शुरूआत 70-80 वर्षों से मानी जाती है। इनमें शुरू में तो आदिवासी पुरुष ही गाया करते थे परन्तु धीरे-धीरे स्त्रियाँ भी पेशेवर तौर पर गाने लगी बहुत उनकी संख्या बहुत कम थी, परन्तु 10-15 सालों से ढूंढाड़ी के आदिवासी क्षेत्रों में रसिया (राम रसिया) जो कृष्ण, राम की लीलाओं से संबंधित श्रृंगारिक भाव के गीत होते हैं, की शुरुआत हुई और यहाँ से ही स्त्रियाँ पेशेवर तौर पर दंगल लोकगीत से जुड़ गई और लोकगीत गायन के साथ-साथ उनका सृजन भी कथा आधारित विषय-वस्तु के आधार पर करने लगी। सुड्डा लोकगीतों का चयन नया है इन्हें आए मुश्किल से 4-5 साल हुए हैं सुड्डा गायन के चलन में स्त्रियों की विशेष भूमिका देखी जाती है क्योंकि दांगलिक समारोह में केवल महिलाएँ ही गाती है इनमें गाने वाली मेडिया (मुखिया) स्त्री ही है इनमें गाई जाने वाली लोककथाएँ, धार्मिक घटनाओं पर आधारित होती हैं परन्तु गाने वाली स्त्रियाँ है तो वह दंगल आयोजनों में ऐसी धार्मिक कथाओं का चुनाव करती। जिन कथाओं की स्त्री पात्र किसी न किसी रूप में उनकी व्यथा स्थिति से जुड़े होते हैं जैसे हरदौड़ की कथा (देवर-भाभी के पवित्र बंधन पर आधारित कथा), नरसी भात की कथा (भाई-बहन के आपसी प्रेम पर आधारित), सती नर्बदा की कथा (पतिव्रता नारी पर आधारित) उर्वशी और इन्द्र की कथा (भाई-बहन, भाई-ननंद के रिश्ते पर आधारित) ये सभी कथाएँ किसी न किसी रूप में उनमें जुड़ी हुई इसलिए वह उन्हें गाते हुए पूरे दिल से गाती हैं कई गायिकाएँ तो गाते-गाते रोने तक लगती है ये सभी कथाएँ ढूंढाड़ी आदिवासी जन-जीवन में प्रचलित है जिन्हें ये गायिकाएँ गाती हैं। ऐसे में हम देख सकते हैं कि लोकगीतों के सर्जन में स्त्री गायिकाओं की अहम भूमिका होती है इन्हीं स्त्रियों के कारण दंगल आयोजनों के लोकगीतों में श्रृंगारिता व सहजता आई है। जिनके कारण दांगलिक लोकगीतों का महत्व पहले अधिक बढ़ गया है।

दांगलिक आयोजनों में अब जोडू गीत या ढाँचा गीत भी चलन में आ रहे हैं। इन्हें जोडू गीत या ढाँचा गीत इसलिए कहा गया है क्योंकि ये आधुनिक विषयों व समस्याओं पर आधारित लोकगीत जिन्हें ये गायक-गायिकाएँ ही निर्मित करते हैं, अत: दहेज प्रथा, बाल-विवाह, निरक्षरता, नारी अत्याचार, कन्या भ्रूण हत्या, नशाखोरी, भ्रष्ट राजनैतिक पार्टियाँ, बेमेल विवाह, शासन प्रशासन आदि ऐसे विषय हैं जिन पर लोकगीत बनाकर जनसाधारण तक उनकी बुराईयों को पहुँचाया जा सकता है। अत: इन लोकगीतों के द्वारा समाज सुधार के लिए सहयोग मिलेगा।

अत: हम देख सकते हैं कि स्त्रियाँ लोकगीतों से किस प्रकार जुड़ी, घर-परिवार के सभी रिति-रिवाजों, संस्कारों व पेशेवर तौर पर दांगलिक समारोह में गायन व लोकगीतों के निर्माण के जरिए अपनी भूमिका निभा रही है। स्त्रियों को लोकगीतों से अलग करके नहीं देखा जा सकता। अत: हम यहाँ स्पष्ट तौर पर कह सकते हैं कि ढूंढाड़ के आदिवासी लोकगीतों की जनक वास्तव में आदिवासी की स्त्रियाँ ही है।

ढूंढाड़ के लोकगीतों में प्रयुक्त होने वाले वाद्य और उनका प्रयोग

स्वर आत्मा हूँ तो लय शरीर। अच्छी आत्मा के लिए स्वस्थ शरीर की आवश्यकता है उसी प्रकार से स्वस्थ शरीर के लिए स्वस्थ आत्मा की। प्रकृति के उन्मुक्त और स्वच्छन्द वातावरण में पल्लवित एवं पुष्पित होने के कारण लोक संगीत आज की कृत्रिमता से दूर दृष्टिगत होता है। लोक-संगीत के स्वर वाद्यों का प्रयोग ताल वाद्यों की तुलना में गौण है। साधारण जन-समूह का स्पन्दन होने के कारण इसमें स्वर की अपेक्षा लय अधिक प्रभावी है। मानव लय की अपेक्षा स्वर से अधिक प्रभावित होता है। वह लय अथवा ताल के प्रति अनुरक्ति रखने वालों की अपेक्षा अधिक स्वस्थ और सुसंस्कृत होता है।[1] तात्पर्य है कि साधारण व्यक्ति लय की मार समझता है स्वर की नहीं। जैसे-जैसेवह सभ्यता की ओर अग्रसर होती है स्वर का अधिकार बढ़ता जाता है। इसीलिए लोक संगीत की हमें ताल वाद्यों की अधिकता मिलती है। लोक-संगीत में वाद्यों का महत्व विशेष रूप से ताल वाद्यों का महत्व शास्त्रीय संगीत की अपेक्षा अधिक होता है। लोक-गीत हो अथवा लोक-नृत्य दोनों के लिए ताल-वाद्यों की आवश्यकता समान होती है। अत: गीत

---

1 संध्या गुप्त - राजस्थान के लोक-वाद्यों का संक्षिप्त परिचय, पृ. 18.

अथवा नृत्य में प्राण डालने के लिए वाद्य आवश्यक है इनके अभाव में वह निष्प्राण है।

वाद्यों की समृद्ध परम्परा ढूंढाड़ के लोक संगीत में मिलती है इनमें काफी कुछ विकसित है। कुछ अविकसित सारंगी, हारमोनियम, तबला, शहनाई आदि लोक-संगीत के ऐसे वाद्य हैं जो पूर्ण विकसित हो शास्त्रीय संगीत के मूर्घन्य व सम्मान प्राप्त वाद्य हैं। ढोलक, नगारा, चंग, रावण हत्था, अलगोजा, थाली, पुँगी, मंजीरा, झाँझ, खड़ताल आदि का लोक संगीत में यथेष्ट प्रयोग किया जाता है। ये शास्त्रीय संगीत की दृष्टि से पूर्ण विकसित नहीं कहे जा सकते।

तबला

तबला ढूंढाड़ के लोक संगीत का प्रमुख वाद्य है जिसे नगरों तथा गाँवों में खूब बजाया जाता है। इसे ये अपने ही अंदाज में बजाते हैं। तबला दाहिग और बाँया दो होते हैं तथा दोनों का वादन साथ-साथ किया जाता है। दाहिना तबला लकड़ी का होता है और बायाँ मिट्टी का या किसी धातु का। इन दोनों के मुँह पर चमड़ा मढ़ा रहता है जिसे पुड़ी कहते हैं। पुड़ी के किनारे के चारों ओर चमड़े की गोट लगी रहती है। दाहिने तबले की पुड़ी के बीच और बाएँ (डग्गे) की पुड़ी के बीच से कुछ हट कर स्याही लगी रहती है। दाएँ और बाएँ की पुड़ियाँ चमड़े की डोरी से कसी रहती हैं। पुड़ी के चारों और गोट के किनारे पर चमड़े के फीते का बुना हुआ गजरा लगा रहता है। बद्धी में लकड़ी के गट्टे लगे होते हैं जिन्हें तीनों खिसकाने पर तबले का स्वर ऊँचा होता है और गट्टे ऊँचे करने पर स्वर नीचा होता है।

गाँव वाले धूम धड़ाका करते हुए खुले बोलों से तबला बजाते हैं। इनके वादन में नजाकत नफासत का अभाव है। ये तबले पर प्रायः कहरवा, दादरा, चाचर आदि ताल बजाते हैं और इसके साथ ही खले हाथ से धड़ांग तिरकिट ताः तिर किटतक तत्त या तिर किट धाः बजाना इन्हें अति रूचिकर लगता है।

ढोल

नृत्य के साथ अथवा स्वतंत्र रूप से बजाया जाने वाला यह वाद्य पहले लकड़ी का बनाया जाता था किन्तु अकबर के समय से लोहे का बनने लगा। लगभग चार बालिश्त लम्बा और तीन बालिश्त चौड़ा लोहे का खोल दोनों ओर से

बकरे की खाज से मढ़ा जाता है। सूत यए सन की रस्सी से ढोल कसा जाता है यह राजस्थान का मांगलिक वाद्य है। अत: विभिन्न संस्थायें, उत्सवों के अवसरों पर अवश्य बजाया जाता है। राजस्थान में इसे बजाने के बारह प्रकार है। जैसे घुड़चढ़ी का ढोल, त्यौहार का ढोल इत्यादि।

राजस्थानी गाँवों में जहाँ आधुनिक बैण्ड बाजे की पहुँच नहीं है अथवा परिवार अधिक पैसे खर्च नहीं कर सकता। वहाँ शादी की विभिन्न रस्मों पर ढोल ही बजाया जाता था। परन्तु आज अत्यधिक पैसे खर्च को रोकने के लिए ढूंढाड़ के क्षेत्रों में ढोल बाजे बंद में परन्तु उनका स्थान आज आधुनिक ..... लेते जा रहे हैं।

नगाड़ा

रामलीला, ख्याल नौटंकी आदि में बजाया जाने वाला यह वाद्य युगल रूप में होता है। यह भैंसे की खाल से मंढा जाता है। एक नर तथा दूसरा मादा कहा जाता है। ढोली, राणा, मिरासी लोग बजाते हैं। इसे नगारा, नक्कारा आदि नामों से भी जाना जाता है। वादन करते समय बड़े नगाड़े या नर को यदा-कदा पानी का पोछा घुमाकर नर्म किया जाता है। जबकि छोटे अथवा माता नगारे को हल्के ताप से गरमाया जाता है। राजि जागरणों में तथा पितरों, देवताओं, जागरणों में इसे विशेष रूप से बजाया जाता है। इसी का बड़ा रूप धौंसा, युद्ध क्षेत्रों में बजाया जाता था।

ढोलक

यह ढूंढाड़ के तत् वाद्यों में सर्वाधिक प्रचलित सुलभ और सुगम लोक वाद्य है। यह लकड़ी को खोखला करके बनाया जाता है, जिसके दोनों पुड़े लगभग व्यास के होते हैं। ढोल की भाँति मंढे हुए ढोलक की रस्सी में कड़ियाँ लगी होती हैं तथा मध्य भाग कुछ चौड़ा होता है। यह अत्यंत लोकप्रिय वाद्य है जिस पर सब प्रकार की तालें बजायी जाती हैं। राजस्थान में कव्वाल वैरागी, साधू आदि इसे बजाते हैं तथा ढूंढाड़ी क्षेत्रों में इसका इस्तेमाल भजन व सुड्डा गायन में किया जाता है।

नट लोग इसे एक ओर से डंडे से तथा दूसरी ओर से हाथ से बजाते हैं। ढोलक के कई प्रकार राजस्थान में प्रचलित हैं।

चंग

होली के मदमस्त त्यौहार पर रात को गोल बाँध कर जिस ताल वाद्य पर ग्रामीण अंचलों में मस्ती भरे फागुनी गीत गाते हैं, वह चंग के अतिरिक्त और क्या हो सकता है। यह राजस्थान का अत्यंत लोकप्रिय वाद्य है। जिसका लकड़ी से बना गोल घेरा लगभग तीन बालिश्त चौड़ा होता है और एकओर से बकरे या भेड़ की खाल से मंढा जाता है। घेरे के ऊपर जौ के आटे की लई से खाल चिपका दी जाती है और छाया मे सुखा कर बजाने के काम में ली जाती है। चंग को बांये हाथ की हथेली पर टिकाया जातजा है। उसी में लकड़ी की एक चीप भी रहती है। दाहिने हाथ से इस पर बोल बजाए जाते हैं। कालबेलिया जाति के लोग अधिकतर इसे बजाते हैं। इस पर कहरवा ताल का ठेका प्रमुखत: बजता है। ढूंढाड़ के क्षेत्रों में पद दंगलों में घेरा चंग ही उपयोग में लाया जाता है।

नौबत

यह मन्दिरों में प्रयुक्त होने वाला तत् वाद्य है। इसकी कुंडी सर्व धातु से निर्मित व लगभग चार फीट ऊँची होती है जिसे भैसें की खाल से मढ़ा जाता है तथा खाल के भीतर राल हल्दी तेल पकाकर लगाये जाते हैं जिससे इसकी ध्वनि की गम्भीरता बढ़ जाती है। बबूल या शीशम के डंकों का आघात करके इसे बजाया गया है।

डिग्गीपुरी के राजा की नौबत आजकल खूब प्रचलित है। इसी से स्पष्ट होता है कि नौबत में बजने वाला विशाल नगाड़ा होता है। आमेट की शिलादेवी के मंदिर में चाँदी की कुंडी की विशाल नक्काशीदार नौबत है। मंदिरों में आरती के समय इसका प्रयोग होता है। इसके साथ ही इसका प्रयोग हेला ख्याल, कन्हैया गीत आदि में होता आया है।

इकतारा

साधु सन्तों, भिक्षुओं, नाथों आदि का सर्वत्र सुलभ वाद्य इकतारा है। एक छोटे से गोल तुम्बे में बॉस की डंडी फँसाकर यह वाद्य बनाया जाता है। तुम्बे का थोड़ा सा हिस्सा काटकर उसे बकरे के चमड़े में मढ़ दिया जाता है। बाँस पर दो खूँटियाँ लगती होती है और ऊपर-नीचे दो तार बंधे रहते हैं। नीचे की तार पंचम में और ऊपर का तार षडज स्वर में मिला रहता है। ताट पर अंगुली से ऊपर नीचे

आघात करते हुए इसका वादन किया जाता है।

इकतारा एक ही हाथ से पकड़ कर बजाया जाता है और दूसरे हाथ से करताल बजाई जाती है। साधू सन्त व भिक्षु भजन और निर्गुणी पद गाते हुए इकतारा बजाते हैं।

रावण हत्था

यह राजस्थान का बहुप्रचलित लोकवाद्य है। यह वाद्य जिसके हाथ में रहा उसने सदैव मांगकर ही उदरपूर्ति की है अथवा कहा जा सकता है कि यह याचक वर्ग का साज जी रहा है।

बड़े नारियल की कटोरी पर खाल मढ़ कर इसे बनाया जाता है। इसकी डांड बाँस की होती है जिसमें खूँटियाँ लगा दी जाती है और नौ तार बाँध दिये जाते हैं। ये तार स्टील के न होकर घोड़े के पूँछ के बालों के बने होते हैं तथा इन पर गज चलाकर ध्वनि उत्पन्न की जाती है तथा ये अंतिम छोर पर घूंघरू बँधे होते हैं।

राजस्थान में प्रचलित रावणहत्थे की विशिष्टता यह है कि इसका मुख्य तार घुडच से एक कोण बनाता हुआ वाद्य के बाँयी ओर निकल कर लम्बी डाँड पर लगी खूँटी से कस दिया जाता है। अत: वयलिन की भाँति बाज के तार को डाँड पर दबाकर स्वर नहीं निकाला जाता वरन् तार पर ही दबाव देकर बजाया जाता है। इस प्रकार निसृत ध्वनि अधिक मधुर होती है। इस वाद्य को मुख्य रूप से भोपे व भील लोग बजाते हैं

सारंगी

तत् वाद्यों में सांगी श्रेष्ठ मानी जाती है। इस साज को बजाने में कारीगरी की कोई सीमा नहीं है। शास्त्रीय संगीत का यह प्रमुख संगति वाद्य है। किन्तु राजस्थान केलोक अंचलों में लोक गीतों और नृत्यों के साथ इसकी संगति बड़ी मनोहारी होती है।

शास्त्रीय संगीत के साथ बजायी जाने वाली सारंगी से राजस्थानी संगीत में प्रयुक्त सारंगी आकार में कुछ छोटी होती है। इस सारंगी में 27 तार होते हैं। इसका गज भी धनुषाकार ही होता है और घोड़े की पूँछ के बालों से बँधा होता है। इसी कारण स्वर ऊँचा होता है।

शहनाई

यह शीशम या सागवान की लकड़ी से बनाया जाता है। इसका आकार चिलम के समान होता है। इसमें आठ छेद होते हैं। इसका पत्ता ताड़ के पत्ते से बना होता है। इसकी ध्वनि अत्यंत तीक्ष्ण व मधुर होती है तथा दूर तक सुनाई देती है। इसे सदैव दो व्यक्ति साथ बजाते हैं। इसे बजाने के लिए मुँह में निस्तर श्वांस रहना आवश्यक है अत: नाक से बराबर श्वास लेना पड़ता है।

ढूंढाड़ में राजा महाराजाओं के जमाने में यह रजवाड़े का अनिवार्य साज था। जयपुर नगर में नौबत खाना पिछले दिनों तक खुला हुआ था।

आज भी तीज, गणगौर के मेलों में ऊँचे मंच पर रोशन चौकी पर शहनाई वादकों को स्थान मिलता है। विवाह या अन्य मांगलिक अवसरो पर इसे बजाया जाता है। कभी-कभी लोक नाट्यों व ख्यालों के साथ यह भी बजाई जाती है। कुँआ पूजन व चाक पूजन के समय गाये जाने वाले गीतों में यह शहनाई बजाई जाती है।

पुँगी

यह घीया या तुम्बे का बना हुआ एक विशिष्ट वाद्य है। कालबेलियों को पुँगी बजाते व सर्प को पुँगी से नचाते स्त्री ने देखा होगा। इसकी तुम्बी का पतला भाग लगभग डेढ़ बालिश्त लम्बा होता है तथा नीचे का हिस्सा गोल आकार का होता है, निचले हिस्से में थोड़ा सा छेद करके उसमें बाँस की दो नलियाँ मोम से लगा दी जाती हैं, इनमें से एक में तीन तथा दूसरी में नौ छेद होते हैं तथा ये परस्पर मोम से चिपका दी जाती हैं।

कालबेलिया नृत्यों के साथ पुँगी बजायी जाती है। कालबेलिया लोग सर्प पकड़ने का कार्य करते है और इनकी स्त्रियाँ बहुत अच्छा नृत्य करती हैं। उनके नृत्यों के साथ पुँगी बहुत अच्छा प्रभाव डालती है।

मंजीरा

यह पीतल और कांसे की मिश्रित धातु का बना वाद्य है। दो छोटी गहरी गोल पट्टियाँ होती हैं। इसकी प्रत्येक पट्टी का मध्य भाग प्याली के आकार का होता है जिससे उनका पूरा भाग एक-दूसरे को स्पर्श कर सके। दो मंजीरों को

आपस में घर्षित करके ध्वनि उत्पन्न की जाती है। गायन व वादन में व नृत्य में लय के भिन्न-भिन्न प्रकारों की संगति के लिए इस वाद्य का प्रयोग होता है। इसे लोक संगीत व भक्ति संगीत में प्रयोग करते हैं निर्गुण भजन होली के गीत इसके साथ गाये जाते हैं। इसके साथ ही मंजीरा, हेला ख्याल, पद, सुड्डा आदि लोकगीतों के प्रकार में इसका प्रयोग होता है।

झांझ

यह मंजीरे का विशाल रूप है जिसकी लम्बाई, चौड़ाई का व्यास लगभग एक फुट होता है चक्राकार दो बड़े टुकड़े होते हैं जिनके मध्य भाग में एक छोटा सा गड्डा रहता है, इन्हें आपस में टकरा कर बजाया जाता है इनमें झनझनाहट भरी ध्वनि उत्पन्न होती है। इसे ताशा व ढोल के साथ ही बजाते हैं। झांझ के मध्यभाग में डोरी की बनी मूँठ होती है जिसे बजाते समय मुट्ठी से पकड़ा जाता है। मंदिरों में आरती के समय इनका प्रयोग होता है। और दांगलिक गीतों के प्रकार में सुड्डा, पद, हेला, ख्याल, भजन, मीणा, ढाँचा-गीतों आदि में भी इसका मुख्य रूप से प्रयोग होता आया हैं।

थाली

कांसे की बनी हुई थाली का एक किनारा छेद कर उसमें रस्सी बाँध कर अँगूठे से टकरा कर लकड़ी के डंडे से आघात द्वारा बजाई जाती है यह चंग, ढ़ोल आदि के साथ बजाने पर विशिष्ट वातावरण का निर्माण करती है। आदिवासी, मीणे, गूजर इसे विशेष रूप से बजाते हैं।

खड़ताल

यह भारत में सर्वत्र प्रचलित लोक वाद्य है। खड़ताल शब्द करताल शब्द से बना है। इस वाद्य में दो लकड़ी के टुकड़ों के बीच में पीतल की छोटी-छोटी गोल तश्तरियाँ लगी रहती हैं। जो कि लकड़ी के टुकडों को परस्पर टकराने के साथ मधुरता से झुंकृत होती है। इसे इकतारे के साथ बजाया जाता है यह भक्तजनों, साधु संतों द्वारा प्रयुक्त किया जाता है।

हारमोनियम

संगीत के क्षेत्र में हारमोनियम का अपना एक विशिष्ट स्थान है। संगीत के

गायक तानपूरे का प्रयोग आधार स्वर हेतु एवं वायलिन, सारंगी व हारमोनियम का प्रयोग संगति करने हेतु करते हैं। किन्तु लोक-संगीत में हारमोनियम को अपेक्षाकृत यथेष्ट सम्मान प्राप्त है, इनको बजाने वाले भी अपने ढंग से निराले ही होते हैं। कुछ शास्त्रीय के जानकार होते है किंतु कुछ केवल लोकगीतों के मौखिक परम्परा के अनुयायी। अपने बाप-दादाओं अथवा बुजुर्गों से बाल्यकाल से सीखे लोकगीतों को ये हारमोनियम पर निकाल लेते हैं और उन्हीं स्वरों के अनुसार उनमें बीच का भराव कर देते हैं, किन्तु राग घाट ताल आदि शास्त्रीय बन्धनों से वे बिल्कुल मुक्त है। वे जानते ही नहीं उन्हें बस अपनी धुन याद है और उसी हिसाब से वे बजाते रहते है। हारमोनियम दो प्रकार के प्रयोग में लाये जाते है : 1. सिंगल रीड़, 2. डबल रीड़। सिंगल रीड़ में रीड़ इकहरे होते हैं और डबल रीड़ में रीड़ डबल होते हैं।

हारमोनियम लकड़ी का एक आयताकार बक्सा होता है। इसमें अन्दर लकड़ी का एक तख्ता लगा रहता है जिसमें रीड़ फिट की जाती है, इसी रीड़ बोर्ड कहते है। इसी रीड़ बोर्ड के ऊपर काले और सफेद रंग के परदे लगे रहते हैं जिन्हें दबाने से उनका पिछला भाग रीड़ बोर्ड के ऊपर अधर हो जाता है। अत: रीड़ बोर्ड के भिन्न छिद्रों से निकलने लगती है और चूँकि वह हवा रीड़ों में बह कर निकलती है। अत: आवाज बन जाती है, रीड़ बोर्ड में नीचे की तरफ पीतल के छोटे-छोटे टुकड़े लगे रहते है जिनके बीच में पीतल का पत्ता कटा हुआ होता है। जब इस पत्ते को चीरती या हुई हवा अन्दर से बाहर निकलती है तो आवाज बन जाती है। रीड़ बोर्ड के नीचे एक ओर तख्ती होती है, जिसमें होकर पेटी के नीचे से या धोंकनी में से हवा आती है, इसी तख्ती में स्टॉप लगे रहते हैं, स्टॉप खींचने से हवा आनी शुरू हो जाती है और स्टॉप बंद कर देने से हवा पास होनी बंद हो जाती है। यह लोकप्रिय वाद्य है परन्तु आजकल के लोकगीतों में इसका महत्व कम हो गया है क्योंकि इनका स्थान आधुनिक साऊंड इफेक्ट यंत्रों ने ले लिया है।

ढूंढाड़ के लोकगीतों की शिल्प विधान व्यवस्था

लोकगीतों में स्वरों के उतार-चढ़ाव गायक अथवा गायिकाओं के भावानुकूल स्वाभाविक रूप से बनते हैं। स्वरों की व्यवस्था की क्रमिक और स्वाभाविक है। यद्यपि ये गीत किसी विशेष राग पर आधारित नहीं होते। इनकी रचना में रचनाकार का उद्देश्य राग निर्माण करना नहीं होता। हृदयतंत्री ने भावुक हो जब झंकार की

और उससे जो धुन बनी उसी से लोकगीत का रूप ले लिया यहाँ गीतकार और संगीतकार एकाकार हो जाते हैं किन्तु सांगीतिक दृष्टि से विवेचन करने पर हम उन गीतों का शास्त्रीय संगीत की रागों के आधार पर विश्लेषण करते हैं। इस दृष्टि से ढंढाड़ के लोकगीतों में हमें तिलक, कामोद, सारंग, भूपाली, दुर्गा, पहाड़ी पील, माँड, देस आदि रागों का अधिक प्रयोग मिलता है। किन्तु इसके साथ ही मांझ खमाज, देसी, बिलावत, शुद्ध कल्याण, गारा, गौड़, नट, झिंझोटी आदि के स्वर भी हमें लोकगीतों में मिलते हैं।

इनमें भी किसी लोकगीत में राग स्पष्टतः दिखाई देती है, कहीं राग का आभास मिलता है, किसी लोकगीत में एक ही राग का वर्चस्व है तो किसी लोकगीत में दो या दो से अधिक रागों का मिश्रण मिलता है। किसी लोकगीत का स्वर संयोजन अति सुखद एवं मनोहारी बना है किन्तु उसे किसी राग विशेष में नहीं मान सकते। क्योंकि उनका फैलाव चार स्वरों तक ही है और शास्त्रीय संगीत के नियमानुसार किसी राग में कम से कम पाँच स्वर होना आवश्यक है। 'ढूंढाड़' के लोकगीतों के सांगीतिक विवेचन से इतना स्पष्ट है कि लोक संगीत की दृष्टि से 'ढूंढाड़' भारत के समृद्ध प्रदेशों में अपना विशिष्ट स्थान रखता है। 'ढूंढाड़' अंचल के लोकगीत भी राग विशेष पर अवलम्बित है यहाँ के लोकगीत राग सारंग कहरवा तथा भरतपुर धौलपुर जिलों के लांगुरिया, रसिया, कजरी, सपरी आदि लोकगीत पीलू कामोद तथा काफी पर एवं रजवाड़ी लोक-संगीत देश सोरठ या माँठ पर अवलम्बित होते हैं। उदाहरण के लिए शास्त्रीय रागानुसार विवेचित ढूंढाड़ के कुछ लोकगीत के शब्द प्रस्तुत हैं। राग वृन्दावनी सारंग पर आधारित ढूंढाड़ का प्रसिद्ध लोकगीत-

ताल कहरवा मात्रा 8

1. जँवाई

एक बार आओ जी जँवाई जी पावणा

थाने सासू जी बुलावे घर आव, जँवाई लाडकड़ा

सासू जी ने मालूम होवे, म्हारे घरां भाई हुयो

म्हारे घराँ छै मोखलो काम, सासूजी म्हाने माफ करो

एक बार आओ जी जँवाई जी पावणा

थाने सुसरा जी बुलावे घर आव, जँवाई लाडकड़ा

ससुरा जी ने मालूम होवे बाप म्हारो सैर गयो

म्हारे घराँ बहुतेणो काम सुसरा जी म्हाने माफ करो

एक बार आओ जी जँवाई जी पावणा

थाने साली जी बुलावे घर आव, जँवाई लाडकड़ा

साली जी बुलावे है तो, साडू जी भेजूँ छूँ

म्हारा साडू जी नाचेला सारी रात साजी म्हाने माफ करो

एक बार आओ जी गँवाई जी पावणा

थाने लाड़ी जी बुलावे घर, जँवाई लाडकड़ा

लाड़ी जी बुलावै छै तो, लाडो जी भी आवे छे

मैं तो जाऊं रे सासटिये आज साथीड़ा म्हाने माफ करो

2. पोदीनो

राग पहाड़ी ताल कहरवा मात्रा 8

माथा पे ल्याई केबडो झोली में ल्याई

हरियो पोदीनो, लुड जा रे हरिया पोदीना

तनै सिल्ल पे रे बुटाऊं रे हरियो पोदीना

क्यारा में बांऊ केबड़ो, श्वेता में बांऊ हरियो पोदिनो

सुसरा जी ने भाव केबड़ो

सासू जी ने भावे हरियो पोदीनो,

लुड़ जा रे....

जेठ जी ने भावे केबड़ो

जिठ्याणी ने भावे हरियो पोदीनो,

लुड जा रे....

देवर जी ने भावे केबड़ो

द्योराणी ने भावे हरियो पोदीनो

लुड जा रे.....[1]

उपर्युक्त गीत राजस्थान के प्रसिद्ध घूमर नृत्य की तरह ही धीमी गति में चलने वाला नृत्यगीत प्रसिद्ध गीत है यह राजस्थान के अलग-अलग क्षेत्रों में भाषा के बदलाव के साथ सुनने को मिलता है इसके साथ ही यह पुस्तकों में भी लिपिबद्ध किया गया है। यह पहाड़ी राग पर आधारित हे इसमें बहुत धीमी गति में कहरवा का प्रयोग किया जाता है।

ढूंढाड़ी लोक गीतों में लयताल व्यवस्था

स्वर और लय संगीत के प्रमुख तत्त्व हैं। एक के बिना दूसरे का अस्तित्व नगण्य है। यह एक सिक्के के दो पहलू है। स्वर आत्मा है तो ताल शरीर। लोक संगीत में ताल का इतना महत्व नहीं है जितना लय तत्व का। ग्रामीण वातावरण में होने वाले अनुभवों को जब वे अपनी भाव उर्मियों के द्वारा प्रकट करते है तो लय स्वत: ही आ मिलती है, उन्हें ताल का कोई अर्थ मालूम नहीं है, न उन्हें उनका ज्ञान है। वे अपने भावों को अपनी मौज में प्रकट करते हैं। श्रीमति अवस्थी के शब्दों में "ये लोकगीत मानव हृदय की प्रकृत भावनाओं को मन्मयता की तीव्रतम अवस्था की गति है जो स्वर और ताल को प्रधानता न देकर लय या धुन प्रधान होते हैं। लय को यदि किसी वैज्ञानिक ढंग से ध्वनि लहरों में बदला जाए तो निश्चित रूप से एक झंकार का रूप होगा। यही झंकार हमारे लोकगीतां की आत्मा है। तन्मयता की चरम स्थिति लय है। किसी स्थिति में तन्मयता लाने के लिए इस झंकार की आवश्यकता है। इसलिए लोक गीतों में हृदय को तन्मय करने के लिए लय (झंकार) की आवश्यकता पड़ी।"[2] इसी लय को वे 3 मात्रा या मात्रा के

---

[1] यहाँ प्रस्तुत दोनों गीत रवि प्रकाश नाग द्वारा राजस्थानी गीतां रो गजरो में संकलित है। पृष्ठ 70, पृष्ठ 144

[2] शान्ति अवस्थी- लोक नृत्य और लोकवाद्यों में लोकजीवन की व्याख्या, लोक संगीत, अंक 1996, पृष्ठ 38

छन्दों में आबद्ध करते हैं। लोकगीतों के छन्द में गति और यति का विशेष महत्व है। गति, यति और स्वराघात के आधार पर किन्हीं गीतों में दो, तीन, चार मात्राओं पर किन्हीं गीतों में पाँच-छः, सात-आठ मात्राओं पर स्वराघात मिलता है। सांगीतिक दृष्टि से हम उन्हें तालों के हिसाब में विभाजित करते हैं। ढूंढाड़ी लोकगीतों में कहरवा, चाँचर (दीपचन्दी) खेमटा एवं दादरा का खूब प्रयोग मिलता है। जबकि इनका प्रयोग करने वाले उनकी गणना से अनभिज्ञ हैं लोकगीतों के गायक-गायिकाओं द्वारा गाए गए गीत किसी न किसी गुरु द्वारा जिसे लोक संगीत का गहरा ज्ञान है द्वारा तैयार किए गए हैं लोकगीतों के गायक-गायिकाएँ सिर्फ इन्हें याद करके लय में गाते हैं। ढोलक तथा तबले की संगत पर उक्त ठेके बजाये जाते हैं। ताल-बद्धता किसी भी गीत को एक निश्चित गति में बहने को बाध्य करती है। ढूंढाड़ी लोकगीतों के गायन के साथ संगत करने के लिए निम्न साजों का अधिकतर प्रयोग होता है। ढोल, ढोलक, सारंगी, रावणहत्ता, चंग, घड़ा, वादन, मंजीरे, तबला, नगाड़ा, नौबत, हारमोनियम, साऊंड इंफेक्ट (आजलक) का भी प्रयोग किया जाता है।

अतः जहाँ गायन है वहाँ ताल-बद्धता के अनुशासन को स्वीकारना ही होगा इसलिए लोकगीतों के स्वर-साधक को ताल तथा लय का ज्ञान अपरिहार्य है। उदाहरणस्वरूप विभिन्न ढूंढाड़ी तालों में निबद्ध कुछ लोकगीत इस प्रकार हैं-

1. **ताल कहरवा**- इसमें 8 मात्राएँ होती हैं। कुछ कहरवा ताल के लोकगीत धीमी लय में गाये जाते हैं और कुछ तेज गति के होते हैं-

कहरवा (धीमी लय)

1. लूड़ जा रे हरिया पोदीना

   झुक जा रे बाल्या पोदीना

कहरवा (तेज गति)

1. **अर र र र र**

   काड़यो कूद पड्यो रे मेड़ा में

   साइकल पंचर कर ल्यायो

2. **ताल दादरा**

इसमें 6 मात्राएँ होती हैं-

कैसरिया बालम आवोनी पधारो म्हारे देस,

आवणा-आवणा कह गया और कर गया कोल अनेक।

गिणतां-गिरतां घस गई म्हारी आंगलियाँ री रेख।

जो मैं ऐसो जाणती प्रीत कियां दुख होय,

नगर ढिंढोरी पीटती प्रीत न करियो कोय

3. **चाँचर (दीपचन्दी)**

यह 14 मात्रा की ताल में प्रथम व तृतीय विभाग में तीन-तीन तथा द्वितीय तथा द्वितीय तथा चतुर्थ विभाग में चार-चार मात्राएँ हैं-

1. बागाँ में बाज्या जंगी ढ़ोल

सहराँ में नौबत बज रही जी

आयो म्हारी माँ को जाओ बीर

चँदड़ लयायो माँ को जायो बीर

2. कोई रोको तो सरी रै बीछू खा गयो

कोई दौड़ो तो सरी रै बीछू खा गयो

4. **खेमटा ताल**

यह 6 मात्रा की ताल है। इसमें 2 भाग हैं, प्रत्येक भाग में 3-3 मात्राएँ हैं, लोकगीतों में जब धीमी लय बजानी होती है तो अधिकतर दादरा बजाते और यदि जल्दी का काम हो तो, खेमटा काम में ली जाती है-

1. **म्हारे बावल घर यज्ञ हुयो छे**

तो आप पधारो जट्टाधारी

महादेव जी ने पार्वती लागे प्यारी

2. **हो मने पीहरियो आछो घणो लागे**

मैं नहीं जाऊं सासरिये

अत: निष्कर्ष: कहा जा सकता है आदिवासी मीणों के गीतों में तीन या चार स्वरों का ही विशेष प्रयोग होता है। इनके गीतों में स्थायी भाग ही रहता है। अंतरे प्राय: नहीं होते अर्थात् सम्पूर्ण गीत एक ही शैली पूर्ण हो जाता है। इनका गीत गाने का तरीका प्राय: एक सा मिलता है। परन्तु आदिवासी मीणों से इत्तर जाति के लोकगीतों में लम्बी धुनें भी मिलती हैं इनमें स्वर प्रस्तार अधिक है तथा गीतों के विभिन्न प्रकार मिलते हैं। इसी प्रकार मीणों के गीतों में लय भी प्राय: एक-सी मिलती है, जबकि जन साधारण के गीतों में लय की विभिन्नता मिलती है, विशेष तालों का प्रयोग मिलता है। इनके गीतों में 3 या 4 स्वरों का प्रयोग मिलता है। ये स्वर प्राय: ध, सा, रे, ग अथवा नि, सा, रे, म होते हैं। कभी-कभी ध, सा, रे, ग का प्रयोग भी मिलता है। जीवन का कोई भी प्रसंग हो, सांगीतिक दृष्टि से मीणों के गीतों में कोई हेर-फेर नहीं मिलता। अत: लोकगीत अपने नैसर्गिक स्वरूप में लोक के संस्कारों, विश्वासों, रीति-रिवाजों, जीवनानुभवों की सामूहिक संगीत अभिव्यक्ति है।

विषय वस्तु व प्रतीकों का चुनाव

राजस्थान का ढूंढाड़ प्रदेश प्राकृतिक रूप से बड़ा अनूठा प्रदेश है। अरावली पर्वतमाला इसके मध्य से गुजरी है। शुष्क परिवेश होने से यहाँ त्यौहार, मैलों के आयोजन कर जन-मानस अपना हर्षोल्लास प्रकट करता है ऐसे में स्थानीय संस्कृति प्राचीन परम्पराएँ और 101 लोकोत्सवों ही लोकगीतों के विषय बनते चलते जाते हैं। इसके साथ ही लोक संस्कृति और लोक जीवन की वल्लरी ग्रामीण धरती के ऊपर ही विकसित और पुष्पित हुई है। अत: लोक अंचल में मिलने वाले फल-फूल, पौधे, वनस्पति पशुओं और वृक्षों के नाम सहज मिलते हैं। ढूंढाड़ी लोकगीतों में वातावरण की प्रधानता अधिक होती है मीणा जनजाति कृषि पर आधारित श्रमिक जाति है जीवन का अधिकांश भाग प्रकृति, खेत-खलिहान और कुओं पर व्यतीत होता है इसलिए प्रकृति और श्रम से, मिट्टी और जल से, भाव और अभाव, हर्ष और विषाद से नैसर्गिकता और उन्माद से, सरलता और सहजता से सीधा और गहरा प्रत्यक्ष और अटूट रिश्ता है। यह रिश्ता ही इनके लोकगीतों में पूरे उन्माद, उमंग और स्वच्छन्द भावावेश के साथ व्यक्त होता है।

ढूंढाड़ी लोकगीतों में पोदीना पीपली नींबू, बैंगन, मतीरा, ऊँट, घोड़ा, कागला, सुआ, मैना, बिच्छू, बिछिया, बिजणी, बादल, मेघ, वर्षा, मोर आदि का खुब प्रयोग मिलता है ये सब प्रकृति और वातावरण से जुड़े हैं। उदाहरण के कुछ गीत प्रस्तुत हैं-

1. लूड़जा[1] रे हरिया पोदीना
   तने सिल्ला पर घुटाऊं रे हरिया पोदीना...
2. उड़-उड़ रे म्हारा काला रे कागला[2]
   जद म्हारा पिबजी[3] घर आवे.....[4]

जनजातीय में प्रेम-सम्बन्धों और नारी का वर्णन प्रतीकों, रूपकों या संकेतों में मिलता है परन्तु इनमें नग्नता नहीं रहा करती। ऐसे गीत गाँवों के अखाड़ों में भी अपना श्रृंगरिक सौन्दर्य बिखेरा करते हैं। इस प्रकार प्रकार के गीतों में उभरे शब्द चित्र इन लोगों के शब्द जाल भले ही जान पड़ते हों परन्तु रसिक हृदय उनका रसास्वादन किए बिना नहीं रह सकते। भिन्न-भिन्न रूप, रस, गंध, शब्द और स्पर्श के सौन्दर्यपूर्ण, फल-फूल, लता, लगा-गुल्म, पशु-पक्षी, कीट पतंग आदि इन गीतों के नामक-नायिकाओं के प्रतीक करते हैं, उदाहरण के लिए ऋतु से सम्बन्धित गीत प्रस्तुत हैं-

1. सावण[5] आवण[6] कै गया, कोल[7] कर गया अनेक।
   गिणता[8]-गिणता घिस गई मारी आँगलिया री रेख।।
2. सावण फेर[9] आवेला[10], चौमासौ फेर आवेला,
   गयो तो जोबन[11] फेर नहीं आवेला।'

---

[1] लुड़जा- झुक जा

[2] कागला- कौआ

[3] पिबजी- प्रियतम

[4] राजस्थानी गीतां रो गजरो किताब से लिपिबद्ध किया गया, पृष्ठ 144

[5] सावण- सावन

[6] आवण- आकर

[7] कोल- वचन

[8] गिणता- गिनते हुए

[9] फेर- फिर

[10] आवेला- आएगा

[11] जोबन- यौवन

3. भादूबंरखा[1] झुक रही, रही घटा नभ जोर,

चम-चम चमकै बीजड़ी[2], टप-टप बरसे मेंह[3]।

भर भांदू बिलखत तजी, भलो निभायो नेह[4]

जी सरदार चौमासे ने घर मत छोड़ो। मेरी ज्यान[5]

भावार्थ- विरहिषियों को सबसे दु:खुदाई वर्षा ऋतु लगती है एक तो प्रिय की याद में विरहिणी की अवस्था दयनीय है उस पर सुहावनी वर्षा ऋतु आकर विरह को और अधिक उद्दीप्त कर देती है वह कहती है। सावन आकर चला गया और प्रियतम इतने वचन करके गए थे फिर भी नहीं आए, यह तकते और दिन गिनते-गिनते मेरी अंगुलियों के रेखा ही घिस गई है सावन और चौमासा तो आते रहते हैं परन्तु यह जो यौवन है वो फिर नहीं आएगा। भावों (जुलाई-अगस्त का महीना) के कारण वर्षा होने को है घटा झा रही है। बिजली चमक रही है बूरे भावों में बिलखती रही ये कैसा प्यार निभाया इसलिए मेरे प्रियतम चौमासे में तो घर मत छोड़ा करो। वह उससे आग्रह करती है कि वह घर में ही उसके साथ रहे।

इसी प्रकार ढूंढाही के क्षेत्रों में वहाँ के डूंगर (पहाड़) का उल्लेख विशेष रूप से मिलता है यथा-

जेठ[6] महीनो लाग्योजी

डूँगर[7] बोल्यो मोर, बागा[8] में बोली कोयली[9]

अब घर आवो म्हारा[10].....[11]

---

[1] भादू- महीना (जुलाई-अगस्त)

[2] बीजड़ी- बिजली

[3] मेंह- बारिश

[4] नेह- स्नेह

[5] ज्यान- जान

[6] जेठ- जुलाई महीना

[7] डूगंर- पहाड़

[8] बागां- बाग

[9] कोयली- कोयल

[10] म्हांरा- मेरे

[11] राजस्थानी गीतां रो गजरो पुस्तक से लिपिबद्ध किया गया, पृष्ठ 16

सामान्यत: लोक साहित्य का सम्बन्ध साधारण अनपढ़ लोकजीवन से होता है जो प्राय: लिखित ही रहता है। गीतों, पंक्तियों, मुहावरों कथाओं के रूप में वह एक कण्ठ से दूसरे कण्ठ तक संक्रमित होता रहता है। पुरानी पीढ़ी के दिक्थ के रूप में कह नई पीढ़ी के जीवनानुभवों में संचित और सुरक्षित होता है। यह लोक गीत अपने इसी असंलक्ष्य क्रम युगानुरूप परिवर्तन और परिवर्द्धन भी करता चलता है। शहरों व नगरों का प्रभाव प्राय: ग्रामीण अंचल की सांस्कृतिक जीवन में एक नई प्रवृत्ति उभरी है इसमें भी लोकगीतों की विषय वस्तु व प्रतिक चिन्हों में परिवर्तन हुआ है जहाँ पहले लोकगीतों में विषय वस्तु व प्रतीक चिन्ह वातावरण, प्रकृति से सम्बन्धित होते वही आज के लोकगीतों में आधुनिक विषयों वस्तु पर आधारित हो रहे है। जिस प्रकार जीवन की नवीनता नष्ट नहीं होती उसी प्रकार हम केवल उसी गीत संपदा से संतुष्ट नहीं है। उनमें परिवर्तन के साथ नया इतिहास बनता चलता है, उसी प्रकार लोकगीतों में करूणा, प्रणय, शौर्य आदि के नये प्रसंग और नयी घटनाएँ सामने आती हैं तो इस प्रकार का बदलता हुआ सामाजिक इतिहास अवश्य ही नये लोकगीतों के सृजन के लिए उपर्युक्त सामग्री प्रस्तुत करता है, आजकल कई नए-नए विषयों पर लोकगीतों के लिए सामग्री प्राप्त हो सकती है जैसे फैशन, कम्प्यूटर, मोबाइल, आधुनिक शिक्षा, परिवार नियोजन, स्त्री दशा, अराजकता, बेरोजगारी, दहेज प्रथा आदि विषयों पर लोकगीत लिखे जाने की शुरूआत हो रही है परन्तु ढूंढाड़ में अभी धार्मिक कथाओं, प्रसंगों को लेकर ज्यादा रूचि दिखाते है यदि लोकगायक गायिकाएँ इन विषयों पर आधारित लेकगीतों को तैयार करें तो अवश्य ही वहाँ की जनमानस उससे प्रभावित होगी। समय-समय पर ढूंढाड़ में दांगलिक कार्यक्रम होते रहने चाहिए जिससे सांस्कृति धरोहर का संरक्षण भी होगा और साथ आधुनिक को विकसित हो सके। अत: हम कह सकते है कि भारतीय लोक जीवन की विषयवस्तु तथा लोक साहित्य में संगीत को अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रहा है और आगे भी हमेशा रहेगा।

तृतीय अध्याय

ढूंढाड़ी लोकगीतों में स्त्री की छवियाँ

तृतीय अध्याय

ढूंढाड़ी लोकगीतों में स्त्री की छवियाँ

अगर किसी काल खण्ड के इतिहास को भली-भाँति समझना हो तो उस काल के लोकगीतों को अवश्य देखना चाहिए। लोकगीत देशी संस्कृति के इतिहास की भूमिका का निर्वाह करते हैं। इनमें लोक अर्थात् लोकजीवन का प्रतिबिम्ब देखा जा सकता है। आधुनिक सभ्यता से हटकर प्रकृति के खुले परिवेश में रहने वाले आमजन को लोक कहा जाता और आम जन का साहित्य ही लोक साहित्य है, जिसके सर्वाधिक महत्वपूर्ण भाग को लोकगीतों के रूप में चिन्हित किया है, हर्ष, विषाद, सुख-दुख, परम्परागत सामाजिक जीवन, जीवन की त्रासदी और अपने समय की व्यवस्था के कर्णधारों के अन्याय को सांस्कृतिक प्रतिरोध सभी कुछ लोकगीतों में में दृष्टिगत होता है। अनपढ़ आदिवासी, किसान, मजदूर, दलित आदि का संवेदनापूर्ण जीवन लोकगीतों में समाया रहता है। स्त्रियाँ तो लोकगीतों की केन्द्रीय भूमिका में होती है। इसलिए यहाँ ढूंढाड़ी समाज की स्त्रियों की दशा स्थिति को जानने के लिए लोकगीतों का अध्ययन अत्यंत जरूरी हो जाता है क्योंकि स्त्री का असंतोष, प्रतिरोध, दुख, पीड़ा आदिवासी लोकगीतों में भरी पड़ी है। माँ-बाप का बेटा-बेटी को लेकर भेदभाव या दोमुँहा सोच, ससुराल का अन्याय, स्त्री के बारे में सामाजिक कर्णधारों की सोच सभी कुछ हमारे लोकगीतों में पाया जाता है।

स्त्री बिना समाज की कल्पना ही नहीं की जा सकती और समाज के आधार स्तंभ परिवार का निर्माण करने वाली सी अथाह परिश्रम से घर को सुचारू रूप से संचालित करती है चाहे वह उसका पीहर हो या ससुराल दोनों जगह की जिम्मेदारी बखूबी निभाती है। वह एक बेटी, बहन, पत्नी, प्रियतम, माता के संबोधन से जानी जाने लगती है। परिवार के केन्द्र में स्त्री है और वहाँ उसकी छवि कैसी है, यह जानना दिलचस्प होगा। लोकगीतों के माध्यम से यह जानना भी महत्वपूर्ण होगा कि परिवार के बाहर वृहत्तर समाज में स्त्री की कैसी छवि निर्मित हो रही है? इसलिए यहाँ हम यह देखेंगे कि स्त्री को परिवार की स्त्री और वृहत्तर समाज की स्त्री मे किस प्रकार भिन्नता पाई जाती है।

(क)परिवार में स्त्री की छवि

ढूंढाड़ी आदिवासी समाज में पितृसत्ता व्यवस्था के चलते नारी सामाजिक राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक परिवेश में पुरुषों द्वारा तय किए गए मापदण्डों के अनुसार जीवन जीने को विवश होती है। कन्यादान वाली संस्कृति में

पली लड़की को 'पराया धन' कह कर पाला-पोसा जाता है उन्हें इस बात का एहसास तब तक रहता है जब तक कि वे विवाह के बंधन में बंध नहीं जाती है तथा अपने घर और परिवार को छोड़ कर जाने की पीड़ा उसके मन में हमेशा बनी रहती है बेटी की यही पीड़ा इस लोकगीत में उभर आया है:

उड़ जाँऊ ओरी[1] पांख[2] लगाय,

चली जाऊंगी री माँ पाँख लगाय,

थोड़ा सा दणा[3] री पावणियां[4]॥

म्हारा बाबुल गढावे[5] सोना सांकल्या[6] (जंझीर),

म्हारी जीजी हो राज, मूडे तो बोल।

अम्बर जैसी कोयलड़ी[7]॥

म्हारी काका जी गढावे, सोना बोरलो[8],

म्हारी काक्या हो राज, मूडे तो बोल,

म्हे परदेशी चिडकल्या॥[9]

म्हारी बीराजी[10] गढावै सीताराणी,[11]

म्हारी भौजायां[12] हो राज, मूडें तो बोल,

अम्बर जैसी कोयलड़ी॥

---

[1] ओरी- माँ

[2] पांख- पंख

[3] दणा- दिनो

[4] पावणियां- मेहमान

[5] गढावे- बनाना

[6] सांकल्यां- गले की झंझीर

[7] कोयलड़ी-कोयल

[8] बोरलो- मांग टीका

[9] चिड़कल्यां- चिड़िया

[10] बीराजी- भाई

[11] सीताराणी- सीतारानी हार

[12] भौजायां- भाभी

म्हारा पड़ौसी घडावे[1] जेवर

म्हारी पाड़ौसन हो राज, मूडे[2] तो बोल

म्हें परदेशी चिडकल्यां।।.....[3]

इस लोक गीत में बालिका अपनी माँ, चाची, भाभी, और पड़ोसनों से कहती है कि वे मुझसे ईर्ष्या क्यों करते हैं यदि मेरे बाबा, चाचा, भाई और पड़ोसी मेरे विवाह के लिए सोने की जंझीर (चेन), मांग टीका, सीतारानी हार बनवा रहे हैं तो। मैं तो एक चिड़ियाँ के समान हूँ थोड़े दिनों की मेहमान हूँ पंख लगाकर कब उड़ जाऊँगी और कब कोयल बन कर दूर अम्बर में खो जाऊँगी मुझे भी नहीं पता।

ढूंढाड़ी समाज में दहेज प्रथा होने की वजह से बेटियाँ जन्म से ही बोझ लगने लगती है क्योंकि उन्हें उसके विवाह पर मोटा दहेज देकर विदा करना होगा ऐसे में माँ भी कई बार उसे ताने व ईष्या के साथ बेटा-बेटी में फर्क करती दिख जाती है, फिर भी उसे अपने बेटी के घर छोड़ने का बहुत दुख होता है आखिर वह भी तो उसके गर्भ से जन्मी है साथ ही पाल-पोसकर भी बड़ा किया है। अपनी पुत्री को विदा करते हुए माँ तथा अन्य संबंधी स्त्रियाँ निम्र मार्मिक एवं हृदय विदारक गीत गाती हैं-

वन की ए कोयल

वन छोड़ चाली रे

थारे[4] वास्ते बाग लगाये ए बनड़ी[5]

थारे बिन कुण[6] सीचेगो[7] ए बनड़ी

---

[1] घडावे- बनवाना

[2] मूडे- मुँह

[3] राजस्थानी गीतां रो गजरो पुस्तक से संकलित, पृष्ठ 67

[4] भाटेन तेरे

[5] बनड़ी- दुल्हन

[6] कुण- कौन

[7] सींचेगो- सींचना

म्हारी हरिया बाग की कोयलड़ी[1]

वन को छोड़ चली रे।।.....[2]

ढूंढाड़ के आदिवासी क्षेत्रों में कन्या भ्रूण हत्या जैसी समस्या भी अत्यधिक देखने को मिलती है। इसका मूल कारण यहाँ पर व्याप्त दहेज प्रथा की समस्या ही है क्योंकि जितनी अधिक परिवार में बेटियाँ होंगी उतना ही ज्यादा उनके लिए दहेज की समस्या आगे आएगी; ऐसे में वह कन्या भ्रूण हत्या को गलत नहीं समझते है आज यह समस्या इतनी बढ़ गई है कि इस पर सरकार को रोक लगाने के लिए पहल करने की आवश्यकता है यहाँ के लोकगीतों में कन्य भ्रूण हत्या, दहेज, समस्त व स्त्री शिक्षा के के विषय भी लोकगीतों का आधार बनने लगे हैं:-

आ. आ... आरे... रे... समय बिगड़गो भायेला,[3] जमानो भारो घाती[4] रे..

अब देख समय बिगड़गो भायेला, जमानो[5] भारो[6] पापी रे.....

ओ... रे... बेटी पेट में मरवाबे[7], बाबुल खोटो रे...

आ... रे... समय बिगड़गो भायेला, जमानो भारो घाती रे....

बेटी पेट में मरवाबे, जमानो भारो पापी रे।

हाय शर्म नहीं बाबुल तोरे, कौ[8] डरपयो[9] बदनामी सूँ[10]

अब देख समय बिगड़गो भायेला, जमानो भारी घाती रे

दुनिया जात भार कर देगी, हुक्का-पाणी[11] सूँ

---

[1] कोयलड़ी- कोयल

[2] गायिका केशंती मीणा, उम्र 35, सवाईमाधोपुर से सुनकर लिपिबद्ध किया गया।

[3] भायेला- दोस्त

[4] घाती- घात करने वाला

[5] जमानो- जमाना

[6] भारो- बहुत

[7] मरवाबे- मरवाना

[8] कौ- नहीं

[9] डरपयो- डर

[10] सूँ- से

[11] पाणी- पानी

आ आ समय बिगड़गो.....

आ.... रे... मत मरवाओ बेटी ने करो मत खोटी[1] करनी रे-रे

मईयाँ बापन को पाड़ेगी[2], पाछै[3] धरणी रे....

यहाँ गायिका कहती है कि दोस्तों समय कितना खराब आ गया है और कितना पापी हो गया है कि वह पेट में यदि भ्रूण कन्या है तो उसे मरवा दिया जाता है यहाँ इस गीत में पिता से बेटी ही कह रही है कि तुझे बदनामी का बिल्कुल भी डर नहीं और न ही कोई शर्म है इसलिए या तो तु मान जान नहीं तो समाज तुझे जात बाहर कर देगा। ऐसा गलत काम बिल्कुल भी मत करो एक दिन ये धरती समान बिटियाँ ही तुम माँ-बाप को धरती बनकर पालेगी। अत: तु मुझे मत मार।

प्राचीन काल से ढूंढाड़ के आदिवासी क्षेत्रों में बाल-विवाह की प्रथा चली आ रही है जिससे इसके दृष्टपरिणाम समाज भोगता आ रहा है अत: मीणा समाज का सम्पूर्ण विकास के लिए बाल-विवाह की इस कुप्रथा को खत्म करना अनिवार्य है। यहाँ के लोकगायक व गायिकाएँ इस प्रथा को गलत मानकर लोकगीतों के माध्यम से समाज के ऐसे लोगों का मार्गदर्शन देने का प्रत्यन कर रहे है।

पहला पढ़ा-लिखार[4], करदयो[5] पगा[6] पै[7] खड़ा।

म्हारा मन की बात बतारयो छूं[8], कौने माररयो एड़ा।[9]

खैबा[10] की कौ माने, दुनिया हैरी छ: गैली।

---

[1] खोटी करणी- गलत काम

[2] पाड़ेगी- पालेगी

[3] धरणी- धरती (स्त्री के लिए प्रतीक)

[4] पढ़ा-लिखार- पढ़ा-लिखा कर

[5] करद्यो- कर दो

[6] पगा- पैर

[7] पै- पर

[8] छूँ-हूँ

[9] एड़ा-मजाक

[10] खैबा- कहने की

मीणा मत परणाओ[1] छोरियाँ[2] नै, अठ्ठारह साल सूँ पहला,

अठ्ठारह साल सूँ पहला॥

बालकां का मथा माड़े[3], बोझ धरदे[4] छः।

पढ़बा लिखना की उम्र मै, दुनिया ब्याव[5] करदे[6] छः॥

दुनिया ब्याव करदे, सासरे[7] जावै

काची[8] उम्र में हैगी[9] रोगल[10], सुख चैन को पावै,

सुख चैन को पावै॥

बन्द करो दहेज, मीणा मत देवो गाड़ी

चोखी[11] लागै फैरा पे, अठारा[12] साल की लाड़ी

अठारा साल की लाड़ी॥.....[13]

यहाँ इस लोकगीत में यही कहा जा रहा है कि पहले बालिकाओं को पढ़ा-लिखाकर अपने पैरों पर खड़ा करो उसके बाद 18 की उम्र आने पर उनका विवाह करें। छोटी उम्र में विवाह करके उनके सिर पर बोझ रख दिया जाता है। छोटी उम्र में ससुराल की जिम्मेदारियाँ देखते-देखते उन्हें रोग लग जाते है ऐसे में बालिकाओं का सुख-चैन छिन जाता है। इसलिए बाल-विवाह, दहेज आदि को बंद करो और अठ्ठारह साल की होने पर ही बेटी का विवाह करो। तभी समाज का

---

[1] परणाओ- सौंपना

[2] माड़े- ऊपर

[3] धरदे- रखना

[4] ब्याह- विवाह

[5] छः - है

[6] सासरे- ससुराल

[7] कांची- छोटी (कच्ची)

[8] हैगी- होगी

[9] रोगल- रोगी

[10] चोखी- अच्छी

[11] अठारा- अठ्ठारह

[12] लाड़ी दुल्हन

[13] लखनबाई, उम्र 45, ग्राम दानारपुर से सुनकर लिपिबद्ध किया गया।

उद्धार हो पाएगा।

ढूंढाड़ के आदिवासी समाज के परिवारों में स्त्री को अपने विवाह और वर चयन से संबंधित निर्णय लेने की स्वतंत्रता नहीं होती। पितृसत्तात्मक व्यवस्था होने की वजह से सारे निर्णय परिवार के मुखिया द्वारा लिए जाते है। ऐसे में यहाँ कन्या के मन में जो वर को लेकर सपने व जिज्ञासाएँ होती है जिन्हें वह खुलकर अपने पिता या परिवार के समक्ष नहीं रख पाती ऐसे में अवसर मिलने पर वह लोकगीतों के माध्यम से अपनी इच्छा बयान करती है:

बागा बैठी बनड़ी[1], पान चाबै[2] फूल सूंघे

करै ये बाबा जी सूँ बीनती[3]

बाबाजी देश देता, परदेश दीज्यो[4]

म्हारी[5] जोड़ी रो वर हेर[6] जो॥

उसी के संग ब्याहजो[7] बाबा

जो कबूतर के जोड़े की तरह

रहवे हरदम साथ

म्हारी जोड़ी रो वर हेर जो बाबा॥.....[8]

यहाँ बेटी अपने पिता से यह विनती करती है कि मेरे लिए मेरे जैसा ही वर ढूंढना, चाहे क्यों न आपको मुझे परदेश या बहुत दूर क्यों न ब्याहना पड़े मेरा वर हमेशा कबूतर के जोड़े की तरह मेरे सुख-दुख में मेरे साथ रहे ऐसा ही वर खोजना।

ढूंढाड़ के क्षेत्रों में विवाह के अवसर पर तरह-तरह रीति-रिवाजों में तथा

---

[1] बनड़ी- दुल्हन

[2] चाबै- चबाना

[3] बीनती- विनती

[4] दीज्यो- देना

[5] म्हारी- मेरी

[6] हेर- ढूंढ

[7] ब्याहजो- ब्याहना

[8] रेखा मीणा, उम्र 26, ग्राम मांदल बामणवास से सुनकर लिपिबद्ध किया गया।

विवाह के दौरान फेरों की रस्म होती है। अग्नि को साक्षी मानकर बेटी को वर पक्ष को सौंपा जाता है और जो उपदेश वह अपने जन्म होने से लेकर शादी तक सुनती चली आती है उसे फेरों के दौरान लोकगीत के माध्यम से मंडप में स्त्रियाँ गाते हुए फेरे की रस्म पुरी करती हुई यह गीत गाती है:-

पहलो तो फेरो ए, लाडी[1], माई-बाबा री प्यारी।

दूजो तो फेरो ए लाडी, दादासा री प्यारी।

तीजो तो फेरो ए लाडी, काका री प्यारी।

चौथो तो फेरो ए लाडी, मामा री प्यारी।

पाँचवो तो फेरो ए लाडी, वीरा जी री प्यारी।

छठो तो फेरो ए लाडी, मावसा[2] री प्यारी।

सातवों तो फेरो ए लाडी, हुई री पराई।।

हिन्दू विवाह धर्म में अग्नि को साक्षी मानकर सप्तपदी की रस्म होती है फेरे लिए जाते है उक्त पक्तियाँ फेरों के समय स्त्रियाँ एक-एक पंक्ति एक-एक फेरे पर गायी जाती हैं। इस गीत से बेटी की छवि एक पत्नी बहू, भाभी की छवि में बदलती जाती है। और सातवे फेरे में वह पहुँचते पहुँचते अपने परिवार की पराई और अपने ससुराल की सदस्य बन जाती है। उसे अपना घर छोड़ एक नए घर में कर जाना होता है एक नए घर में, नए रिश्तों के बीच, जहाँ उसकी जिन्दगी बिल्कुल बदल जाती है जहाँ उसकी सखियाँ, मौज-मस्ती, खेल-खिलौने सब से उससे दूर हो जाते हैं। जब स्त्री बेटी से बहू या पत्नी के रूप में आती है तो उससे बहुत सी आशाएँ रखी जाती हैं, बहुत सी जिम्मेदारियाँ सौंपी जाती है ससुराल में आने पर एक सास बहू को एक अच्छी बहू या नार कैसी होती है, इसका सीख देते हुए, जिसे गीत गाती है इस गीत में यही दर्शाया गया है:-

---

[1] लाड़ी- दुल्हन

[2] मावसा- मौसा

कैसी रच दई[1] विधि ब्रहमा ने जग में चार तरह की नार[2]-नार

1. **शंकनी[3] रच दई, ढंकनी[4] रच दई, हंसनी[5] रची विचार... विचार**
   पद्मनी[6] के पदम पाव में सूरज के उड़ियार
   कैसी रच दई विधि ब्रहमा ने जग में चार तरह की नार...
2. **ढंकनी खून कसम को पीवै[7], दिन उठे करती राड़[8]**
   हंसणी तो हँस-हँस के बोले करे पति से प्यार
   कैसी रच दई विधि .....
3. **शंकनी अपनो रूप दिखावे खौले शीश का बाड़[9]**
   जेठ ससूर की लाज ना राखे डोले मोहंडो उघाड़[10]
   कैसी रच दई .....
4. **पद्मनी के पदम् पाव में सूरज के उड़ियार[11]**
   कहत कबीरा सूजो भाई साधू ये पति व्रता हूँ नारी
   कैसी रच दई .....[12]

इस गीत का भावार्थ यही है कि पत्नी के रूप में स्त्री से यही आशा की जाती है कि वह अपना पतिव्रता धर्म निभाए। इस गीत के माध्यम से यह भी पता चलता है कि पारंपरिक समाज में स्त्री चार रूपों या छवियों में पाई जाती हैं 'ढंकनी' जो हर समय सांप की तरह ढंक लगाकर खून यानि सुख-चैन छीन लेती है हर दिन सुबह उठ कर उसे लड़ाई झगड़े ही उसका काम होता है। दूसरी तरह की नार 'हँसणी' जो हमेशा अपने आस-पास हँसी-खुशी का माहौल रखती है।

---

[1] दई- दी

[2] नार- नारी

[3] शंकनी- शक करने वाली

[4] ढंकनी- ढंक लगाने

[5] हंसणी- हँसी- खुशी

[6] पद्मनी- सम्पूर्ण गुणों वाली अहिरा पत्नी

[7] पिवै- पीना

[8] राड़- झगड़ा

[9] बाड़ा- बाल

[10] मोहंडो- मुँह

[11] उघाड़- खोलकर

[12] पद्मावती मीणा, उम्र 26, ग्राम ब्रहमबाज से सुनकर लिपिब¼ किया है।

तीसरी 'शंकनी' जो नारी है उसके किसी तरह की कोई लाज-शर्म नहीं होती और वह अपने जेठ-जेठानी के समक्ष बिना घूँघट किए ही रहती है और चौथी तरह की नारी जो कि 'पद्मनी' कहलाती है मानो उसके पाँव में सूरज जैसा उजियारा हो, 'पद्मनी' नारी में वे सभी गुण होते है जो एक पतिव्रता कहलाने वाली नारी में होते है। वह अपने पति के चरणों में ही स्वर्ग समझती है। अत: इस लोकगीत में यह स्पष्ट पता चलता है कि स्त्री के चरित्र व व्यवहार को कैसे तौला जाता है और उसी के आधार पर उसकी छवि निर्धारित की जाती है। यदि वह इन मापदंडों से बाहर निकलती है तो समाज में उसकी छवि धूमिल होती जाती है।

ढूंढाड़ प्रदेश की उन आदिवासी स्त्रियों की दशा स्थिति अत्यंत गंभीर व दर्शनीय होती है जिनके पति परदेश या शहरों में आजीविका के साधन जुटाने के लिए निकले होते हैं क्योंकि ढूंढाड़ क्षेत्र कृषि आधारित प्रदेश है अत: यहाँ वर्षा आदि का अभाव है ऐसे में कृषि से वहाँ के आदिवासी अपनी जीविका नहीं चला पाते ऐसे में वे शहरों की तरफ पलायन कर जाते हैं, और उनकी स्त्रियाँ गाँव में ही रह कर घर, सास-ससुर व बच्चों की देखभाल करती है। सौभाग्यवती स्त्री का श्रृंगार पति ही माना जाता है। स्त्री की समस्त साज-सज्जा, उसके वस्त्र तथा आभूषण भी पति को रिझाने के लिए ही माने जाते हैं। पति अगर परदेश में हो तो पत्नी इस साज-सज्जा को व्यर्थ मानने लगे तो आश्चर्य नहीं, निम्नांकित लोकगीत द्रष्टव्य है:

केसरिया बालम आवो पधारो म्हारे[1] देश,

आवण[2] आवण कह गया और कर गया कोल[3] अनेक

गिणतां[4]-गिणतां घस गई म्हारी आंगलिया री रेख[5]

जो मैं ऐसो जाणती[6] प्रीत कियां[7] दुख होय

नगर ढ़िढोरी पीटती प्रीत न करियो कोय[8].....[9]

परदेश गये पति की एक खबर पाने के लिए कौवे को उड़ाकर व शगुन

---

[1] म्हारे- हमारे

[2] आवण- आँऊगा

[3] कोल- वचन

[4] गिणतां- गिनते

[5] रेख- रेखा

[6] जाणती- जानती

[7] कियां- कैसा

[8] कोम- कोई

[9] रवि प्रकाश नाम द्वारा संकलित राजस्थानी गीतां रो गजरा पुस्तक नाम से लिपिबद्ध की गई, पृष्ठ 73

बताकर नायिका उसे राजी करती है। वह आश्वासन देती है कि उसके प्रियतम के घर आने के बाद वह उसे खीर बूरा का जीमण देगी तथा आभूषण बनावाएगी देगी। 'पंक्षियों के माध्यम बनाकर न केवल भारतवर्ष अपितु विश्व के दूसरे देशें में भी गीत गाए जाते है।'[1] यह राजस्थान का अत्यंत लोकप्रियतम गीत में इसी प्रकार वह गीत भी ध्यान देने योग्य है:-

उड़ उड़ रे, उड़ उड़ रे, म्हारा[2] काला रे कागला[3]
कद[4] म्हारा पिउजी[5] घर आवे..... [6]
खीर खांड[7] रो जिमण[8] जिमाऊं,
सौना में चोंच मंढाऊ[9] म्हारा काग[10],
जद म्हारा पिउ जी घर आवे, उड़ उड़ रे...
पगल्या[11] में थारे बाँधू रे घूँगरा[12]
गले में हार पहराऊ[13] म्हारा काग,
जद म्हारा पिउजी घर आवे। उड़ उड़ रे...
आंगल्या[14] में थारे मूंदडी[15] करांऊ
चांदीरा[16] पांख[17] लगाऊ म्हारा काग

---

[1] डॉ. मदनलाल शर्मा- राजस्थानी लोकगीतों का सांस्कृतिक अध्ययन, पृष्ठ 105

[2] म्हारा- हमारा

[3] कागला- कौआ

[4] कद- कब

[5] पिउजी- पियार (प्रियतम)

[6] राजस्थानी गीतां रो गजरो से सुनकर लिपिबद्ध किया गया, पृष्ठ 64

[7] खांड- चीनी

[8] जिमण- भोजन

[9] मंढाऊ- बनवाना

[10] काग- कौआ

[11] पगल्यां- पैर

[12] घूँगरा- घूँघरू

[13] पहराऊ- पहनाऊ

[14] आगल्यां- अंगुलिय

[15] मूदंडी- अंगूठी

[16] चांदीरा- चांदी

[17] पांख- पंख

जद म्हारा पिउजी घर आवे

जो तू उड़ने, सौंण[1] बतावे

जलम-जलम[2] गुण गाऊ म्हारा काग

जद म्हारा पिउजी घर आवे।

नायिका कहती है ऐ काले कौवे, उड़ कर शगुन लेकर आ कि मेरे पति कब लौटेंगे? मेरे पति घर कब लौटेंगे? मेरे पति के घर लौटने के बाद तेरे लिए खीर का भोजन जिमवाऊंगी। सोने में तेरी चोंच मंडवा दूंगी, तेरे पैरों में घूंघरू बांधूगी, गले में हार पहराऊंगी, उंगलियों में अंगूठी तथा तुम्हारे पंख चांदी के करवा दूंगी। नायिका कहती है कि इसके अलावा मैं आजन्म तुम्हारी कृतज्ञ रहूँगी जिनके पति दीर्घ अवधि से परदेश में हो ऐसी महिलाएँ इस गीत में मर्म को भली प्रकार समझ सकती है, एक ऐसी ही विरहणी की व्यथा को व्यक्त करते हुए "डोला मारू" लोकगायक ने कहा है"- "बिजलियाँ नीलज्जियां और जलधर तुही लज्ज, सूनी सेज विदेश पिय, मधरे मधरे गज्ज।"[3] अत: प्रियतम साथ न हो तो सभी ऋतुएँ, त्यौहार, साज-सज्जा एक पत्नी को बेकार लगती है। अत: यहाँ की स्त्रियाँ पति या प्रियतम की विदाई को सोच कर ही डर जाती है। कुछ स्त्रियाँ ऐसे में अपने पति के साथ शहर चलने या वही शहर रहने के लिए विनती करती है। कई पुरूष अपनी स्त्रियों को साथ ले भी जाते हैं परन्तु कुछ पुरूष वहाँ आजीविका के साधन अच्छे न होने के वजह से चाहते हुए भी अपने साथ नहीं ले जा पाते। और कई पुरूष अपनी पत्नी को अपने साथ शहर ले जाने से इसलिए भी कतराते हैं क्योंकि वह अशिक्षित है और अशिक्षित होने की वजह से उन्हें झिझक महसूस होती है कि वे कैसे आधुनिक सोच वाले समाज से मेल खाएगी या नहीं ऐसे में वे उन्हें अपने साथ ले जाने के लिए बहानेबाजी लगाते है और ऐसे में इन स्त्रियों को अकेला ही ग्रामीण क्षेत्रों में रहना पड़ता है कई बार तो यहाँ के पुरूष शहरों में दूसरी शांदी तक कर लेते है ऐसे स्त्री का मर्म इस प्रस्तुत गीत में अभिव्यक्त हुआ है। विरहणी की पीड़ा व अकेलेपन और अवसाद का चित्रण देखा जा सकता है-

---

[1] सौंण- शगुन

[2] जलम-जलम- जन्म-जन्म

[3] डॉ. मदनलाल शर्मा- राजस्थानी लोकगीतों का सांस्कृतिक अध्ययन, पृष्ठ 105

नहायायी धोध्यायी कड़ा[1] खुलायायी

अब लेचाल[2] ड्यूटी पे डीयो डीयो अब लेचाल ड्यूटी पे

अब लेचाल ड्यूटी पे... अब लेचाल ड्यूटी पे...

पून्यू[3] में मत चाल म्हारी[4] सजना, पून्यू में पूरो चाँद

पिड़वा[5] में मत चाल जो म्हारी सजना, पिड़वा में छः पिड् दोष[6]

दोज[7] में मै कईयाँ ले चालू म्हारी सजना, दोज में दोनो दिण।

तीज में कौ ले चालूयूँ म्हारी सजना, तीज में तीनो लोक।

डीयो डीयो नहायायी धोध्यायी... ड्यूटी पे

अब ले चाल ड्यूटी पे.....

चौथे[8] में मत चाले म्हारी सजना, चौथे में चारू[9] वेद।

पाँचे[10] में भी मैं कईयाँ ले चालूँ, पाँचे में पाँचू[11] पांडव हुए।

और छठे में भी कईयाँ चालेगी, छटे में छटे नारायण।

साते मे मत चाल जो म्हारी सजना, सात में सात समंद्र।[12]

छोरा रे...

लारा[13] कि ने लारा-लारा कड़ा खुलाया, लारा कि ने ले गयो लारे...

---

[1] कड़ा- ढूंढाड़ क्षेत्र में पैरो में पहने जाने वाला आभूषण

[2] लेचाल- ले चल

[3] पून्यू- पूर्णिमा

[4] पिड़वा- पूर्णिमा के अगला दिन

[5] पिंड दोष- पिण्ड दोष

[6] दोज- द्वितीया

[7] कईयॉ- कैसे

[8] तीज- तृतीया

[9] चौथ- चतुर्थी

[10] चारू- चारों

[11] पॉचे- पंचमी

[12] साँचू- पाँचो

[13] समंद्र- समुद्र

थारे तो गौड़ा[1] रहूँगी जीव के तड़े[2]

नहायायी धोध्यायी..... ड्यूटी पे

आठे मत चालजो, आठे में आठ कुड़ी[3] और नौ नाग।

नौवमी में कौ लेचालागूँ, नौमी मे री नौ नाग।

दसे मे कईयॉ ले चालूँ, दसे मे दस अवतार।

छोरा रे... खे तो लारे ले चल, खे थारी[4] नौकरी छोड़ा।

फिर काई कौ बिनती[5] ना करूँगी, दोबारा परणा[6] के गौड़ा।

ग्यारीस में भी कौ ले चालूँ, ग्यरीस में ग्यारे रूद्र हुए ए।

बारस मे तो कईया चालेगी, बारस मे बारा रास

तेरस में तो कईयॉ चालेगी, तेरस में तेरहा राणी उसका शिव पे घेर।

चौदस में.मत चाले बावड़ी[7], चौदस मे चौदा चक्कर

छोरी रो रहगी रे, आखा तीज[8] के मोड़े[9]...

बैठी-बैठी दुब[10] खोदे, खेत के ढोड़े[11]

नहायायी धयोयायी.....

---

[1] लारा- साथ

[2] गौड़ा- साथ

[3] तड़े- नीचे

[4] कुडी-

[5] थारी- तेरी

[6] परणा- पिया (पति)

[7] बिणति- विनति

[8] ग्यारीस- एकादशी

[9] ग्यारे- ग्यारह

[10] रूद्र- रूद्र अवतार

[11] बावड़ी- पगली

मावस[1] में भी अब कियाँ चालेगी, मावस खुद कुवाँरी

केहत कबीर सुनो भाई साधु, लो दुनिया तो पच-पच[2] मरगी

तू छोरी एकेली[3] रहेगी आखा तीज के मोड़े

नहायायी धयोयायी.....[4]

यहाँ इस लोकगीत का भावार्थ यही है कि यहाँ पत्नी ने अपने पति के साथ चलने के लिए सभी सांस्कृतिक चिह्न पहनावा, आभूषण सब छोड़ दिए जिनसे वह अपने पति को गंवार लगती थी असभ्य लगती थी। यहाँ पत्नी अपने आप को आधुनिक छवि में बदल लिया है और वह विनति कर रही कि वह उसे अपने साथ ले चले परन्तु इसके बावजूद भी पति को लगता है अभी भी तथाकथित सभ्य कहे जाने वाले शहर में इस गंवार, अनपढ़ को नहीं ले जाया जा सकता इसलिए वह हर दिन कोई न कोई बहाना बना रहा है। एक जगह तो पत्नी इतनी भावुक हो जाती है कि कह देती है कि या तो मुझे ले चल या अपनी नौकरी को छोड़ कर आ जा। अब वह बिल्कुल भी इस पीड़ा की चरम सीमा तक पहुँच गई है सो गीत के जरिए ही अपनी पीड़ा का बखान कर रही है।

(ख)परिवार के बाहर वृहत्तर आधुनिक समाज में स्त्री छवि

स्त्री को आत्मनिर्भर बनने के लिए घर की दहलीज से बाहर जाना ही पड़ता है। स्त्री जब घर के बाहर कदम रखती है तो उसकी समस्याएँ अलग प्रकार ही हो जाती है और उसे पुरुषों के संपर्क में आना ही पड़ता है। पुरुषों में समूह में कामकाजी स्त्रियों को सामंजस्य स्थापित करने में काफी मुश्किले पेश आती है। स्त्रियों को पदोन्नति या विशेष सुविधाएँ प्राप्त करने हेतु अपने तन को सीढ़ी बनाना पड़ता है स्त्रियों के साथ भेदभाव की ये घटनाएँ संभ्रांत, शिक्षित, एवं उच्च वर्गो तक समान रूप से प्रचलित है शहरी परिवेश में जी रही महिलाओं की अपेक्षा ग्रामीण परिवेश में रहने वाली स्त्रियाँ अधिक शोषित है। ये स्त्रियाँ भूपतियों के फार्मों पर निशुल्क कार्य करने को बाध्य थीं। अपनी आठ से दस घंटे की कड़ी

---

[1] तीज- तृतीया

[2] मोडे- चक्कर

[3] दूब- घास

[4] गायक विष्णु मीणा व साथी, मेहर कैसेट्स से सुनकर लिपिबद्ध किया गया।

मेहनत के बाद केवल चूल्हों के लिए ईंधन अथवा अपने मवेशियों के लिए चारा ले पाती थी, इसके अलावा कुछ नहीं। महिलाएँ अपने साथ किए जा रहे आर्थिक शोषण के विरुद्ध इस प्रकार आवाज भी नहीं उठा पाती थी, जिस प्रकार पुरुष वर्ग संगठित होकर मैदान में आ जाते हैं। जबकि अधिकतर महिला श्रमिक संगठित रूप से मैदान में नहीं उतर पाती है। अत: स्त्री शोषित होती चली जाती है स्त्री एवं पुरुषों के बीच इस अन्तर के मुख्य कारण साक्षरता, शिक्षा, रहन-सहन, खान-पान और चिकित्सा सेवाएँ आदि है। अत: इन सब आधारभूत आवश्यकताओं को लेकर स्त्री-पुरुष के बीच जो खाई व्याप्त है उसे खत्म करना होगा। शिक्षा, धर्म, राजनीति, साहित्य कला सभी क्षेत्रों में स्त्रियों की जनसंख्या पुरुषों की तुलना में कम है। महिलाओं के प्रति वैश्विक स्तर पर होने वाली हिंसा के कारण उन्हें आत्मिक व शारीरिक स्तर पर जो आघात पहुँचता उसे आंका नहीं जा सकता। स्त्री यदि तथाकथित संबंधों (पत्नी, माता, पुत्री, बहन) के अलावा अपनी अलग छवि विकसित करती है। तो उसके ऊपर कलंकिनी, कुल्टा जैसे नामों से अभिव्यक्त कर उसे समाज से अलग कर दिया जाता है, तब वह वेश्या समझी जाती है। यहाँ भी पैतृक समाज में स्त्रियों के लिए अनेक नाम बना दिए गए है लेकिन पुरुषों द्वारा किए कुकत्यों के बावजूद भी उनके लिए कोई विशेष नाम नहीं है।

अतएव परिवार, परिवार से बाहर व समाज में स्त्री के प्रति न्यायपूर्ण व्यवस्था को कायम करने हेतु सामाजिक एवं पारिवारिक नजरिए में बदलाव अवश्यभावी है। जगह तो पत्नी इतनी भावुक हो जाती है कि कह देती है कि या तो मुझे ले चल या अपनी नौकरी को छोड़ कर आ जा। अब वह बिल्कुल भी इस पीड़ा की चरम सीमा तक पहुँच गई है सो गीत के जरिए ही अपनी पीड़ा का कट रही है।

मीणा जनजाति एक आदिम जनजाति है। इस वजह से आज भी वर्तमान में यहाँ कि जनजाति जल, जंगल, जमीन व संस्कृति से जुड़ी है चाहे वह शहरों में आजीविका कमाने के लिए क्यों रहने लगे हो, फिर भी मीणा समाज अपने विशेष रीति-रिवाज, संस्कृति, वेशभूषा को जीवंत रखे हुए है। ढूंढाड़ की पारंपरिक संस्कृति को बनाए रखने में ढूंढाड़ समाज की आधुनिक महिला भी भरपूर कोशिश कर रही है वह पर्व व उत्सवों में ढूंढाड़ प्रदेश के आभूषण व वेशभूषा को पहनना जरूरी समझती है। साथ ही ढूंढाड़ अचल में रहने वाली स्त्रियाँ भी अपनी सोच आधुनिक बनाकर समाज में कंधे से कंधा मिलाकर बढ़ रही है। ढूंढाड़ की जो भी

अशिक्षित स्त्रियाँ वह सरकार द्वारा चलाई गई शिक्षा संस्थानों में लिखना पढ़ना सीख रही है शिक्षा से उनके आत्मविश्वास का भाव जागृत हो रहा है इससे समाज में बदलाव आ रहा है नई सोच विकसित हो रही समाज में व्याप्त बुराईयों जैसे दहेज, भ्रूण हत्या, बाल-विवाह, नशाखोरी, नारी अत्याचार, समाज एकता महिला सशक्तिकरण, राजनीति में महिलाओं दिनाने से संबंधित विषयों पर पहल की जा रही है इससे ढूंढाड़ क्षेत्रों की स्त्रियों की दशा में सुधार आ रहा है। स्त्रियाँ स्वयं अपनी दशा में सुधार चाहती है वह शिक्षित होना चाहती हैं:

"नयो[1] बण्यो[2] इस्कूल[3]
जींको[4] सीदो[5] रसतो[6] (रास्ता)
पढ़वा[7] मैं भी चालूँ[8] सायब[9].....[10]

इस गीत का भावार्थ यह है कि अनपढ़ महिला जिसका छोटी उम्र में ही विवाह हो जाने की वजह से पढ़ नहीं पाई वह अपने पति से पढ़ने की इच्छा बताती और साथ-साथ स्कूल चलने के लिए कहती है। इसके साथ ही अगला गीत अनपढ़ स्त्री द्वारा जागृत पढ़ने की इच्छा को दर्शा रहा है:-

म्हारी सहेल्या रे साथ मैं तो पढ़लू भरतार,[11]
मैं तो पढ़लू भरतार अनपढ़ कौने[12] रहूँली[13] सा।
कक्को[14] भी सीखूली मैं तो गिणती[15] भी सीखूली

---

[1] बण्यो- बना
[2] नयो- नया
[3] बव्यो- बना
[4] इस्कूल- स्कूल
[5] जीको- जिसका
[6] सीदो- रास्ता
[7] पढ़वा- पढ़ने
[8] चालूँ- चलना
[9] सायब- साहब
[10] लाली मीणा, उम्र 28, गाम गांगड़दा से सुनकर लिपिबद्ध किया गया।
[11] भरतार- भगवान के समान
[12] कौने- नहीं
[13] रहूंली- रहूंगी
[14] कक्को- क, ख, व्यंजनो के लिए प्रयोग किया जाता है।
[15] गिणती- गिनती

सारो सीखूली हिसाब, अनपढ़ कौने रहूँली सा
पढ़बा को अभियान देखो चलाई सरकार देखो,
गांव में खोल्या आखरधाम[1], अनपढ़ कौने रहूंली सा।
म्हारी आड़ोसन[2] भी जाय म्हारी पाड़ोसन[3] भी जाय,
मुझसू रिहियो[4] कौने जाय, अनपढ़ कौने रहूंली सा।
म्हारी दोराणी[5] भी जाय म्हारी जेठाणी[6] भी जाय
संग में नणदलबाई[7] त्यार, अनपढ़ कौने रहूंली सा।
म्हारा फूलजी भरतार, उण्डै[8] कौने लागे दाम,
मिले पोथी[9] मुक्त मैं अनपढ़ कौने रहूंली सा।.....

इस लोकगीत में ज्ञात होता है कि स्त्री शिक्षा के महत्व को समझती है और वह शिक्षित होना चाहती है वह अपने पति को बताती है कि स्त्रियों को पढ़ने के लिए सरकार ने सारी व्यवस्था मुफ्त रखी है। समाज में स्त्रियों की स्थिति में उभार लाने के लिए आज कल के गायक-गायिकाएँ भी अहम् भूमिका निभा रहे है। वह अपने गायन को विषय-वस्तु इस प्रकार तैयार कर रहे जिससे कि जनमानस की सोच में बदलाव आ सके, साथ ही स्त्रियों को भी सरकार द्वारा की गई पहल, जिनसे उनका सुधार हो सकता उनकी जानकारी महिलाओं को लोक-गीतों के माध्यम से देने का प्रयास किया जा रहा है। ऊपर दिए गए लोकगीत 'आखरधाम' संस्था की जानकारी दी जिससे अधिक-से अधिक अशिक्षित महिलाएँ शिक्षित हो सकें और अपने अधिकारों व कर्तव्यों को समझ सके। जिससे ढूंढाड़ी समाज की सतत् सांस्कृतिक इसी प्रकार फलती-फूलती रहे।

ढूंढाड़ के आधुनिक समाज में महिला सशक्तिकरण को प्रोत्साहन मिलने से

---

[1] आखरधाम- सरकार द्वारा महिलाओं के खोले गए स्कूल

[2] आड़ोसन- पाड़ोसन- अड़ोसी-पड़ोसी

[3] रिहियो- नहीं रहा जाए

[4] दोराणी- देवरानी

[5] जेठाणी- जेठानी

[6] नणदल- ननद

[7] उण्डै- उधर

[8] पोथी- कागज, कलम

[9] गायक रामफूल मीणा द्वारा लिपिबद्ध किया गया।

यहाँ कि राजनीतिक व्यवस्था में स्त्रियों की भागीदारी भी बड़ी है स्त्रियाँ अब चुनावों में नामांकन भर तथा ढूंढाड़ के कई क्षेत्रों में सरपंच पदों पर ज्यादातर स्त्रियाँ ही आसीन है। ढूंढाड़ क्षेत्र में सर्वप्रथम महिला सांसद के रूप में आदिवासी जनजाति समाज की उषा मीणा छंदन लाल मीणा प्रथम सांसद के रूप में लोकसभा व राज्य सभा तक पहुँची, तथा ये वह प्रथम महिला थी जो मीणा समाज से लोकसभा की सांसद बनी।[1]

आजकल राजनीति में वसुन्धरा, गोलमा देवी (श्री करोड़ी लाल मीणा की पत्नी) जैसी कई उदाहरण हैं जो ढूंढाड़ की स्त्रियों के प्रेरणा स्रोत है। जबकि श्रीमति गोलमा देवी तो उनकी आदर्श मानी जाती है, वो एक अनपढ़ महिला गोलमा जी राजस्थानी पहनावा पहन कर राजनीतिक गतिविधियों को बखूबी निभाया इन्होंने राजस्थानी पहनावे को सम्पूर्ण विश्व में सांस्कृतिक पहचान दिलाई इन्हीं की वजह से पढ़ी-लिखी स्त्रियाँ आज राजस्थानी लहंगा-लुगड़ी (चुनरी) को गर्व के साथ पहनना पसंद करने लगी हैं। गोलमा जी ने मंत्रीपद की पीली चुनरी धारण करके मंत्रीपद की शपथ ग्रहण की थी तभी से पीली लुगड़ी उनकी पहचान बन गई है पीली लुगड़ी (चुनरी) को लेकर कई लोकगीत तैयार किए जाए जिसमें "मेहर कैसेट्स" के लोकगीत राजस्थान में काफी प्रचलित हुए। पर इसके अलावा गोलमा जी और श्री किरोड़ी लाल मीणा जी पर कई कैसेट्स कंपनियों ने लोकगीत तैयार किए। राजस्थान के विधान सभा चुनाव 2008 में निर्दलीय चुनाव जीतकर भारत वर्ष में ऐसा विधायक बनने का अनूठा रिकार्ड बनाया। उनकी जीत पर कई लोक गायकों ने लोकगीत प्रस्तुत किए:-

राजी बोल्याँ[2] जा रै राजन्ती

आगो राज गोलमा को

राजी रह रै बावड़ी[3] छः रै गोलमा को राज

पढ़ी लिखी छः री बावड़ी, ठाली[4] करे[5] छः लाज[6]॥

---

[1] डॉ. शकुन्तला मीणा, मीणा जाति का उत्कर्ष, पृष्ठ 132,

[2] राजी बोल्याँ- जय बोल

[3] बावड़ी- पगली

[4] ठाली- बेकार

[5] बलाज- घूँघट

[6] कतणी- कैंची

तौने हद कर दी महुवा मै,

अरी भई गोलमा काकी

महुवै गोलमा काका नै,

काटी डोर कतणी[1] सूँ

थारै लैर[2] की डोकरयां तो फेरै घर मै चाकी

खूब जीतगी महुवा सूँ तू वाह रै गोलमा काकी

दोन्यूं[3] जणां[4] नै जोड़ा मै,

एक रिकाट[5] तोड्यो छः

काकी देगी रै असतिपो[6]

घुसगो शेर तबारी[7] मै।

पीड़ी[8] लुगड़ी[9] अम्बर बेल सी छागी

अनपढ़ गोलमा मंत्री बणगी.....[10]

भावार्थ यह है कि आदिवासी पुरुष अपनी पत्नी को कह रहा है कि राजन्ती अब तो प्रसन्न हो जा क्योंकि सत्ता अब तो "गोलमा" यानि सत्ता स्त्री के हाथ में आ गई। यहाँ आदिवासी अपनी पत्नी को कहता कि एक अनपढ़ चुनाव जीत ली है और तू है कि पढ़ी-लिखी होकर भी घूंघट नहीं छोड़ रही है, 'गोलमा काकी'

---

[1] लैर- साथ की

[2] डोकरयां- बुढ़िया

[3] दोन्यू- दोनों

[4] जणां- जन

[5] रिकाट- रिकार्ड

[6] असतिपो- असतीफा

[7] तबारी- बीच चौक में बनी घास-फूँस की बैठक

[8] पीड़ी- पीली

[9] लुगड़ी- चुनरी

[10] गायक: विष्णु मीणा, मेहर कैसेट्स से सुनकर लिपिबद्ध किया गया।

साथ की अन्य बुढ़िया अभी तक चौकी चूल्हे में ही लगी हुई और वह अपने चुनाव चिह्न कतरणी (कैंची) रखते हुए महुआ सामान्य विधान सभा क्षेत्र से निर्दलीय चुनाव जीत कर मिशाल कायम की है। 'गोलमा काकी' ही नहीं उनके पति डॉ. करोड़ी लाल ने भी साथ-साथ निर्दलीय चुनाव जीता और दोनों ने मिलकर अनूठा रिकार्ड बनाया। इसके साथ ही बताया है कि गोलमा जी के किरोड़ी से अच्छे राजनीतिक निर्णय लेकर दिखाए और जिस प्रकार अमर बेल पूरे पेड़ पर छा जाती है उसी प्रकार गोलमा जी भी पूरे आदिवासी समाज में छा गई हैं।

अत: यहाँ आधुनिक समाज के आदिवासी के बदलाव आसानी से देख सकते है राजनीति का प्रभाव समाज में पड़ रहा, श्रीमति गोलमा देवी के जीतने से स्त्री की छवि उभर कर आई अनपढ़ गोलमा जी पढ़ी-लिखी स्त्रियों की आदर्श बन गई उन्हें भी उत्साह और मार्गदर्शन मिला है कि जब एक अनपढ़ यहाँ तक तो पहुँच सकती है तो वे क्यों नहीं कोशिश करती अत: वे अन्य क्षेत्रों के साथ-साथ उस क्षेत्र में भी योगदान दें। और पहले के मुकाबले स्त्रियों की राजनीति में भागीदारी देखी जा रही है चाहे वह अपने वोट के अधिकार को लेकर हो या स्वयं चुनावों के नामांकन भरने को लेकर। मीणा आदिवासी स्त्रियों ने इसे लोकगीत के जरिए बहुत अच्छे से प्रकट किया है।

"वोट देबा[1] चालेंगा[2]

जोड़ा सूँ[3] जूतंया[4] खोलेगा..."

अंत में हम कह सकते है चाहे परिवार में हो या समाज में स्त्री की दशा स्थिति कमजोर है परन्तु फिर भी वह परिवार से लेकर समाज में अपने आप को स्थापित कर रही तथा समाज के सभी कार्यों व गतिविधियों में क्रियाशीलता के साथ आगे बढ़ रही है। और उसमें अहम् भूमिका शिक्षा की रही है जिसने उसमें आत्मविश्वास जाग्रत हमा है उसकी सोच विकसित हुई है इसलिए सामाजिक बुराइयों व स्त्री की दशा स्थिति को ठीक करने पर लिए स्त्री शिक्षा का विकास

---

[1] देबा- देने

[2] चालेगा- चलेंगे

[3] सूँ- से

[4] जूतंया- जूतियॉ (जोड़े का प्रतीक)

का होना बहुत जरूरी है। अतः ढूंढाड़ी आदिवासी समाज की स्त्री परिवार व समाज में अपनी आत्मविश्वासी, कर्मगठ, उत्साही व दृढ़संकल्पन, बुद्धिजीवी छवि बनाने में अग्रसर है और सफल भी हो रही है।

(ग) ढूंढाड़ की पौराणिक लोकगीतों में पारिवारिक स्त्री की छवि

लोककथाएँ समाज में महत्वपूर्ण स्थान रहती है इनके माध्यम से जहां एक ओर लोकमानस का अनुरंजन होता है वहीं दूसरी ओर रीति-नीति की शिक्षा दी जाती है इनमें लोकविश्वासों की सरस अभिव्यक्ति मिलती है माताओं द्वारा रात्रि के समय बच्चों के लिए सुनाई गई कहानियाँ और अलाव के चारों ओर बैठे ग्रामीण जनों द्वारा कही जाने वाली बातें, वृक्ष की शीतल छाया में बैठकर कहीं सुनी जाने वाली ग्वालों की चटकीली कहानियाँ, मांगलिक उत्सवों, पौराणिक कथाएँ एवं कथा-वृत्तों के समय कही जाने वाली कथाएँ लोककथाओं के अन्तर्गत आती है।[1]

ढूंढाड़ के आदिवासी लोकजीवन में प्रचलित कथाओं में उनके जीवन के विविध आयामों के साथ जीवन-मूल्यों की सहज अभिव्यक्ति देखने को मिलती है, जो भोलापन, सहजता, नैसर्गिकता आदिवासी समाज जीवनशैली की निजी विशेषताएँ, वहीं इनकी लोककथाओं में भी सहज सुलभ है। मीणा जनजाति प्रारंभ से ही धर्म में विश्वास करती आई है और आज भी करती है। यहाँ आदिवासी प्रकृति के करीब होने की वजह से नदी, पहाड़ वृक्ष, फसल, पशु वर्षा आदि को ही भगवान रूप में देखते व इन्हीं की उपासना करते है। यहाँ के लोगों की उपासना पद्धति का एक पद्धति धार्मिक लोककथाओं, भजन गायन आदि करते हुए समय व्यतीत करना है। इसके लिए समय-समय पर दंगलों का आयोजन भी कराया जाता। अधिकतर ये दंगल लालसोट, करौली सवाईमाधोपुर में आयोजित होते है इन दंगलों में शुरूआत में कन्हैया, हैला ख्याल फिर पद, रसिया और अब सुड्डा गायन होता है इन सभी गायन शैलियों में आधारवस्तु पौराणिक धार्मिक कथाएँ ही है अधिकतर लम्बी कथाएँ रामायण, महाभारत, राम, कृष्ण के चरित्र चित्रण, शिव पुराण, विष्णु पुराण व वेद आदि ही दंगलों में गाए जाते है। यहाँ कुछ प्रचलित लोककथाएँ है जो इन दंगलों में प्रमुख तौर पर गायी जाती है जैसे- 'नरसी का भात', 'हरदौड़ का भात', 'नर्बदा सती', 'शिव-पार्वती हठ', तथा 'उर्वशी' कथा

---

[1] राहुल सांकृत्यायन- हिन्दी साहित्य का वृहद इतिहास हिन्दी का लोक साहित्य, पृष्ठ 57

आदि। दंगलों में इन धार्मिक कथाओं का गाने का उद्देश्य सर्वप्रथम तो ही कि इससे भगवान का स्मरण किया जा सकता और जनमानस की अनपढ़ व नई पीढ़ी तक इन कथाओं व प्राप्त नीति-ज्ञान को पहुँचाया जा सकता है इसके साथ ही 'दंगल' का अर्थ ही जुड़ना है अत: इससे भाईचारा बढ़ता है जब इतनी बढ़ी संख्या में जनमानस नहीं इकट्ठा होता है तो इससे समाज में एकता बढ़ती है।

आजतक दंगलों में सुड्डा गायन शैली खासा प्रचलित है। इस गायन शैली की सबसे बड़ी विशेषता यही है कि इसमें मेडिया यानी मुखिया के तौर पर गाने वाली महिला ही होती है इसके साथ ही सुड्डा गायन में स्त्री गाने के साथ नाचती भी जिससे गायन शैली में श्रृंगारिकता आ गई है सुड्डा गायन में गाने वाली नायिकाएं पेशेवर तौर पर गाती है जिससे उनकी आजीविका का साधन तो जुटता ही है साथ में वे सुड्डा गीतों में उनकी छवि 'सेलिब्रिटी' के रूप में उभर कर आई है। सुड्डा गीतों की लोकप्रियता के बाद वे परिवार व समाज दोनों से सम्मान पा रही है इससे उनका आत्मविश्वास के साथ उत्साह बढ़ा है और उन्हें देख अन्य सभी स्त्रियाँ भी गाना सीख रही है। सुड्डा गायन में गाने वाली स्त्रियाँ ही होती है जिसके फलस्वरूप ही होती है वे अधिकतर ऐसे प्रसंग पौराणिक कथाओं से उठाती है जो स्त्री के दुख-पीड़ा व व्यथा स्थिति से संबंधित होते है जैसे- 'हरदौड़ का भात', 'नरसी का भात' भाई-बहन के अटूट प्रेम की कथा, 'उर्वशी की कथा' में एक बहन, ननद-भाभी के रिश्ते पर आधारित, 'सती नर्बदा कथा' पतिव्रता नारी पर आधारित कथा, 'भीलनी कथा', शिव-पार्वती के आपसी हठ की कथा पर आधारित धार्मिक कथाएँ है जो स्त्री की अलग-अलग छवि हमारे सामने रखती है। अत: हम इन्हीं लोकथाओं पर तैयार किए गए लोकगीतों का अध्ययन करते हुए स्त्री की दशा स्थिति व अलग-अलग छवियों को दर्शायेंगे। इन लोकगाथा पर आधारित लोकगीतों को निर्माण लोकगीत गाने वाले गायक-गायिकाएँ ही करते है तथा इन लोकगीतों का बकायदा कैसेट्स बनाई जाती है इस काम के लिए लोकगायक धवले मीणा व विष्णु मीणा नाम काफी प्रचलित है। इन्होंने लोकगीत गायन को ही अपना पेशा बना लिया है तथा इनके द्वारा लोककथाओं पर आधारित कैसेट्स काफी धड़ल्ले से बिकती है।

अत: हम इन्हीं पौराणिक लोककथाओं पर आधारित लोककथाओं के माध्यम से धार्मिक कथाओं में स्थित स्त्री पात्र की दशा स्थिति वास्तविक समाज की स्त्री की दशा स्थिति से कैसे समानता रखती है तथा इन लोककथाओं पर आधारित लोकगीतों में स्त्री की किस-किस प्रकार की छवि निकल कर आती यह देखने का

हम यहाँ प्रयत्न करेंगे। सर्वप्रथम लोककथा आधारित लोकगीत शिव व पार्वती के आपसी अठ्ठखेली पर आधारित है जिसमें वे दोनों भेष बदलकर एक दूसरे की परीक्षा लेते है। इस प्रसंग में कहीं-कहीं प्यार, क्रोध, शंका व हठ दिखेगा जो कि पति-पत्नी के रिश्ते में हमेशा देखा जाता है फिर भी वे एक-दूसरे जीव-जान से जुड़े होते हैं उनके अंदर फिर भी एक-दूसरे के लिए विश्वास और आदर होता है-

'भीलनी' शिव-पार्वती प्रसंग।

भोला शिवजी म्हारे पिहारियो रो चाव

पीहर म्हाने भेज द्यो भोला नाथ

1. **पारवती जे थे पीहर जाओ म्हाने भी लार[1] ले चालो भोलानाथ**

   महादेव जी जोगी[2] की आवे म्हाने[3] लाज[4]।

   सहेल्या[5] म्हारी हँस पड़े भोलानाथ।

2. **महादेव कर मोची को भेस[6]**

   मोचाँ[7] बेचण[8] नीकल्या भोलानाथ

   पारवती हेला[9] देर बुलायो

   कहो र मोची मोल[10] काई[11], भोलानाथ

3. **पारवती जी यो ही म्हारी[12] मोचाँ रो मोल[13]**

---

[1] लार- साथ

[2] जोगी- योगी, संत

[3] म्हाने- मुझे

[4] लाज- शर्म

[5] सहेल्या- सहेली

[6] भेस- वेश

[7] मोचाँ- जूतियाँ

[8] बेचण- बेचने

[9] हेला- पुकारना

[10] मोल- दाम

[11] काई- क्या

[12] म्हारी- मेरी

[13] मोल- दाम

मोची के लार चल पड़ो गोरा नार

मोची का रे मारू रे थप्पड़ दोय चार

मोचाँ थारी खोस[1] ल्यू भोलानाथ।

4. पारवती फिर आई हाट-बाजार

उस्सी मोचाँ नहीं मिल्सी भोलानाथ

पारवती फिर हेलो[2] देर बुलायो

कहो इनको मोल हे भोलानाथ

5. पारवती यो है म्हारी मोचाँ को मोल

मोची के संग जीमल्यो[3] गोरा नार

पारवती जी लिया जी गास्या[4] दोय चार

लट्टाधारी[5] हँसू पड्या भोलानाथ।

6. पारवती जी जोगी से आवे छी लाज

मोची के संग जीमया गौरा नार

अम्मा ए मरूँ ये क जीऊं म्हारी माय

भोला छल लीणी भोलानाथ।

बेटी ये थारी तो मरेली बलाय[6]

भोला सम्भू थे र छलो गौरा नार

---

[1] खोस- छीनना

[2] हेलो- आवाज देकर बुलाना

[3] जीमल्यो- खाना खाना

[4] गास्या- ग्रास

[5] लट्टाधारी- जटाधारी

[6] बलाय- बिल्ली

भिलणी[1] बन प्रभु न छल्या गौरा नार

कांधे चढ़ शिव ने छल्या गौरा नार।

इस प्रसंग में पार्वती शिव का आज्ञा लेकर अपने पीहर जाने को होती है तो शिवजी भी साथ चलने को कहते है ऐसे में पार्वती कहती कि आपके साथ चलने में मुझे शर्म आती है इसलिए मैं अकेली ही जाऊँगी। आगे यह होता कि शिव जी से रहा नहीं जाता और वह पीछे-पीछे मोची का भेष बनाकर जूतियाँ बेचने के बहाने पार्वती के महल पास आकर बैठ जाते है। पार्वती को भोलनाथ की जूतियाँ बहुत पसंद आती हैं परन्तु भोलानाथ उनके दाम न लेकर पार्वती को अपने साथ ही चलने के लिए कहते हैं परंतु पार्वती मना करते हुए क्रोधित हो जाती है और बाजार में वैसी जूतियाँ खोजने लगती है परन्तु वैसी मनमोहक जूतियाँ और कहीं नहीं मिल पाती है। ऐसे में पार्वती शिवजी के पास जाती है और फिर जूतियों का मोल लगाती है। अब शिवजी पार्वती को उनके मोल में अपने साथ भोजन करने को कहते है पार्वती जब दो चार मास खा लेती है तो भोलानाथ हँस पड़ते है अत: वह समझ जाती है कि भोला नाथ ने छल किया है और वह ठान लेती है कि वह भी इसी प्रकार भोलानाथ को छलेंगी। और वह भी अत्यंत सुंदर भीलनी का भेष धर करभोलानाथ को छलती है। यहाँ कथा में बताया जाता है कि दोनों एक दूसरे को पहचान जाते है परन्तु वह अठखेलियाँ करते हुए एक-दूसरे को सच नहीं बताते है। यह स्त्री-पुरुष के पारस्परिक अन्तरंगता की कहानियाँ हैं।

इसी प्रकार ढूंढाड़ क्षेत्रों में स्त्री-पुरुष के आपसी संबंधों व आपसी सहयोग की परम भावना को इन लोकगीतों में दर्शाया गया है। यहाँ लोकगीतों के पात्र सुख-दुख में एक-दूसरे का साथ देते हैं। पारिवारिक कार्यों में निर्णय अधिकतर स्त्रियाँ ही लेती है। लड़ाई-झगड़ों व किसी समस्या के आ पड़ने पर पुरुषों का साथ देती हैं। इसीलिए मीणा आदिवासी समाज में स्त्री को एक शक्ति के रूप में माना जाता है[2] गृहस्थी परिवार में बात स्त्री की मानी जाती है। समाज में एक लोकोउक्ति प्रचलित है- खड़ा वगैर वरस नहीं और बइरा बगैर घर नहीं (अर्थात् वर्षा ऋतु में फसल बोने के बाद यदि कुछ दिन धूप न हो तो उपजाऊ साल नहीं होगा और जिस पुरुष को स्त्री नहीं उसकी गृहस्थी नहीं।) अर्थात् स्त्री का परिवार

---

[1] भीलणी- भीलनी (आदिवासी स्त्री)

[2] डॉ. धनेश्वर डामोर मीणा, अरावली उद्घोष, अंक-62, पृष्ठ 41

ये होना अत्यंत जरूरी है। जिससे गृहस्थ जीवन व्यवस्थित ढंग से चल सके।

लोककथाओं में बहन-भाई के पवित्र बंधन को लेकर भी बहुत से प्रसंग आते है ढूंढाड़ में भी ऐसे कई प्रसंग है जिसमें भाई-बहन के अटूट प्रेम स्पष्ट तौर पर देखा जा सकता है। ढूंढाड़ में कई रिति-रिवाज है जिनमें भाई को बहन के यहाँ भाई को उपस्थित होना होता है तथा उसे कई काज (कार्यक्रम) सम्पन्न करने होते है जैसे ढूंढाड़ प्रदेश में ये मायरा (भात) बहन की पुत्री या पुत्र के विवाह के अवसर पर बहन व उसके ससुराल पक्ष में सभी सगे संबंधियों को वस्त्र, उपहार व रूपये आदि भाई द्वारा ही दिए जाते है जिसे 'भात' भरना कहते है इसे कहीं-कहीं मायरा भी कहा जाता है और जो भाई 'भात' लेकर जाता है उसे 'भातई' कहा जाता है। ऐसे अवसर पर जिन बहनों के भाई नहीं होते या दुर्घटनावश जीवित नहीं रहते वे इस अवसर पर उन्हें बहुत याद करती हैं। जब भाई भात लेकर जाता है तो बहन मंगलाचार या भात के गीत गाती हुए अति प्रसन्न होती है और जब वह देखती हैं कि भात में भाई उसके ससुराल पक्ष के लिए अच्छे-अच्छे वस्त्र उपहार लाया है तो वह बड़ा गर्व महसूस करती है। जहाँ कहीं भाई की आर्थिक स्थिति ठीक न हो तो कम खर्चे व उपहारों में काम चलाया जाता है परन्तु ऐसे कई बार ससुराल पक्ष उस बहन से नाराज होकर ताने देते हैं। ऐसे में बहन अपनी पीड़ा व दुख को अपने तक ही रखती है।

ढूंढाड़ प्रदेश में भात या मायरा से संबंधित कई लोककथाएँ है जिनमें से 'नरसी का भात', 'हरदौड़ का भात' काफी प्रचलित है यह कथाएँ वह दंगलों में अवश्य गायी जाती है इन लोकगीतों को गाते समय कई बार लोक गायक या गायिकाएँ रोने तक लग जाती है। क्योंकि बहुत सी पीड़ा व दर्द इन लोकगीतों में समाया होता है।

यहाँ लोककथा पर आधारित लोकगीत 'नरसी का भात' नाम से प्रसिद्ध है। यह कथा जूनागढ़ के नरसी मेहता की है जिसमें नरसी कृष्ण का भक्त होता है तथा भक्ति करते-करते साधु हो जाता है तथा अपना सब धन दान में दे देता है ऐसे में उसकी अपनी बेटी रमाबाई की बेटी का विवाह तय हो जाता है और रमाबाई की सास रमाबाई को ताने देती है कि तेरा बाबुल तो वैरागी हो चुका उसके पास कुछ नहीं बचा। ऐसे में उस वैरागी को भात का न्यौता देने मत जा,

नहीं तो हमारी जग हँसायी होगी क्योंकि उसके पास तो कुछ है नहीं देने को। फिर भी वह अपने बाबुल के यहाँ न्यौता देने जाती है और स्वयं कृष्ण भगवान नरसी का भात भरने के लिए जाते हैं और किमती हीरे-मोती, सोने के सिक्के व अच्छे-अच्छे वस्त्र उपहार में रमाबाई को भात में देते है ऐसे में रमाबाई गर्व के मारे फूले नहीं समाती और ससुराल पक्ष संतुष्ट देख कर हर्षित हो उठती है। ससुराल पक्ष भी दंग रह जाता है कि इस वैरागी के पास आखिर इतना धन आया कहा से यह सब धन चोरी का तो नहीं है। जो भात भरने आया है ऐसे स्वयं नरसी के साथ भातई बनकर आए कृष्ण भगवान सबको दर्शन देकर अंर्तध्यान हो जाते है।

अत: यह कथा धार्मिक होने के साथ-साथ बाबुल पक्ष का अपनी बेटी के प्रति प्रेम को स्पष्ट करती है। ये लोकगीत इस प्रकार से है। इसे समग्रता में ही समझा जा सकता है:-

अरे जूनागढ़ नरसी बसे और नित हरी गुण गाय

हाँजी संतन कि सेवा करे, सो[1] सब धन दियो रे लुटाए

अब सब धन दियो लुटाए भगत के पास बची ना पाई[2]...

और थी नरसी की सूता[3] देखकर सूरसागढ़ में ब्याई...

भईता के घर ब्याव[4] सुता को, अब सुनो सजन चितलाई

और भात नौतबे[5] की रामाबाई ने सलाह मिलाई

सुनो सासु जी मेरी जो आज्ञा पाऊँ, तो मैं पीहर कू जाऊँ....

और जूनागढ़ में जार[6] बाबुल के घर भात न्योताऊँ

---

[1] सो- तो

[2] पाई- पुटी कौड़ी

[3] सूता- बेटी

[4] ब्याव- विवाह

[5] भात नौतबे- भात के लिए भाई को बहन का निमंत्रण देना।

[6] जार- जार

हाँ... री... तेरो बाबुल बेरागी[1] भातईयाँ[2] बण आबेगो

आरे म्हारी पोड़ी[3] पे बाबा जी लारे लाबेगो

हाँ ..... ऐ..... ऐ..... ऐ..... रे..... रे.....

अब रमाबाई.... केह रई सासू में चाल्यूँ और शादी के दिन दो-चार भात न्योताऊँ

सुनकर के इतनी बात सास न्यो[4] बोली, पिहर जाबे की बात जबाँ क्यों खोली

बाने सब धन दियो लुटाए बचो नही बाकी अब गई बिगड़ बात सारी नरसी मेहता की

ऊ का देगो भात भातईया ऊतो शंख, झालर[5] संत बजईया

तू मत जा रामा बाई तू बड़े घरन में ब्याई[6]

एक कागज़ कलम मंगाओ और पाँती[7] लिख दूत पाठाओ...

अब बाकू लिखजो थारो हाल, अनोखो माल संग में लईयो

नहीं तो नरसी नारद तुम मत आईया

हाँ तो कागद कलम लाए सो पंडित लियो बुलाए

ओ तेरा बाबुल बेरागी भातईया आबेगो

आरे म्हारी पोड़ी पे बाबा जी लारे लाबेगो....

इसी तरह ढूंढाड़ में और भी कई लोकगीत प्रचलित हैं जिनमें से 'हरदौड़

---

[1] बैरागी- सन्यासी

[2] भातईया- जो भात लेकर आते है उन्हें भातई बोलते हैं

[3] पोड़ी- सीढ़ी

[4] न्यो- जैसे

[5] झालर- आरती के समय बजाने वाला वाद्यंत्र

[6] ब्याई- शादी

[7] पाँती- पोथी

का भात' भी काफी प्रसिद्ध है इसको भी दंगलों में लोकगायकों के द्वारा गाया जाता है "भक्त हरदौड" की कथा भाई-बहन के अटूट प्रेम के साथ-साथ भाभी और देवर के पवित्र प्रेम को भी प्रस्तुत करती है यह निम्न प्रकार से है यह कथा उत्तर प्रदेश में झांसी के नगरओचा शहर की है जिसमें दो भाई होते हैं एक भाई नाम झूंझार सिंह व दूसरे भाई का नाम हरदौड़ होता है हरदौड़ भगवान भक्त है इसलिए वह आजीवन शादी नहीं करना चाहता है उनकी बहन एक होती है कुंजावती जिसका विवाह मध्य प्रदेश के दंतिया जिले में होता है दोनों भाईयों में अटूट प्रेम होता है तथा भक्त हरदौड़ अपनी भाभी को माँ समान मानकर उन दोनों की माँ-बाप की तरह सेवा करता है। यह बात गाँव के कुछ लोगों को गले से नीचे नहीं उत्तर रही है। ऐसे में गाँव के वे लोग झूंझार सिंह को झूठ बोलकर हरदौड़ और उसकी माँ समान भाभी के लिए उसके मन में शक पैदा कर देते है। ऐसे में बड़े भाई के मन में शक पैदा हो जाता है और वह अपनी पत्नी से ही उसे ज़हर खिलाने को कहता है। पत्नी बहुत समझाती है परन्तु वह एक नहीं मानता है और आखिरकार भाभी को ज़हर देना ही पड़ता है। भाभी बताकर ज़हर खिलाती है तो भी हरदौड़ हँस कर ज़हर पी लेता है। ऐसे ये बात हरदौड़ की बहन जो हरदौड़ को बहुत चाहती थी वह बड़े भाई के जली-कटी सुनाती है और बड़े भाई से हमेशा के लिए नाता तोड़ लेती है। ऐसे में कुछ समय बाद कुंजावती के यहाँ उसकी बेटी का विवाह संबंध हुआ तो भात के लिए उसे भाई हरदौड़ की याद आई और वह बहुत रोई और उसे याद आया कि मैने बड़े भाई से नाता तोड़ दिया तो फिर अब भात भरने कौन आएगा। बहन की पुकार स्वर्ग में बैठा हरदौड़ सुनता और अपने प्रियमित्र को स्वप्न में जाकर भात भरने की बात कहता है। तब उसका प्रिय मित्र भात भरने जाता है तो कुंजावती पर तरह-तरह के इल्ज़ाम लगते है। ऐसे में स्वयं हरदौड़ भात के लिए आता है और परन्तु जैसे ही कुंजावती भाई के गले लगती है वह फिर अर्न्तध्यान हो जाता है। इस कथा पर आधारित लोकगीत निम्न प्रकार से हैं जिसे गीत को समग्रता में ही समझा जा सकता है।

लोककथा पर आधारित लोकगीत

आहा... रे... आजा मईया नाहर वाड़ी[1] में तोये मनाऊँ रे-

पहले आजाजो रे सभा में पाछे[2] गाऊँ रे

अरे हात[3] जोड़ पहले गजा नंन को मनाते है

हम हात जोड़ पहले गजानंन को मनाते है

और सकल[4] सभा में सब शीश को झुकाते है

होगी यदि भूल माफी हम चाहेंगे- (2)

और भक्त हरदौल की कथा को तो सुनाऐंगे

और बोलया दुत मानो भुत साँची मेरी बात को- (2)

और आँखों देखी तेरी राणी मैने आधी रात को

अरे जाने काँई[5] बतड़ाबे[6] रात तेरा भाई सूँ

या काँई-काँई बतड़ाबे रात तेरा भाई सूँ

और डरे नई कतई[7] जगत हँसाई सूँ

अब तेरी मेरी, मेरी तेरी दूँती चुगली

यायी दूँतन मेरो यार बनायो माहरो हिंदुस्तान गुलाम.....

ओ.... बदनामी को डरपे[8] समझादे मन मत बाड़ी ने.....

---

[1] नाहर वाड़ी- शेरावाली

[2] हात- हाथ

[3] पाछै- बाद में

[4] सकल- सारी

[5] काँई- क्या

[6] बतड़ाबे- बात करे

[7] कतई- कभी

[8] डरपे- डरना

देबर झालो देरबु लाओ छीत्तर साड़ी ने.....

के राजा कर मेरा विसूवास, भूप तू कर मेरा विशवास

साँची बात नही परी हासे, माकू जाणो कतई तेसी

और था राणी करदई तेरे तो खानदान की ऐसी तैसी

घुट-घुट दैवर सू बतड़ाबे-(2)

मोसू तो झुटों ही प्यार दिखाबे

जब महलन में होई अकेली और बुलबाले हरदौल मनाबे रंगरेली अलबैली

खे कालो है भीतर से हड़दोल और...

काड़ो भीतर से हड़दोल

ठगले तौसे मीणे बोलके भारो बने भगत को बच्चा

और देखत में लगे सीधो सो लागे, पर है बैरिया बच्च

दिल भईया को याने तोड़यो, दिल भईयो को बाने तोड़यो

नातो जाने भोजाई से जोड़ो, फिर से राजा के बेणई....

और इसलिए शादी की या बर-बर में करे मनाई

अहे लगादे इस भगत में आग, लगादे भात इसा में आग

माहरे[1] जचो नही या रागजयति राजा के आबे और

सौ भुखन सु तोलें और जियड़ो बड़ जाबे

ये काँई बड़ा घरन की बात अरे ये काँई बड़ा घरन की बात

हाँसी तो कर रही सातूँ जात वस्तु बोहत बुरी ये तीन

अरे भाई कू भाई पे मरवाबे बेजर, जांरू और जमीन

---

[1] म्हारे- हमारे

अब राजा मेरा कर विश्वास दुष्ट ने बेठा दई मोय कूट- (2)

अरे तेरी आँखन[1] देखी बात नहीं तेरे दिल को झूठँ

ओ.... बदनामी को डरपे समझादे मन मत बाड़ी ने...

देबर झालो देराबु लाओ छीत्तर साड़ी ने...

ऐ राजा ने रानी बुलवाई कैसे.... राजा ने रानी बुलवाई

दूत ने सारी बात बताई, सुणतिई[2] ठाडी-ठाडी रोबे

और कोण ने बहाकयो आप, बीज बात का भेद

झुटायाँ करे मनसा[3] पाप- (2), याको[4] नहीं है पश्यातात

तोकू तनिक शर्म नहीं आबे, मेरे बेटो जैसो देबर तो सोने को बाके दाग लगाबे

च्यो[5] सोना के दाग लगाबे

अरे माहरे सुंदर भाईन को.... अरेरे माहरे सुंदर भाई को

रिश्तो देबर और भाभी को जे के तू अपराध लगाबे

अरे ले बलम, तू मत करे बदनाम

बाकी सुन-सुन झुठी बात रे गई ठंडी-ठंडी रोवे

अबला रे सनम मत करे बदनाम

या बे मतलब बदनाम करे मेरी नणद को भाईया

बलम मेरे करले तु विश्वास बलम तुकरले विश्वास

सारा बदला गले से कटए[6] मेरो देवर भोलो सो...

अब तेरे छागल मनसा पापा बलम तू तो नहीं रियो[7] सोदी में

---

[1] आँखन- आँखों से

[2] सणतेई- सुनते ही

[3] मनसा- मान का पाप उगलना

[4] च्यो- क्यों

[5] याको- इसका

[6] कटए- मारता

[7] रियो- रहना

तेरे, छागयो मनसा[1] पाप बलम तूतो नही है सोदी में ऐ...

अरे तू कायकू[2] करे अन्याय, खिलायो मैंने देवर गोदी में...

ओ.... बदनामी कौ डरपे समझादे मन मत बाड़ी ने...

देबर झालो देर बुलाओ छीत्तर साड़ी ने...

के मोकू मत समझाए हत्यारी के मैं तो याकी भाभी प्यारी

जे के याको एहसान चुकायो, अरे छोड़ बलम को तेने

दिल देवर से जार लगायो, तेरी को मानू मैं साँच[3]

तेरी तो कौ मानू में साँच, नहीं है कतई साँच कू आँच

साँची खेबे दुनिया दारी, अरे माहरे बलम कू है ये शक है, पे एसी है मारी

एक तू तो मौसे झुठाँई प्यार दिखाबे, ऐरे तू तो मोसू झूठो ढोंग[4] दिखाबे

और देबर कू बलम बनाबे, घड़याली आसूँ मत लयाबे

और मेरे आँखन देखय बात मे तू तो तल-तल भेख बताबे

झूठायो भारी बैरागी मक्कारो- (2)

चलरो जाने कबसू चक्कर, ताकू जब जानू सतबंती

अरे मेरे जब आवेगी सांच, शरत मेरी मानेगी लजवंती

अरे मेरे लगी बदन में आग बताऊँ मेरो जब निकड़े गो बैर- (2)

अरे तू तेरा ही हाथ से सतवंती तेरा देबर कू जहर खिलाजो

ओ.... बदनामी कौ डरपे समझादे मन मत बाड़ी ने...

देबर झालो देर बुलाओ छीत्तर साड़ी ने...

---

[1] मनसा- मन में पाप का ले आना

[2] कायकू- क्यों

[3] साँच- सच

[4] ढोंग- दिखावा

अहाँ रे हाँ... रे मत मरबाबे[1] भईया ने.... -(2)

एहे मत मत मरवाबे भईया ने सनम पच्छतावेगो...

अरे मत मरवाबे भईया ने बलम पच्छताबेगो

कोई दिन खांडा[2] पे, कोई खांडा पे मांडा[3] पे भाई आड़ा आबेगो-(2)

एहे री ऐ... मत मरवाबे बीरा ने, ओ देखी मत मरबाबे भईया ने

बलम पच्छतावेगो ओ खांडा मांडा पे आड़ा आबेगो- (3)

तेरा तो भईया पिया मेरे बेसेई कलंक विचारों जो तू लगाबे

तुम ही तो माता, पिता माता तुम्ही-(2) सहो थारो भ्रात कही ना मिलेगा

और बड़े भईया कू भईया कहो मेरे स्वामी-(2)

भरोसा जगत में तो कोई न करेगा

ऐ आगयो जब महलम में हरदैड़ -(2)

भाभी को नहीं निकड़े बोल, बरसे से देण मन सो नीर[4]

अरे तू जेहर देबईमन में भाभी ने बनाई खीर.....

बिल्खी दे भर-भर कर डकराबे-(2)

फटो जिया बाको जावे

बिचारी ने खोल बताई बात सब

कि तेरो मेरा देवरिया दो-चार मिनट के साथ

कर लाला जी मोकू माफ

---

[1] मरवाबे- मरवाना

[2] खांडा- भात के समय भातईयाँ को किया जाना वाला तिलक रस्म

[3] मांडा- मंडप

[4] नीर- आँसू

रे भाभी थर-थर रई काँप

दोनू हाथ जोड़ डकराई[1] और नागिन बनके ये डसेगी तेरी या भोजाई

अरे तू... अरे तू भोजन करले ऐ देवर लाडला- (2)

ऐ तेरा भाई ने... ओ तेरा भाई ने मलाओ यामे जहर देवर लाडला

अरे मेरी बैरी बाने दोष लागायो- (2)

भोजन मे मोपे विष मिलवाओ- (2)

ओ तु चिंता मतकर ऐ भाभी मेरी लाडली- (2)

मैं तो हुकुम पे खाऊँ तेरी खीर भाभी मेरी लाडली- (2)

मेरी बहना को लड़ा जो लाड ओ भाभी मेरी लाडली- (2)

मेरी बहणा[2] को, ओ जीजा बेहणा कू लड़ा जो मेरा लाड़ भाभी मेरी लाड़ली

अब भारी रोएगी जब मेरी बहणा में थाड़जाओ[3] बीर- (2)

अरे बाके कौण भरेगो भात घटा-घट

घट-घट पीगो खीर.....

मत मरवाबे बलम पछतावबे गे.....

.....माँडा पे बलम आडा आबेगो- (2)

घटना सुनी जब बहन ने रोती बिलखती[4], चीकती पिहर में से तो वो आगई....

अरे भाभी तू मुझे बता मेरे बीर को क्यों तू खागई

---

[1] डकराई- रोई

[2] बहणा- बहना

[3] थाडजाओ- संभालना

[4] बिलखती- बिलखना

अरे कायकू मरायो मेरो बीरो- (2)

मेरो बीरो मरायो रे तेने हिरो रे- (2)

कायकू मरायो मेरो बीरो-(2)

मेरा भईया ने तेरो काँई सुख पायो- (2)

तुने हर बाके लगाम लगाओ

मेरी चोट कू लगयो तेरे बीरो रे

तेने कायकू मराओ मेरी बिरो

अरे कायकू रायो मेरो बिरो- (2)

के भाई तेरे बेईमानी आई अरे ते भईया तेरे बेईमानी आई

मत खऊ ले आबा कू भाई जैसे तेने ना मरवायो

और जायदाद के मारे तेने बाको झुठो नाम लगायो

तूतो बैरी[1] है मेरे भाई अरे तू तो बैरी है र भाई

ले बैठो जो कतई कसाई नातो टूटो मेरो तेरो

अरे भाई जे तो मरगो मेरी अब काई लगे तू मेरो

अरे एसे सुनेतेई[2] बोलयो एसे दुष्ट... सुन एसे जब बोलयो या तो दुष्ट

भारो होयो बेहण से रूष्ट, भगजा तु महलन से बाहरी अरे मारयो[3] जे

मारयो तु करलिजो कुछु उपाय

लम्बी पड़ी गेल या तेरी अरी लम्बी पड़ी गेल या तेरी

बेहणा चाहे लगे तु मेरी, मोकु[4] मत दे तू उपदेश

---

[1] बैरी- दुश्मन

[2] सुनाई- सुनते ही

[3] मारायो- मारता

[4] माकू- मेरे को

अरे तोकू जबी पता पड़ेगो जब फेरेगी[1] मेरा बैस

अरी खेबे देखो मेरा बीर या खागो मेरो बीर

मेरो खागयो हरदोल बीर कू, खागो आध खीर

अऐ मेरे सुनो अरे मेरो सुनो सावण जायगो मेरो बीर

बाँध दुंगी कुण के भी मैं राखी

अरे कायकू मरायो मेरी बीरो.....

..... मरायो मेरो बीरो- (2)

उपरोक्त लोककथा पर आधारित गीत को पहले समग्रता में देना आवश्यक था फिर भी यह अभी भी पूरी कथा नहीं है। पूरे लोकगीत को लिप्यांकित करना सम्भव नहीं हो पाया। परन्तु इतनी गाथा के आधार पर इसमें उपस्थित स्त्री पात्रों व सम्बंधों का अध्ययन आसानी से सम्भव है। इस लोककथा में पति-पत्नी, देवर-भाभी, भाई-बहन आदि संबंधों से संबंधित इसकी की रिश्तों छवियाँ दिखती हैं। यह कथा मूल रूप से देवर-भाभी के पवित्र रिश्ते पर आधारित है। परिवार में देवर-भभी का रिश्ता माँ-बेटे की तरह होता है परन्तु कभी इस रिश्ते को लेकर मलाल पैदा होने पर सबसे अधिक खटास इसी रिश्ते में आती है जैसा कि इस लोककथा में चित्रित है कि किस तरह से घर के बाहर के लोगों के द्वारा शंका पैदा करने पर एक बड़ा भाई स्वयं अपने छोटे भाई को जहर भरी खीर अपने पत्नी के हाथों से खिलाने को कहता है और पत्नी को उसको खिलाने पर विवश कर देता है। पत्नी धर्म निभाने के लिए बेटे समान देवर को जहर खिलाना पड़ता है। यहाँ देखा जा सकता कि स्त्री गलत न होते हुए भी उस स्त्री को पति की बात माननी पड़ती है क्योंकि वह स्वामी है। इसी कथा में बड़े भाई द्वारा छोटे भाई को मारे जाने पर उन्हीं की बहन कुंजावती को अपने भाई हरदौड़ का विरह सहना पड़ता है और वह अपनी संतान के विवाह पर 'भात' भरने के लिए तरस जाती है। ऐसे में हरदौड़ अपनी बहन का प्यार देख स्वर्ग से भात भरने के लिए मृत्युलोक में आता है। यहाँ भाई-बहन के संबंध के बीच अटूट प्रेम का हीएक रूप देखने को मिलता है। ऐसा वास्तविक जीवन में भी देखने बार मिल जाता है। कि शंका की

---

[1] फेरेगी- फिरता

वजह से भाई-बहन, देवर-भाभी, सास-बहू, पति-पत्नी आदि सब रिश्तों में दरारें दिख जाती है इन इस कथाओं को देखकर कहा जा सकता है कि इनकी कथा-वस्तु समाज से ही ली गई है। इन कथाओं में भी एक तरह का समाज बसता है।

अत: भक्त 'हरदौड़ की कथा' को देखते हुए समझ में आता है जो लोककथाओं में होता है वही समाज से लिया गया होता है घर-घर में इस तरह की घटनाएँ देखने को मिल जाती है ऐसे इन लोकगीतों को सुनते हुए इनसे शिक्षा ली जा सकती है कि बेकार में शंका पैदा करने का क्या परिणाम होता है एक सुखी व सम्पन्न परिवार खंडित हो सकता है अत: इन लोककथाओं पर आधारित लोकगीतों को 'शिक्षाप्रद लोकगीतों' की संज्ञा दी जा सकती है।

इसी प्रकार सुड्डा गायनों में 'डिग्गीपुरी के राजा' की कथा की काफी प्रचलित है जिसमें डिग्गीपुरी के राजा ने इन्द्र द्वारा इंद्रलोक से निकाली गई उर्वशी को 'धर्म बहन' यानि मुँहबोली बहन बनाया। उर्वशी डिग्गीपुरी के राजा भूपसिंह को वन में अकेली विचरण करती मिल जाती है ऐसे में स्त्री का धर्म बचाने के लिए वह उसे अपने महल में ले आता है जब वह उसे राजा अपने महल में ले जाता है उसकी रानी सोचती है कि राजा मेरे कोई संतान न होने की वजह से दूसरा विवाह कर लाया है और वह रोने लगतीं कि यह देख राजा भूप उसे सारी बात बताता है कि यह मेरी धर्म की बहन है तो तेरी ननद है और दोनों महल में रहो और या तो इसके माँ-बाप मिल जाएँगे, नहीं तो इसका कन्यादान हम ही कर देंगे कुछ समय बाद क्या देखते है कि रानी गर्भवती हो जाती है वह उर्वशी का भाग्यशाली मानती है यह सब उसके आने से ही हुआ है अत: रानी को संतान मिल जाती है और उर्वशी को भतीजा। और उर्वशी के आने पर सारी खुशियाँ मिलते ही रानी राजा भूप से कहती है कि सब कुछ शुभ-शुभ हो रहा चलो गंगा नहा आते है ऐसे में वह उर्वशी और अपने बेटे को महल में छोड़ गंगा नहाने निकल जाते है ऐसे में उर्वशी को अकेला देख भूप का मंत्री उर्वशी पर घात लगाने के लिए रात के समय उर्वशी को अकेला देख भूप का मंत्री उर्वशी का दरवाजा खटखटाता है तो उर्वशी हाथ में तलवार उसका विरोध करती है। तब तो मंत्री वहाँ से चला जाता है परन्तु वह उर्वशी से बदला लेने के लिए राजा के बेटे को मार डालता है और उसका आरोप उर्वशी पर लगाकर पूरे नगर में बात फैला देता है जिसे राजा-रानी भी सच

मानकर उर्वशी को ताना देते है। उर्वशी बिलख-बिलख कर रोती है और कहती है कि यह सब मेरा किया नहीं है। राजा को भी इस बात पर विश्वास नहीं होता कि उर्वशी ऐसा धोखा दे सकती है। फिर भी रानी नहीं मानती है और उर्वशी को महल से निकाल देती है और उर्वशी मृत भतीजे को लेकर निकल जाती है। कुछ दूर चलने पर उसे एक कुटिया दिखती है जिसमें वह रहने लगती है तथा वहाँ उसे साधु के भेष में श्रीकृष्ण मिलते है। वह वही रहने लगती है इतने में कुछ दिनों बाद मंत्री को अपने किए पाप कर्म के कारण चर्म रोग हो जाता है और बहुत दुखमय जीवन व्यतीत करता है ऐसे में द्वन्द 12 साल बाद उर्वशी को ढूँढते हुए मृत्युलोक में आते हैं तो वह उस डिग्गीपुरी के राजा और मंत्री का उस कुटीया पर लेकर जाता है। श्रीकृष्ण मंत्री को कष्ट से दूर करने के लिए सच्चाई बताने को कहते है। ऐसे में मंत्री उन सबको सच्चाई बताता है और फिर श्रीकृष्ण की कृपा से मंत्री व भतीजा दोनों ठीक हो जाते है और उर्वशी से कलंक हट जाता है। ऐसे में राजा-रानी फिर उर्वशी को महलों में ही बहन बनाकर रखते है। इस पर आधारित लिपिबद्ध लोकगीत निम्न प्रकार से हैं:-

"डिग्गीपुरी के राजा" कथा पर आधारित लोकगीत (सुड्डा गायन कथा)

अजी एक समय की बात सभा में हँसी परी कुआए... यें

और होयो क्रोध में सुरपति[1] परी वाने तुरंत दी भिजायें[2]

अब दयी तुरंत भिजाये बारा बरस श्राप दियो बिचारी बा नाटे

तुरंत दी भजाए वारा बरस मृत्यु लोक में काटे

आरा रा मेरे नाई रे मईया रे बाप भतीजे तो... ओ

अरे ओ नही रे भतीजे रे भईया अरे... रे अरेर्रर... एरेरे रे...

अरे दियो श्राप राजा इंद्र ने परी विदन में आई

और हे नही कोई ठोर ठिकाना दिल में नू घबराई

और विधाता कुण के द्वारे जाऊँ

---

[1] सुरपती- राजा

[2] भिजाए- भिजवा देना

और बारा बरस या मृत्यु लोक में कैसे राम बिताऊँ,

अरे वन में अकेली भरकत डोलूँ

अरे दिल में चिंता लग रही भारी कैसे तो नारी धर्म डाटेगो

और झाड़-झाड़ लागू नारी, और निश्चय ही नारी धर्म घटेगा अरे अरे गेला गुआ..... भईया

अरे रे भईया मोसे बैहण धर्म की खिजो ओ... रेरेरेरे

अरे होणहार की बात विदन में भूप डिग्गी को आयो राजो

अरे बन में तो मिल गई परी डोलती बसे न्यू बतड़ायाओ

अरे तू हें कोण गाँव से आई, कोण[1] नगर की रहने वाली,

कोण पिता और माई, अरे कोण पिता और माई कैसे भटकत डोले अकेली,

नही कोई तेरा संग सहेली

अरे के बोली परी अर्ज सुनों भाई और आसमान ने पटकी और धरण ने झेली

और न मेरे भईया, भौजाई रोती फिरँ अकेली अरे ओ गेला गुआ मोसे...

अरे ओ भईया मोसे बैहण धर्म की खिजो[2]....

अरे बोल्यो राजा डिग्गी पुरी को कि बहना तू चल मेरे संग मे

अरे में हूँ राजा डिग्गी पुरी को निरबे[3] रेह महलन में, निरबे रेह महलन में

---

[1] कौण- कौन

[2] खिजो- कहना

[3] निरबे- सदा

अरे बोली परी अर्ज सुन भाई और बणा[1] धर्म की बैहणा बचन दे, जब मानूँगी तेरी

अरे के तू मोसे[2] तो रूट गयो करतार, बणा लेजा घर बैहण घर जातांई

नार दाग मत खीजो और बणा धर्म की बहण मोसू तो भाई बन रिहजो- (2)

दे दियो बचन, भूप संग आई, अरे दियो बचन, भूप संग आई

और देख पराई नार, गीरी गच खाए देख भोजाई अरे आगे।

अेरे बोहत री समझावे राजा नई रे समझ में आए

माहरे नहीं संतान पिया, न्यू नार दूसरी लायो

अरे या तो मोकू झूठो बहकावे[3] धारी साँच कतई नी आबे,

मैं तो थारी सौगन खाऊँ और सौ-सौ लिया राडं पिया

में मईया के जाऊँ।

आरे म्हारे गला ही कुटूम्भ, कबिलो म्हारी हरी ने ही बात बिगड़ी और

अरे देदे तो एक डाल- (2)

राम जी पाबन रहती थारी- (2)

धर्म कर्म उठगो नाही या लगे या बहण धर्म की मेरी

मत करजो कोई बेहम लगेया, नणद धर्म की तेरी

अरे बेहण धर्म की खीजो- (2)

अरे तू अब तू राख जार महल में, चोखो मन तेरी लग जाओगो

और खोटो समय बिचारी को इन महलन में कट जायगो- (2)

---

[1] मोसे- मौसेरे

[2] नार- नारी

[3] बहकावे- बहाकने

याका घर बाड़ा आ जाएगा और न आया तो देख ठिकाणों

हम शादी कर दिंगा आ.....

अब संग-संग रहबे दोनु नणद और भोजाई

एक दिना रानी राजा डिग हँसती हँसती आई

अरे एक..... (2)

अरे डोला ह बहणा है सोणिली- (2) अरे बहण आपणी है सोणिली[1] की जेदि पिया जी ननद महल में आई और सूदी[2] होगी सारा घर में दूब जमाई ओ गे.....

अरे नणद पड़ी महल में छान

जबसे होगो भारी पाँव, पिया अब सूदी आगी म्हारी

ओर छोरो सो हो जावे गद्दी सूनी न जावे थारी- (2)

और नौ महिना गये बीत रानी ने तो महल में सूत गायो

राजा ने तो धूमधाम से छोरा को ही कुआँ पुजाओ

ओ..... कुआँ.....

अरे नणद ने भारी गरब लुटाओ

अरे नणद ने भरी गरव लुटाओ के घर-घर मंगल मय रही नारी

हरी खुशी मेहल में भारी.....

अरे के छारी खुशी महल में भारी

कि अमावस सोमोति जब आई ओर एक दिना रानी

राजा सू महलन मेरे बतड़ायी

---

[1] सोणिली- भाग्यशाली

[2] सूदी- अक्ल

ओ एक दिन रानी राजा सूँ महलन में रे बतड़ायी[1] राम जी ने धरो रे मूंड पर हाथ

अरे राम जी धरोरे मूंड पे रे हाथ सुधरी तेरी रे बिगड़ी बात

अरे पिया जी रे मत भूले रे भगवान और गंगा नाहबे चलो आज थम मेरो रे केहणो[2] मान

मोसू बैहण धर्म को खिजो[3] रे- (2)

अरे राजा राणी छोड़ बैहण कू गंगा नहाबा[4] जाबे होणी होवे पेच

विधणा से नहीं खेबे- (2)

रह गई आज बाई अकेली बाई जब मंत्री ने नीत डिगाई

अरे मंत्री ने नीत[5] डिगाई[6]

यातो है सुकुमारी बण जाए या म्हारी घर वाड़ी

अरे बण यातो म्हारी घर वाड़ी

यातो धर्म बेहण बण आई काँई करेगे राजो

राजी तो हो जाएगी बाई, अरे राजी तो हो जाएगी बाई

वा तो छिंड महलन पे आयो अरे वा तो छिंड महलन पे आयो

अरे वाने तो दुकड़ा जा खटकायो।

आगयो बेहम बैहण के मन में, क्रोध कर मंत्री कू महल सूँ खदेड़ भगायो।

---

[1] बतड़ाई- बातें की

[2] केहणों- कहना

[3] खिजो- कहना

[4] नहाबा- नहाने

[5] नीत- नियत

[6] डिगाई- नियत बिगाड़ लेना

मंत्री सू अपमान सहन ना हो पायो बाई जी के पीछा सू भतीजा मार गिरायो

अरे भतिजि कू जगा रही बाई रे, भतिजे कू जगा रही बाई...

और हले चले न कतई देख वा भारी घबराई, लाल कू या काई होगो रे, लाल कू या काँई होगो ओ...

और उठा लियो भर बात पलंग पे सोतो हि रेहगो

धार नैन से लग रई है...

और देख भतीजे को बुआ भर-भर हिल्की[1] रो रई है

भ्रात जब आवेगो- (2) देख घबरावेगो

कैसे करेगो मेरो बीर

भ्रात जब आवेगो- (2) देख घबरावेगो।

कैसे करेगो मेरो बीर...

अरे सुणी[2] जब रानी ने वाणी- (2)

और छाती का होये दो टूक पणों बाके ने पाँवना[3] में पाणी

छोड़ा खाँ[4] गयो रे लाल मेरो- (2)

मेरो जुड़तो दिपक भुजो आज देख लहू तेरो

बिल्क रही भारी मेहतारी[5] रे बिल्क रही मेहतारी

और हो रही लोट-पड़ोट लाड़ले बणे हित्यारो

बुढ़ापे में डाल दयी मोकू[6] अरे बुढ़ापे में डाल दयी मोकू

---

[1] हिल्की- सिसिकियाँ

[2] सुणी- सुनी

[3] पाँवना- पैरों में

[4] खाँ - कहा

[5] मेहतारी- अम्मा, माँ

[6] मोकू- मुझे

मेरी खोंस[1] लई डाल या आच्छो लगो नही तोकू[2]

बिल्क रही हे रानी गिरे नैन से पाणी कैसे करीऐ करतार[3]

बिल्क रही है राणी.....

इस कथा को समग्रता में देखते हुए इस कथा में स्त्री रूप में एक बहन, पत्नी की छवि स्पष्ट होती है। सर्वप्रथम यदि हम कथा की शुरूआत में जाते हैं तो देखते है कि स्त्री रूप में 'उर्वशी' जिसे कि सिर्फ इंद्र इस वजह से इन्द्रलोक से निकाल देते हैं क्योंकि वह भरी सभा में हँस पड़ती है यह स्त्री की विडम्बना ही है कि वह खुलकर हँस भी नहीं सकती और उसे उस अपराध की सजा मिलती है बारह वर्ष का वन का वनवास। उर्वशी जब वन में आती है तो 'स्त्री धन' होने की वजह से अपनी पीड़ा इन पंक्तियों में व्यक्त करती है-

"अरे वन में अकेली भटकत डोलूँ

अरे दिल में चिंता लग रही भारी

कैसे नारी धर्म डाटेगा

और झाड़-झाड़ लगे नारी

और निश्चय ही धर्म घटेगा"

उर्वशी को डर है कि एक स्त्री होने पर यदि उसके साथ कुछ अनहोनी हो जाती तो वह समाज की नजरों से दूषित हो जाएगी। ऐसे में समाज उसको त्याग देगा यह पीड़ा इस लोकगीत में आगे चलकर सत्य भी हो जाती है जब 'डिग्गीपुरी' का राज उसे धर्म बहन बनाकर अपने महल में ले जाता है और डिग्गीपुरी के राजा भूप का मंत्री उस पर बुरी नजर गढ़ाता है और जब वह विरोध करती है तो राजा के बेटे की मौत का इल्ज़ाम लगा दिया जाता है। ऐसे में वह राजा की धर्म बहन वाली छवि खराब हो जाती है और राजा उसे महल से चले जाने को कहता है। साथ में धर्म ननद बनी उर्वशी की भाभी भी उसे ताने दे-देकर अपने पुत्र को मार

---

[1] खोंस- छिन

[2] तोकू- तुझे

[3] करतार- भगवान

डालने का ताना देती है। ऐसे में उर्वशी अपने आप को बेकसूर साबित करने के लिए वचन लेती है। यहाँ स्त्री शक्ति का उदाहरण मिलता है। अत: वह सत्य सबके सामने ले ही आती है और फिर से राजा भूप की पत्नी की ननंद, भतीजे की बुआ और डिग्गीपुरी की रानी की धर्म बहन कहलाती है। अत: यहाँ हम देख सकते है कि स्त्री की छवि किस प्रकार समाज में बदलती रहती हैं। स्त्री को हमेशा यही भय रहता है कि वह समाज का हिस्सा रह पायेगी भी या नहीं, न जाने उसे समाज अपने से कब निकाल फेंके इसलिए स्वच्छंद व स्वाधीन व्यवहार की जगह परातंत्र व तथाकथित व्यवस्थित समाज के अनुसार ही ढलने की कोशिश करती है चाहे उसमें वह खुश हो या दुखी।

पौराणिक कथाओं पर आधारित लोकगीतों में मीरा बाई के ऊपर भी कई प्रसंग मिलते है जिसमें मीरा बाई के घर छोड़ने और गिरधर के गुणगान करने को लेकर निर्णय लिया तो एक तरह से अपने समय में तत्कालीन सत्ता और समाज को एक बहुत बड़ी चुनौती दी थी स्त्री होते हुए इस निडर व्यक्तित्व के कारण ही आज मीरा बाई सुनी व गायी जाती है। यह हमें ढूंढाड़ की पौराणिक कथाओं में देखने को मिलता है। पद्मावती, उम्र, 26 ग्राम मौरेड द्वारा गाई गयी कथा आधारित लोकगीत में मीरा की छवि इस प्रकार की प्रकट हुई है:-

चांदि[1] कि दिवार को तोड़ो, मीरा ने घर छोड़ दिया।

एक राजा कि रानी ने गिरधारी से नाता[2] जोड़ लिया।

नाचे गावे मीरा बाई लेकर कर में इकतारा।

पग[3] में घुंघरू गले में माला भेष जोगिया[4] का धारा।।

चांदि कि दिवार.....

हर गायन में बसै कन्हैया, भक्ति भाव का स्वाद भरा।

ज्योति में ज्योति मिलानी तन से नाता जोड़ा दिया।।

---

[1] चांदि- चाँदी

[2] नाता- रिश्ता

[3] पग- पैर

[4] जोगिया- जोगिन

चांदि कि दिवार.....

सास कहे कुलनासी मीरा लेके गले में फाँसी रे।

कैसे जीना होगा मेरा जग करत हाँसी रे॥

चांदि कि दिवार को तोड़ो मीरा ने घर छोड़ दिया

एक राजा कि रानी में गिरधारी ने नाता जोड़ लिया

चांदिकि.....

अत: यहाँ देख सकते है कि मीरा ने समाज की परवाह नहीं की और न ही यह देखा कि लोग क्या कहेंगे। वास्तविकता यह है कि परिवार के संबंध के बन्धन निर्मित करते है और मीरा इन्हीं बंधनों के विरूद्ध खड़ी होती दिखाई देती है और कई मुश्किलें खड़ी की जाती है जब वह सामंती व्यवस्था के खिलाफ जाती है तो उसके सामने आती है। पर वह घबराती नहीं बल्कि डटकर उनका मुकबला करती है मीरा की यही छवि सुड्डा गाने वाली लोक-गायकों को प्रभावित करती है। वह मीरा को अपना आदर्श मानते हुए अपने गायन में शामिल करती है। गायन के द्वारा समाज तक मीरा की छवि को लाना उन स्त्रियों के लिए प्रेरणा दायक होगा जो अत्याचारों, उत्पीड़नों, दुखों को हद तक सहती चली जाती है। लोकगीतों में मीरा के विद्रोह के स्वर को जन-जन तक की स्त्रियों तक पहुँचाया जा सकता है तथा स्त्रियों की छवि को और मजबूत करने में सहायता मिल सकती है। लोकगीतों में राणा के द्वारा ज़हर का प्याला और साँप को पिटारे में रखकर भिजवाने वाले प्रसंग अधिक मिलते है। लोकगीतों में सीता, पार्वती, सती अनुसुइया, सती नर्बदा आदि स्त्रियाँ पारिवारिक रूप से जुड़ी हुई प्रतीत होती है जबकि मीरा एक स्वच्छ और शक्तिशाली रूप में हमारे समक्ष आती है। सुनने में आता है कि मीरा पति की मृत्यु के बाद ने सती होने से भी इनकार किया था जबकि अन्य स्त्री छवियों में पुरूष सत्ता के खिलाफ नकार दिखता ही नहीं। मीरा की छवि को तमाम स्त्रियाँ हथियार के रूप में इस्तेमाल कर सकती है और अपनी छवि को और मजबूत कर सकती हैं।

इन लोककथाओं पर आधारित लोकगीतों का अध्ययन करते हुए निष्कर्ष निकलता है कि लोककथाओं में जिस प्रकार आपसी संबंध चाहे वह भाई-बहन

का हो, देवर-भाभी का हो, ननद-भाभी का हो, बाप-बेटी का हो सभी रिश्ते हमारे समाज में उसी रूप में व्याप्त हैं। अंतत: इन लोककथाओं के जरिए यह शिक्षाग्रहण की जा सकती है कि हर रिश्तों का महत्व होता है अत: उसे पूरी सहजता और विश्वास के साथ निभाना चाहिए। इन पौराणिक लोककथाओं से ज्ञात होता है कि प्राचीन समय से ही स्त्री के हर रूप चाहे वह बेटी हो, बहन हो, पत्नी हो उसे हर रिश्ते में दुख व पीड़ा अनुभव होती है फिर भी वह हर रिश्ते व जिम्मेदारी को बखूबी निभाती है तथा चाहे उसे इन सभी रिश्तों में कितनी घुटन क्यों न महसूस हो वह ऐसी दयनीय स्थिति में भी अपने परिवार को कुछ नहीं कहती सब कष्ट सहती चली जाती है। कि पौराणिक कथाओं से परिवार में स्त्री की स्थिति को इन लोकगीतों में बहुत मार्मिक ढंग से चित्रित किया गया है।

उपसंहार

उपसंहार

लोकगीत और लोकसंगीत का अध्ययन न केवल हमें अपने साहित्य और संगीत को समझने की दृष्टि देते है, बल्कि हमें अपने समाज को भी गहराई से समझने की ताकत देता है। संगीत का अपने समाज से कितना गहरा रिश्ता है, इस लोक-संगीत के अध्ययन के बिना नहीं जाना जा सकता।

प्रथम अध्याय में ढूंढाड़ी क्षेत्र की लोक संस्कृति को समझने के लिए इस क्षेत्र का इतिहास जाना गया। इस अध्याय में ढूंढाड़ प्रदेश का नामकरण के साथ यहाँ ऐतिहासिक, भौगोलिक, सांस्कृतिक, सामाजिक व दैनिक जीवन शैली का परिचय के साथ-साथ उसका अध्ययन किया गया।

भौगोलिक दृष्टि से राजस्थान के दो भाग हैं, एक पश्चिमोत्तर भाग और दूसरा पूर्वी दक्षिणी भाग। अरावली पर्वतमाला इन्हें दो अलग-अलग भागों में बाँटती हुई मध्य से गुजरी है। इसके पश्चिमोत्तर भाग में मरूस्थल अधिक है, यहाँ काफी लम्बे मैदान हैं, किन्तु मरूस्थल होने से जन-जीवन अभावग्रस्त है। इसकी अपेक्षा दक्षिण पूर्वी भाग खुशहाल है। अरावली पर्वतमाला है तथा कुछ मैदानी भाग है, जलवायु सुहावनी है वर्षा का औसत भी यहाँ अच्छा है। इस इलाके में कई नदियाँ है जो प्रदेश को हरा-हरा रखने में मदद करती है। कुछ बरसती है, जो वर्षा के समय दो-तीन महीने बहती हैं तथा विभिन्न तालाबों को भरने का काम करती है। रामगढ़ नाम की प्रकृतिक झील भी इस प्रदेश की शोभा बढ़ाती है तथा वह यहाँ की पेयजल पूर्ति का आधार है।

ढूंढाड़ प्रदेश दक्षिणी-पूर्वी राजस्थान के ऊपरी हिस्से में आता है। यह पूर्व में दौसा से लेकर पश्चिम में दूद तक, उत्तर में चौंमू, श्रीमाधोपुर से लेकर दक्षिण में डिग्गी मालपुरा तक है। यह एक प्राचीन प्रदेश है। पौराणिक आख्यानों में इसका नाम आता है। मधु कैटम के पुत्र धुन्धमार द्वारा मरूस्थल में जो नगर स्थापित किया गया था वह ढूंढाड़ ही था। अशोक महान बादशाह अकबर के समय में यह प्रदेश राजनैतिक गतिविधियों का केन्द्र था। द्वितीय अध्याय के ढूंढाड़ प्रदेश के लोकगीतों का विवेचन करने से पूर्व लोकगीतों का अर्थ, विभिन्न विद्वानों द्वारा ली गई लोकगीतों की विभिन्न परिभाषाएँ तथा लोक संगीत के मर्मज्ञ विद्वानों द्वारा किए

गए लोकगीतों के विभिन्न वर्गीकरणों को स्पष्ट किया गया है। इसके साथ ही ढूंढाड़ के लोकगीतों में प्रयुक्त वाद्य क्षेत्र, लय, ताल व्यवस्था का विवरण दिया गया है।

ढूंढाड़ प्रदेश के लोकगीतों का विवेचन करने से पूर्व लोकगीत का अर्थ, विभिन्न विद्वानों द्वारा ली गई लोकगीतों की विभिन्न परिभाषायें तथा लोकसंगीत के मर्मज्ञ विद्वानों द्वारा किये गये लोकगीतों के विभिन्न वर्गीकरणों के साथ लोकगीतों का वर्ग-वर्गीकरण महत्व समाज में उसकी भूमिका तथा ढूंढाड़ में गाए जाने वाले तरह-तरह के गायन शैलियों का वर्णन किया गया है। किसी ने विषयों के आधार पर, किसी ने रस व भाव के आधार पर, किसी ने लोकगीत गाने वाले बालक-बालिकाओं, स्त्री-पुरूषों के आधार पर लोकगीतों का वर्गीकरण किया है।

तृतीय अध्याय में जो कि प्रस्तुत लघु शोध के शीर्षक पर विस्तृत अध्ययन है। इसमें आदिवासी स्त्रियों को लोकगीतों का जनक माना गया है क्योंकि लोकगीतों में स्त्री चक्की पीसते समय, हल जोतते समय, बर्तन माँजते हुए, पानी भरते हुए, खेत-खलियान में गुड़ाई करते जो स्वर मुँह से निकलते हैं उनमें सुख, उमंग, उत्साह के भाव लोकगीतों में तो दिखते ही है साथ ही स्त्री को दुख, दर्द, पीड़ा प्रतिरोध आदि के स्वर भी लोकगीतों में दिखे। इसके साथ ही परिवार व बृहत्तर आधुनिक समाज में बदलती स्त्री की दशास्थिति व मानसिक विचारों को भी लोकगीतों के माध्यम से देखा गया है।

जन साधारण के गीतों में जो परिवार की स्त्रियाँ एकत्रित होकर विभिन्न अवसरों पर गाती हैं उनके गीतों में स्वर प्रस्तार अधिक है, धुने भी कई प्रकार की होती है इनमें लोकगीत कभी समूह में, कभी अकेले गाये जाते हैं, कभी एक महिला द्वारा पहले लोकगीत प्रारम्भ किया जाता है फिर अन्य महिलाओं टेकपद की पुनरावृत्ति कर उसका अनुसरण करते हुए लोकगीत गाती है। लोकगीतों का रचनात्मक रूप हमें इन गीतों में दिखाई देता है। यह अकृत्रिम है, साधारण-जनों की प्रफुल्लित अभिव्यक्ति है जिनमें किसी प्रकार का बधन नहीं है, स्वर स्वत: ही कंठ से निकल पड़ते हैं। ये लोकगीत मानव प्रकृति के उन्मुक्त, उत्फुल्ल उद्‌गार हैं। पेशेवर गायक गायिकाओं के भी गीत हैं। किंतु ये स्वत: सुखाय न होकर परसुखाय है। इनमें प्रदर्शन की विशेष चेष्टा रहती है, दूसरे पर इच्छित प्रभाव की अभिलाषा मन में संजोये कलाकार कला का प्रदर्शन करता है। अत: इन गीतों में न चाहते हुए भी कृत्रिमता का समावेश हो जाता है।

मीणों के गीतों की विशेषता है उनका हुँकार के साथ उठना, देर तक आधार स्तर पर कायम रहना और फिर एक साथ छोड़ना। उनकी लोकधुनें 3-4 स्वरों में आबद्ध रहती हैं। उनका आधार स्वर ऊँचा रहता है। प्राय: वे दूसरे काले या तीसरे चौथे सफेद को आधार बनाकर गाए जाते है। सामूहिक गायन के कारण वह मनोवंछित प्रभाव डालते हैं।

ढूंढाड़ प्रदेश के आदिवासी मीणे लोग अपनी मस्ती में वाध बजाते हैं, उनके बजाने में धूम-धड़ाका अधिक रहता है उनमें नजाकत, नफासत नहीं रहती। मेलों व चौपालों पर, होली व विवाहादि मांगलिक अवसरों पर वे हारमोनियम, तबला, मंजीरा व ढोलक का खूब प्रयोग करते हैं। जन-साधारण द्वारा गाये जाने वाले गीतों में वाद्य प्रयोग बहुत कम होता है। विभिन्न संस्कारों के समय गाये जाने वाले नेगचार के गीतों में वाद्य नहीं बजते। कभी-कभी ढोलक का प्रयोग कर लिया जाता है।

भात के समय, कुआँ पूजन के समय, साथिये लगाने के समय ढोल और शहनाई वाले बुलाये जाते हैं, तब गाये जाने वाले गीतों में हारमोनियम, तबला, ढोलक, चंग, मंजीरा, झांझ, चिमटा, खड़ताल आदि का प्रयोग मिलता है। पेशेवर गायक-गायिकाओं द्वारा आयोजित कार्यक्रम में वाद्यों का प्रयोग मिलता है। कार्यक्रम की सफलता हेतु वे हर वाद्य का हिसाब से प्रयोग करते हैं, इनमें सारंगी, हारमोनियम, तबला, ढोलक, मंजीरा आदि प्रयुक्त किये जाते हैं।

इनके साथ ही मंदिरों में होने वाले जागरणों में तथा चतुर्दशी को घरों में होने वालों पितरों के जागरणों में नक्कारे व सारंगी की विशेष धूम रहती है। अन्य वाद्यों हारमोनियम, तबला, मंजीरा आदि के साथ ही सारंगी, रावण हत्था व नक्कारा विशेष रूप से बजाए जाते हैं।

पेशेवर गायक सारंगी व रावण हत्थे के साथ निर्गुणी पद, शिवाजी के ब्यावले व भतृहरि की कथा आदि सुनाते हैं। इनमें कई अच्छे संगीतज्ञ होते हैं तथा कुछ परम्परा से प्राप्त अपनी थाती को सबके सामने प्रकट करने वाले। इन्हें शास्त्रीय संगीत का ज्ञान नहीं होता किंतु अपनी धरोहर गीत के आगे और पीछे स्वर प्रयुक्त कर लेते हैं तथा बार-बार अभ्यास के कारण ये अपने फन में माहिर हो जाते है।

जहाँ आदिवासी मीणों के गीत 3 या 4 स्वरों में समाहित मिलते हैं वहीं जन-साधारण व पेशेवर गायक-गायिकाओं के लोकगीत दो, तीन, चार, पाँच, छह, सात स्वरों पर आधारित मिलते हैं तथा उनकी धुनें भी बहुत है। कभी एक ही धुन पर आधारित कई गीत मिलते हैं। इनमें स्वर संयोजन भी बहुत अच्छे बन पड़े हैं। धनु मार्मिक हैं। ढूंढाड़ प्रदेश के लोकगीतों में सारंग, पीलू, दुर्गा, माँड, भूपाली, पहाड़ी आदि राग मिलते हैं। इसके साथ ही झिंझोटी, खमाज, तिलक कामोद बागेश्री, देश, नट, देसी आदि पर भी आधारित गीत मिलते हैं। इनमें भी कुछ गीतों में हमें एक राग, कुछ में दो रागों का मिश्रण तथा कुछ गीतों में अनेक रागों की छाया का आभास होता है। इनके गाने वाले इनके राग तत्व से अनभिज्ञ हैं, वे तो बस धुन के अनुयायी हैं, अपने पूर्ववर्तियों से दादा पिता से जैसी धुन उन्होंने सुनी उसी के अनुरूप सीखी और उसे आगे बढ़ाया। किन्तु हम जब संगीतिक दृष्टि से उनका आकलन करते हैं तो कई तथ्य उजागर होते हैं। वास्तव में कई रागों के निर्माता हमारे लोक-गीत ही हैं। जिस धुन ने अधिक प्रभावित किया वह बार-बार प्रयोग में लाई गई और चलकर उसने राग रूप धारण कर लिया एवं शास्त्रीय बंधन में बँध गई।

ढूंढाड़ प्रदेश के लोकगीतों में ताल का महत्व नहीं है वरन् यहाँ विशेषता है लय तत्व। लय के कई प्रकार लोकगीतों में मिलते हैं। लोकगीतों की जीवन्तता का उत्साह का प्रमाण उनका लय तत्व ही है। इनमें भी वे तीन मात्रा, चार मात्रा के छंद गाते हैं। इनमें कभी 3-3- मात्राएँ चलती है, कभी 3-4 मात्राएँ और कभी 4-4 मात्राएँ चलती हैं उनकी उस छंद बद्धता को ताल में आबद्ध करने के प्रायस में वे कभी सफल होते हैं कभी असफल क्योंकि इन लोकगीतों में कभी हमें शास्त्रीयों तालों का स्वरूप मिल जाता है, कभी मात्रा छंद मिलते है। इनमें कइ बार एक ही गीत के स्थाई में एक ताल और अन्तरे में अन्य दूसरी ताल को हम पाते हैं और इस दृष्टि से ढूंढाड़ के लोकगीत काफी सम्पन्न हैं। पारिवारिक संस्कारों में महिलाओं द्वारा गाये जाने वाले नेगचार को लोकगीतों में ताल हेतु वाद्य प्रयोग प्राय: नहीं किये जाते किन्तु उन गीतों में छंद स्पष्टत: दिखाई देते हैं, उन महिलाओं को ताल, काल, खाली भरी शास्त्रीय उपादानों का ज्ञान नहीं किन्तु ये गीतों का कलात्मक व लयात्मक ढंग से प्रस्तुत करती है।

परिशिष्ट

परिशिष्ट 1

ढूंढाड़ के आदिवासी लोकगीत और उनका हिन्दी अनुवाद

स्त्री आधारित

जग में चार तरह की नार

कैसी रच दई[1] विधि ब्रह्मा ने जग में चार-तरह की नार[2]-(2)

(1) शंकनी[3] रच दई, ढंकनी[4] रच दई हँसणी[5] रची विचार...(2)
पद्मनी[6] के पदम पाव में सूरज के उजियार
कैसी रचदई विधि ब्रह्मा ने जग में चार तरह की नार...

(2) ढंकनी खून को पीवै[7], दिन उठे करती राड़[8]
हँसणी तो हँस-हँस के बोले करे पति से प्यार
कैसी रच दई विधि...

(3) शंकनी अपणो रूप दिखावे, खौले शीश का बाड़[9]
जेठ ससुर की लाज न राखे, डोले मोहंडो[10] उघाड़[11]
कैसी रच दई...

(4) पद्मनी के पदम् पाव में सूरज के उजियार[12]
कहत कबीरा सूनो भाई साधू ये पति व्रता है नारी
कैसी रच दई...

गायिका : पद्मावती मीणा, उम्र : 26

ग्राम : मौरेड़, दौसा, राजस्थान

---

[1] दई- दी

[2] नार- नारी

[3] शंकनी- शक करने वाली

[4] ढंकनी- ढंक लगाने

[5] हंसणी- हँसी-खुशी रहने वाली

[6] पद्मनी- सम्पूर्ण गुणों वाली आदर्श पत्नी

[7] पीवै- पीना

[8] राड़- युद्ध, झगड़ा

[9] बाड़- बाल

[10] मोहंडो- मुँह

[11] उघाड़- खोलकर

[12] उजियार- उजाला

अनूदित गीत

जगत में चार तरह की नार

कैसी रचना रची ब्रह्मा ने, जगत में चार की तरह नार (नारी)

शंकनी रची, ढंकनी रची और रच दी हँसनी भी

पद्मनी के पाँव में है, सूरज सा उजियारा

कैसी रचना रची ब्रह्मा ने, जगत में चार तरह की नार।

ढंकनी खून पति का पीती, दिन उठे करती रगड़ा

हँसनी हँस-हँस बोले, करे पति से प्यार

कैसी रचना रची ब्रह्मा ने...

शंकनी अपना रूप दिखाती खोल कर चलती शीश के बाल

जेठ ससुर की न रखे, और घुमे घुँघट खोले

कैसी रचना रची...

पद्मनी के पाँव में है, सूरज सा

उजियारा कहत कबीर सुनो भाई साधू,

यही है पतिव्रता नार

कैसी रचना रची...

स्त्री आधारित

सात फेरा

पहलो तो फेरो ए लाडी, माई-बाबा री प्यारी
दूजो तो फेरो ए, लाडी, दादासा री प्यारी।
तीजो तो फेरो ए, लाडी काका रो प्यारी।
चौथो तो फेरो ए, लाडी, मामारी रो प्यारी।
पाँचवो तो फेरो ए, लाडी, बीरा जी री प्यारी।
छठो तो फेरो ए, लाडी, मावसा री प्यारी।
सातवों तो फेरो ए, लाडी हुई रो पराई॥

रवि प्रकाश नाग द्वारा
राजस्थानी गीता रो गजरो पुस्तक में संकलित

सात फेरे

पहले फेरे तक ये दुल्हन, माई-बाबा की प्यारी,
दूसरे फेरे तक ये दुल्हन, दादा की प्यारी,
तीसरे फेरे तक ये दुल्हन, काका की प्यारी,
चौथे फेरे तक ये दुल्हन, मामा की प्यारी,
पाँचवे फेरे तक ये दुल्हन, भाई की प्यारी,
छठवे फेरे तक ये दुल्हन, मौसा जी की प्यारी,
सातवे फेरे पर अब ये दुल्हन हुई पराई।

विदाई पर (स्त्री) आधारित

उड़- उड़ रे म्हारा काला रे कागला

उड़ उड़ रे, उड़ उड़ रे म्हारा[1] काला रे कागला[2]
कद[3] म्हारा पिउ[4] जी घर आवे,
खीर खांड[5] रो जिमणा[6] जिमाऊँ
सोना में चोंच मंढाऊ[7] म्हारा काग[8],
जद म्हारा पिउ जी घर आवे, उड़ उड़ रे...
पगल्यों[9] में थारे[10] बांधू रे घूँगरा[11]
गले में हार पहराऊँ म्हारा काग,
जद[12] म्हारा पिउजी घर आवे, उड़ उड़ रे...
आंगल्या[13] मे थारे मूंदड़ी[14] कराऊं, चांदीरा[15] पांख[16] लगाऊ म्हारा काग।
जो तू उड़ने, सोण[17] बताबे
जलम्-जलम्[18] गुण गाऊ म्हारा काग,
जद म्हारा पिउजी घर आवे।

रवि प्रकाश नाग के द्वारा संकलित

---

[1] म्हारा- मेरा
[2] कागला- कौआ
[3] कद- कब
[4] पिउ- पिया
[5] खांड- बूरा, चीनी
[6] जिमणा- भोग लगाना
[7] मंठाऊ- बनवाऊ
[8] काग- कौआ
[9] पगल्यां- पैरों में
[10] थारे- तेरे
[11] घूँगरा- घुँघरू
[12] जद- जब
[13] आंगल्या- आगुलियाँ
[14] मूँदडी- अँगूठी
[15] चांदीरा- चांदी
[16] पांख- पंख
[17] सोण- शगुन
[18] जलम्- जलम्

अनूदित गीत

उड़-उड़ जारे, मेरा काला कौआ

कब तक आएँगे मेरे पिया, बता कब तक आएँगे मेरे पिया

तुझे खीर-बूरा का भोग लगाऊ,

चोंच मढ़ाऊ सोना की, ओ मेरे काग

जब आ जाए मेरे पिया घर, उड़ जारे...

पैरों में बँधूगी घुँघरू,

गले में पहनांऊगी हार, ओ मेरे काग...

अंगुली में तेरे पहनाऊ अँगूठी

चाँदी के करवा दू पंख, ओ मेरे काग...

जब आ जाए घर मेरे पिया

तेरे उड़ने को शगुन बतावे

जन्म-जन्म गुण गाऊँगी ओ मेरे काग...

जब आ जाए घर मेरे पिया।

विदाई पर (स्त्री) आधारित

उड़ जाऊँ ओरी पांख लगाय

उड़ जाऊँगी ओरी[1] पाँख लगाय
उड़ जाऊँ अरी पांख[2] लगाय,
चली जाऊँगी री माँ पाँख लगाय,
थोड़ा सा दणा[3] री पावणियां[4]
म्हारा बाबुल गढ़ावे सोना सांक्ल्याँ[5] (जंझीर)
म्हारी जीजी हो राज, मूड़े[6] तो बोल।
अम्बर जैसी कोयलड़ी॥
म्हारी काकाली गढ़ावे, सोना बोरलो[7],
म्हारी काक्या[8] हो राज, मूड़े तो बोल,
म्हे परदेशी चिड़कल्या[9]॥
म्हारी बीराजी घढ़ावै सीताराणी[10]
म्हारी भौजाया[11] हो राज, मूड़ें तो बोल,
अम्बर जैसी कोयलड़ी[12]॥
म्हारा पड़ौसी घड़ावे[13] जेवर
म्हारी पाड़ौसन हो राज, मूड़ें तो बोल
म्हें परदेशी चिड़कल्यां॥

रवि प्रकाश नाग के द्वारा जास्थानी गीत रा गजरो पुस्तक में संकलित

---

[1] ओरी- माँ

[2] पांख- पंख

[3] दणा- दिनो

[4] पावणियां- मेहमान

[5] सांवत्यां- जंझीर, चेन

[6] मूड़े- मुँह

[7] बोरलो- मांग टीका

[8] काक्यां- काकी

[9] चिड़कल्यां- चिड़िया

[10] सीताराड़ी- सीतारानी हार (राजस्थानी आभूषण)

[11] भौजायां- भाभी

[12] कोयलड़ी- कोयल

[13] घड़ावे- बनवाना

अनूदित लोकगीत

उड़ जाऊँगी ओ माँ पंख लगाए,

अरे माँ एक दिन चली जाऊँगी पंख लगाए,

अब रही थोड़े से दिन की मेहमान...

मेरे बाबा ने बनवाई सोने की चेन।

मेरी अम्मा का है राज, अरे मुँह से तो बोल,

मैं तो हूँ आकाश की कोयल के समान।

मेरे काकाजी ने बनवाय मांग टीका;

मेरा काकी का है राज, अरे मुँह से तो बोल

चली परदेशी चिड़कली

मेरे भाई ने बनवाया सीतारानी हार,

मेरी भाभी का है राज, अरे मुँह से तो बोल,

मैं तो हूँ आकाश की कोयल के समान।

मेरे पड़ोसियों ने बनवाए जेवर

मेरी पड़ोसनो का हैं राज, अरे मुँह से तो बोल,

चली परदेशी चिड़कली।।

जँवाई

ताल महरवा मात्रा

एक बार आओ जी जँवाई[1] जी पावणा[2]
थाने[3] सासू जी बुलावे घर आव[4], जँवाई लाड़कड़ा[5]
सासू जी ने मालूम होवे[6] म्हारे घरां भाई हुयो
म्हारे घरौ छै घडो[7] काम, सासूजी म्हाने माफ करो
एक बार आओ जी जँवाई जी पावणा
थाने ससुराजी बुलावे घर आव, जँवाई लाड़कड़ा
ससुरा जी ने मालूम होवे बाप म्हारो सैहर[8] गयो
म्हारे घरा बहुतेणो[9] काम ससुरा जी म्हाने माफ करो
एक बार आओ जी जँवाई जी पावणा
थाने साली जी बुलावे घर आव, जँवाई लाड़कड़ा
साली जी बुलावे छै तो, साडू जी ने भेजूँ छूँ[10]
म्हारा साडू जी नाचेला सारी रात, साली म्हाने माफ करो
एक बार आओ जी जँवाई जी पावणा
थाने लाड़ी जी बुलावे घर, जँवाई लाड़कड़ा
लाड़ी जी बुलावै छै तो, लाड़ो जी भी आवे छे
मैं तो जाऊं रे सासरिये आज साथीडा म्हाने माफ करो।

---

[1] जँवाई- दामाद

[2] पावणा- मेहमान

[3] थाने- तुम्हें

[4] आव- आओ

[5] लाड़कड़ा- प्यार दिखाना

[6] होवे- होगा

[7] घडो- बहुत

[8] सैर- शहर

[9] बहुतेणो- बहुस सा

[10] छूँ- हूँ

अनूदित गीत

एक बार आयो तो जँवाई जी जरा

तुम्हे सासू जी बुलावे घर आ, जँवाई प्यार दिखा

सासू को मालूम होगा मेरे घर भाई हुआ

सो मेरे घर है काम बहुत, सासू मुझे माफ करो

एक बार आयो तो, जँवाई जी जरा

तुम्हें ससुराजी बुलावे घर आ, जँवाई प्यार दिखा

ससुरा को मालूम होगा, बाप मेरे शहर गया

सो मेरे घर है काम बहुत, ससुरा जी मुझे माफ करो

एक बार आओ तो, जँवाई जी जरा

तुम्हें साली जी बुलाते घर आ, जँवाई प्यार दिखा

साली जी ने मैं बुलाया तो, मैं भेजूँ साडू जी को

मेरा साडू नाचेगा सारी रात, साली जी मुझे माफ करो

एक बार आओ तो.....

तेरी दुल्हन जी बुलाते घर आ, जँवाई प्यार दिखा

अब दुल्हन ने है बुलाया, दुल्हा भागा चला आया

मैं तो चला सासरिया, साथी रे मुझे माफ करो।

पोदीनो

माथा पे ल्याई केबड़ो[1] झोली में ल्याई हरियो पोदीनो,

लुड[2] जारे हरिया[3] पोदीना

तेनै सिल्ल[4] पेरे बुटाऊँ[5] रे हरियो पोदीना

क्यारा[6] में बाऊँ केबड़ो, खेता में बाऊँ हरियो पोदिनो

ससुरा जी ने भावे केबड़ो

सासू जी ने भावे हरियो पोदिनो,

लुड जारे...

जेठ जी ने भावे केबड़ो

जिठ्याणी ने भावे हरियो पोदिनो

लुड जारे...

संकलन : रवि प्रकाश नाग ताल महरवा मात्रा राग पहाड़ी

---

[1] केबड़ो- केवड़ा

[2] लुड- झुकना

[3] हरिया- हरा-भरा

[4] सिल्ल- सिल्लबट्टा

[5] बुटाऊँ- पीसना

[6] क्यारा- क्यारी

अनूदित गीत

माथा पे लाई केबड़ा, झोली मे लाई हरिया पोदीना

झुक जाए रे हरिया पोदीना

तुझे सिल्ल पर बँटू रे हरिया पोदीना

क्यारी में बोऊँ केबड़ा,

खेते मे बोऊँ हरिया पोदीना

झुक जाए रे हरिया पोदीना

ससुर जी ने भावे केबड़ा

सासू जी ने भावे हरिया पोदीना

झुक जाए रे हरिया पोदीना

जेठ जी ने भावे हरिया पोदीना

जेठानी ने भावे केबड़ा

झुक जाए रे हरियो पोदीना।

शिक्षा प्रद पद (लोकगीत)

आरे... खोटो[1] कलियुग आगो दम घुटगो[2] मईया

बापन को

खोटो कलयुग आगो दम घुटगो मईया बापन को

अब तो सब संसार मंजुरा[3] होगा रांडन[4] को औ...

माया का लोभी माया जोड़े, खे पाछे[5] पच्छतावेगो[6]

आगे आवेगी चौरासी चक्कर खावेगे-(2)

माया का लोभी माया जोड़े खे पाछे पच्छतावेगो...

गायिका : रेखा मीणा

---

[1] खोटो- पापी

[2] घुटगो- घुटना

[3] मंजुरा- मजदूर

[4] रांडन- औरत (बुरी औरत)

[5] पाछे- बाद में

[6] पच्छतावेगो- पछताएगा

अनूदित लोकगीत

आ आ रे पापी कलयुग आ गया, दम घुट गया माँ-बापों का

पापी कलयुग...

अब तो सब संसार, मजदूर हो गया बीबी का

माया का लोभी माया जोड़े, वो पीछे पछताएगा

आगे आके चौरासी का चक्कर में पड़ जाएगा

माया का लोभी माया जोड़े, वो पीछे पछताएगा।

बाल विवाह पर आधारित

पहला पढ़ा लिखार, करद्यो पगा[1] पै खड़ा।
म्हारा मन की बात बतारयो छूं[2], कौनें[3] मारर्यों एड़ा[4],
कौने मारर्यों एड़ा॥
खैबा[5] की कौ मानैं[6], दुनिया हैरी छः[7] बैरी।
मीणा मत परणाओ छोर्यां[8] नै, अठ्ठारह साल सूं पहला,
अठ्ठारह साल सू पहला॥
बालकां का माथा माड़े[9], बोझ धरदे[10] छः।
पढ़बा लिखबा की उम्र में, दुनिया ब्याब करदे छः,
दुनिया ब्याव करदे छः॥
छोटी सी को ब्याव करदे, सासरै[11] जावै।
कांची[12] उम्र में हैगी रोगल[13], सुख चैन कौ पावै,
सुख चैन कौ पावै॥
बन्द करो दहेज, मीणा मत देवो गाड़ी।
चोखी[14] लागै फेरा पै अठारा[15] साल की लाड़ी[16]
अठारा साल की लाड़ी।

गायक : गोपाल लोटन

---

[1] पगा- पैर
[2] छूँ- हूँ
[3] कौने- नहीं
[4] एड़ा- मजाक
[5] खैबा- कहने की
[6] कौभानै- न मानना
[7] छः- है
[8] छोर्या- छोरी
[9] माले- ऊपर
[10] धरदे- रख दे
[11] सासरै- ससुराल
[12] कांची- कच्ची
[13] रोगल- रोगी
[14] चोखी- अच्छी
[15] अठारा- अट्ठारह
[16] लाड़ी- दुल्हन

अनूदित गीत

पहले पढ़ा-लिखाकर, कर दो पैरो पर खड़ा

यह है मेरे मन की बात, नहीं है कोई मजाक

नहीं है कोई मजाक

ना माने कहने कोई, दुनिया हो गई बैरी।

मीणा न करो ब्याह, अट्ठारह साल से पहले

अट्ठारह साल से पहले।।

बालकों के माथा पर, बोझ रख दिया सारा

पढ़ने लिखने की उम्र में, ब्याह कर दिया हमारा

दुनिया कर दे है ब्याह।।

छोटी सी उम्र में ब्याह किया हमारा, ससुराल पड़ा जाना

कच्ची उम्र होगी रोगीली, सुख चैन भी खोया

सुख-चैन भी खोया

बंद करो दहेज, मत देना गाड़ी

अच्छी लगे है फेरा पर, अट्ठारह साल की लाड़ी (दुल्हन)

अट्ठारह साल की लाड़ी।

भ्रुण हत्या

(ढांचा गीत)

आ आ... समय बिगड़गो भायेला[1], जमानों बड़ो घाती[2] रे...

अब देख समय बिगड़गो भायेला, जमानों बड़ो पापी रे...

ओरे बेटी पेट में मरवाबें, बाबुल खोटो[3] रे...

अरेरे समय बिगड़यो भायेला, जमानों भरो घाती रे

बेटी पेट में मरवावे, जमानो भारो पापी रे।

हाय शर्म नहीं बाबुल तोरे[4], कौ डरपयो[5] बदनामी सूँ[6]

दुनिया जात भार करदेगी, हुक्का पाणी सूँ

आरे मत मरवाओ बेटी ने करो मत खोटी करणी[7] रे-(2) (हरगीज़)

हरगीज़ मत मरवाओ बेटी ने, मत करो करणी रे...

मईयाँ-बापन[8] को पाडेगी[9], पीछे धरणी[10] रे..

आ आ समय बिगड़गो भायेला, जमानो बड़ा घाती रे॥

गायिका : लखनबाई मीणा

---

[1] भायेला- यार, दोस्त

[2] घाती- मन बात दबा कर रखने वाला

[3] खोटो- बैरी, दुश्मन

[4] तोरे- तेरे

[5] डरपयो- डरा

[6] सूँ- से

[7] करणी- कार्य, काम

[8] मईयाँ-बापन- माँ-बाप

[9] पाडेगी- पालेगी

[10] धरणी- धरती समान बेटी

अनूदित गीत

आ आ समय बिगड़ गया यारो भारी, जमानो बड़ा घाती रे

अब देख यारो समय बिगड़ गया भारी, जमानो बड़ा पापी रे

आ.... आ पेट में मरवावे बेटी, बाबुल बड़ा बैरी रे

आ आ समय बिगड़ गया यारो

बेटी पेट में मरवावे, जमाना बड़ा बैरी रे

हाय शर्म नहीं बाबुल तेरे, नहीं डरा बदनामी से,

दुनिया जात भर कर देगी, मुश्किल होगा हुक्का पानी भी

आरे मत मारवाओ बेटी ने, करो मत खोटा काम रे

हरगीज़ मत मरवाओं बेटी, मत करो पापी काम रे

माँ-बाप को पालेगी, आगे-पीछे बेटी रे...

आ आ समय बिगड़ गया...

स्त्री की विरह व्यथा स्थिति पर आधारित

अब ले चाल ड्यूटी पे

नहाथायी धोयायी कड़ा[1] खुलायायी

अब लेचाल[2] ड्यूटी पे....(2)

पून्यू[3] में मत चाल जो म्हारी सजना, पून्यू में पूरो चाँद

पिड़वा[4] में मत चाल म्हारी सजना, पिड़वा में छः पिंड़ दोष

दोज में मै कईयाँ[5] ले चालू म्हारी सजना, दोज में दोनों दिण।

तीज में कौ ले चालूयूँ म्हारी सजना, तीज में तीनों लोक।

डीयो डीयो[6] नहायायी धोहयायी... ड्यूटी पे

अब लेचाल ड्यूटी पे...

चौथे में मत चाले म्हारी सजना चौथे में चारू वेद

पाँचे में भी मैं कईयाँ ले चालूँ, पाँचे में पाचूँ पांडव हुए।

और छठे मैं भी कईयाँ चलेगी, छटे में छठा नारायण।

साते मे मत चाल जो म्हारी सज्जा, साते में सात समंद्र

छोरा रे...

लारा[7] किने लारा-लारा कड़ा खुलाया, लारा किने ले गयो लारे...

छोरा रे ....

नहायायी धोहयायी... ड्यूटी पे

आठे मत चाल जो, आठे में आठ कुड़ी और नौ नाग।

---

[1] कड़ा- राजस्थान में औरतों द्वारा पैरों में चाँदी के भारी आभूषण

[2] लेचाल- लेकर चल

[3] पून्यू- पुर्णिमा

[4] पिड़वा- पुर्णिमा के दूसरे दिन

[5] कईयाँ- कैसे

[6] डीयो- पिया

[7] लारा- साथ

अनूदित गीत

नहाई-धो आई कड़ा खुलवा आई

अब तो ले चल ड्यूटी पर

'पूर्णिमा' में मत चल मेरी सजना, पूर्णिमा में है पूरा चाँद

'पिड़वा' में मत चाल मेरी सजना, पिड़वा में है पिण्ड दोष

'दोज' में मैं कैसे ले चलूगां सजना, दोज में दोनों दिण

'तृतीया' में नहीं ले चालूगां मेरी सजना, तीज में है तीनों लोक

डीयो डीयो... नहाई धोआई, कड़ा खुलवा आई

अब तो ले चल ड्यूटी पर

'चतुर्थी' में मत चल मेरी सजना चौथे में है चार वेद

'पंचमी' में भी मैं कैसे चलेगी, पाँचे में है पाँचू पांडव

और छठे में भी कैसे चलेगी, छठे में है छठा नारायण

सप्तमी में मत चल जो मेरी सजना, साते में सात समुद्र

संगी साथी ने संग-संग कड़ा खुलवाया

संगी साथी ने ले गए सारे छोरा रे...

छोरा रे या तो मुझको ले चल, या तेरी नौकरी छोड़ा...

नहाई-धो आई...

नौवमी में कौ ले चालागो, नौमी[1] में री नौ नाग।

दसे में कइयाँ ले चालूँ, दसे में दस अवतार।

छोरा रे... खे तो लारे लेचालूँ, ग्यारीस ग्यारह रुद्र हुए ए।

बारस मे तो कईया चालेगी, बारस में बारा रास

तेरस मे तो कईयाँ चालेगी, तेरस मे तेरहा राणी उसका शिव पे घेर।

चौदस में मत चाले बावड़ी, चौदस में चौदा चक्कर

छोरी रे रहगी रे, आखा तीज के मोड़े...(2)

बैठी-बैठी दुब खोदे, खेत के ढौड़े

नहायायी धयोयायी...

मावस में भी अब कियाँ चालूँगे, मावस खुद कुवाँरी

केहत कबीर सुनो भाई साधु, लो दुनिया तो पच-पच मरगी[2]

तू छोरी एकेली रहेगी आखा तीज के मोड़े[3]

नहायायी धोयायी...

गायक : विष्णु मीणा मेहर कैसेट्स से सुनकर लिपिबद्ध किया गया

---

[1] नौमी- नवमी

[2] पच-पच मरगी- कह-कहकर मरगई

[3] मोड़े- चक्कर में

अब तो ले चल ड्यूटी पर

'अष्ठमी' मत चलना, आठे में आठ कुड़ी

नवमी में नहीं ले चलूगां नौवी में नौ नाग

'दसे' में कैसे ले चालूँ, दसे में दस अवतार

छोरा रे या तो मुझको ले चल या तेरी नौकरी छोड़ा

बारस में तो कैसे चलेगी, बारस में बारह रास

तेरस में तो कैसे चलेगी, तेरस में तेरह रानी जिसका शिव पर घेर

चौदस में मत चाले बावली, चौदस में चौदह चक्कर

छोरी रे रहगी तू तो अकेली आखा तीज के चक्कर में

बेठी बैठी घास खोदे, बैठ खेत के किनारे

नहाई धो आई 'कड़ा' खुलवा आई

अमावस में भी अब कैसे चलेगी, अमावस खुद कुँवारी

कहत कबीर सुनो भाई साधु, लो दुनिया तो कह-कह मरगी

तू छोरी अकेली रहेगी आखा तीन के चक्कर में,

नहाई-धो आई कड़ा खुलवा आई।

आधुनिकता पर आधारित

गायन-शैली

(ढाँचा / जोड़ू गीत)

हा आ.... रे डिजे[1] बाजे शादी में सुपाई[2] नाचे थाणा[3] का- 2
अरे देखे रे डिजे बाजे शादी में सुपाई नाचे थाणा का
तोरण[4] मारा पेलाई[5] कर दिया टूक[6] ठिकाणा[7] का- 2
अब हट जा ताऊ चलो रे भाई गाणो, पिटवा दई बारात
और चाचा ताऊ नाच रहे अरे चाचा ताऊ नाच रहे है पिके मदिरा साथ
ओ... चालाणा[8] चलगो शादी में डिजे पे...
सुपाई नाचे थाणा का

गायिका- लखनबाई मीणा

---

[1] डिजे- डिजा (डांस फ्लोर)

[2] सुपाई- सिपाही

[3] थाणा- थाना

[4] तोरण- तोरन (दुल्हा के दुल्हन के यहाँ बारात ले जाना पर तोरन मार कर अन्दर ले जाया जाता है)

[5] पेलाई- पहले ही

[6] टूक- टुकड़ा

[7] ठिकाणा- रिश्तेदारी

[8] चालाणा- चलन

अनुदित गीत

हा आ... डिजा बाजा शादी में, नाचे सिपाही थाना का।

अरे देख डिजा बाजा शादी में, नाचे सिपाही थाना का।

तोरन मारा पहले ही, हो गए टुकड़े रिश्तेदारी का

अब हट जा ताऊ चाल रे भाई गाना पिटवा दी गई बारात

चाचा ताऊ संग नाच रहे हैं पीकर दारु साथ

ओ... ऐसा चलन चला रे शादी, डिजा का

नाचे सिपाही रे थाना का।

शिक्षा प्रद पद (लोकगीत)

ढूढाड़ी लोकगीत

आरे... खोटो[1] कलियुग आगो दम घुटगो[2] मईया
बापन को
खोटो कलयुग आगो दम घुटगो मईया बापन को
अब तो सब संसार मंजुरा[3] होगा रांडन[4] को औ...
माया का लोभी माया जोड़े, खे पाछे[5] पच्छतावेगो[6]
आगे आवेगी चौरासी चक्कर खावेगे-(2)
माया का लोभी माया जोड़े खे पाछे पच्छतावेगो...

गायिका : रेखा मीणा

---

[1] खोटो- पापी

[2] घुटगो- घुटना

[3] मंजुरा- मजदूर

[4] रांडन- औरत (बुरी औरत)

[5] पाछे- बाद में

[6] पच्छतावेगो- पछताएगा

अनूदित लोकगीत

आ आ रे पापी कलयुग आ गया, दम घुट गया माँ-बापों का

पापी कलयुग...

अब तो सब संसार, मजदूर हो गया बीबी का

माया का लोभी माया जोड़े, वो पीछे पछताएगा

आगे आके चौरासी का चक्कर में पड़ जाएगा

माया का लोभी माया जोड़े, वो पीछे पछताएगा।

स्त्री शिक्षा से संबंधित

आपणो उद्धार

(ढाँचा गीत)

साथिड़ा[1] रै शिक्षा सू करो आपणो[2] उद्धार
सुण[3] कर सब नर नार जागो, घर सूँ घर परिवार जागो
जण-जण की सुणल्यो[4] पुकार,
साथिड़ा रे शिक्षा सूँ... करो आपणो उद्धार।
छोटा-छोटा टाबरियां[5] नै स्कूलों सूँ जोड़ो,
खेती क्यार और गया, भैंस को काम कराणो छोड़ों
घर बैठ्या गंगा जी आई, मतना मुहंडो[6] मोडो
पढ़बा को उमर छः ज्याँकी, काई न रह जाबै बाकी।
अरे पढ़-पढ़ कर बणजो बड़ा-बड़ा ओहदेदार
साथिड़ा रे...
खिलता फूल कहावै बालक, बिना शिक्षा मुरझासी,
कदम-कदम पर ठौकर खावै, दुनिया करसी हाँसी
थारी ई गलती के कारण, जीवन भर दुःख पासी
चेत[7] सकै तो चेत बावला, बच्चा सूँ कर हेत बाबला
शिक्षा को आई छः बाहार,
साथिड़ा रे...
शिक्षा का बल सूँ दी देखो, उजालो होवै,
अगली पीढ़ी सुधरै थारी, मत ना मौको खोवै,
माँ बाप ही टाबरियों कै, बीज ज्ञान को बोवै
आओ मिलकर हाथ बढ़ाओ, समाज नै शिक्षा को पाठ
हो जावै मीणा समाज को उद्धार
साथिड़ा रे...

गायक : प्रभु नारायण मीणा

---

[1] साथिड़ा- साथी

[2] आपणो- अपना

[3] सुण- सुन

[4] सुणल्यो- सुन लो

[5] टाबरियां- संतान

[6] मुहंडो- मुँह

[7] चेत- जागना

अनूदित गीत

साथी रे शिक्षा से, करो अपना उद्धार

सुन कर सब नर-नार जागो, और जागो घर परिवार

जन-जन की सुनो पुकार,

साथी रे शिक्षा से, करो अपना उद्धार

छोटे छोटे बालकों ने स्कूल से जोड़ो

खेत-क्यारी और भैंसो का काम, करवाना छोड़ो

घर बैठा गंगा नहाओ, मत मुँह मोड़ो

पढ़ने की उम्र है इनकी, कोई न रह जाए बाकी

अरे पढ़-पढ़ कर बन जाआगे अफसर

साथी रे शिक्षा से करो, करो अपना उद्धार

खिलता फूल कहलाता बालक, बिना शिक्षा मुरझाते

कदम-कदम पर ठोकर खावै, दुनिया भी उड़ाती हँसी

तेरे गलती के कारण, जीवन भर दुखी होए

जग सको तो जग लो बावला, बालक से कर हेत बावला

शिक्षा की आई है बहार

साथी रे...

शिक्षा के बल पर, हुआ रे उजाला

अगली पीढ़ी में हो सुधार, मत मौका खोओ इस बार

माँ बाप ही बच्चों में, बीज ज्ञान का बोते

आओ बढ़ा कर हाथ मिला, समाज को दे शिक्षा का पाठ

हो जाए मीणा समाज का उद्धार

साथी रे...

स्त्री शिक्षा से संबंधित

आ... रें अनपढ़ बनगई मंत्री आ देख गोलमा काकी[1] रे...

ओ पीड़ी[2] लुगड़ी[3] दुनिया में सबड़े छा गई रे...

अनपढ़ बनगई मंत्री आ देख गोलमा काकी रे...

ओ पीड़ी लुगड़ी दुनिया में सबसे छा गई रे...

पोलिंग भीतर[4] जाबे तो मैडम, चिह्न कतरनी[5] कों...

पीड़ी लुगड़ी के नीचे लहंगा-पन्नी[6] कों

गायिका : रेखा मीणा

---

[1] काकी- चाची

[2] पीड़ी- पीली

[3] लूगड़ी- ओढ़नी

[4] भीतर- अंदर (या किसी जगह पर)

[5] कतरनी- कैंची

[6] लहंग-पन्नी- एक प्रकार का लहंगा

अनूदित गीत

आ रे अनपढ़ बन गई मंत्री, रे गोलमा काकी

ओ. पीली लुगड़ी (चुनरी) सब दुनिया में छा गई रे

अनपढ़ बन गई...

ओ पीली लुगड़ी (चुनरी)

पोलिंग भीतर जाए मैडम, है चिह्न कैंची को

पीली 'लुगड़ी' के नीचे, लहंगा 'पन्नी' को।

स्त्री शिक्षा पर आधारित

आरे भाई रे बिना पढ़ी तो अधिकारी के देदई[1] रे

अरे अधिकारी के देदई रे

ड्यूटी पे से आतेई[2] सब दिन पागेल[3] खेबै[4] रसिया[5] रे...

भाई रे बिना पढ़ी तो

अरे पढ़ो-लिखो मेरी बहनाओ सब जाजो रे सकूल

अरे पढ़ो-लिखो मेरी बहनो, सब जाजो रे सकूल

और पढ़बा[6] सूँ तो लागै[7] नौकरी, मैडम नाम धरईयो[8] रे भाई रे

बिना पढ़ी तो अधिकारी के अरे अधिकारी के देदई

गायिका : लखनबाई मीणा

---

[1] देदई- दे दी

[2] देदई- दे दी

[3] पागेल- पागल

[4] खेबै- कहते

[5] रसिया- प्रियतम

[6] पढ़बा- पढ़ने

[7] लागै- लगे

[8] धरईयो- रखना

अनूदित गीत

अरे बिना पढ़ी अफसर को दे दी

अरे अफसर को दे दी

ड्यूटी से आते ही, सारे दिन पागल-पागल कहते पिया

भाई रे बिना पढ़ी अफसर को दे दी

अरे पढ़ी-लिखी मेरी बहना, सब जाओ स्कूल

अरे पढ़ी-लिखो मेरी बहना, सब जाओ स्कूल-2

और पढ़ने से लगती नौकरी

मैडम है कहलाती

रे भाई रे बिना पढ़ी तो अफसर के दे दी

अरे अफसर के दे दी।

स्त्री शिक्षा से संबंधित

मैं तो पढ़ूंली भरतार

म्हारी सहेल्या[1] रै साथ मैं तो पढ़लू भरतार[2],
मैं तो पढ़ूली भरतार अनपढ़ कोनै रहूंली सा।
कक्को[3] भी सीखूली[4] मैं तो गिणती भी सीखूली
सारो सीखूली हिसाब, अनपढ़ कोनै रहूंली सा।
पढ़बा को अभियान देखो चलाई सरकार देखो,
गांव में खोल्या 'आखर धाम'[5], अनपढ़ कोनै रहूंली सा।
म्हारी आड़ोसन[6] भी जाय म्हारी पाड़ोड़ण भी जाय
मुझसूं रहियो कौने[7] जाय, अनपढ़ कोनै रहूंली सा।
म्हारी दोराणी[8] भी जाय म्हारी जेठाणी भी जाय,
संग में नणदल[9] बाई त्यार, अनपढ़ कोनै रहूंली सा।
म्हाया फूलजी भरतार, उण्डै[10] कौने लागे दाम,
मिले पोथी[11] मुफत मोय अनपढ़ कोनै रहूंली सा।

गायक : रामफूल मीणा

---

[1] सहेल्य- सहेली
[2] भरतार- पति
[3] कक्को- व्यंजन
[4] सीखूली- सीखती हूँ
[5] 'आखर धाम'- महिलाओं को पढ़ाने वाली संस्था
[6] आड़ोसी- पड़ोसी
[7] कौने- नहीं
[8] दोराणी- देवरानी
[9] नणदलबाई- नन्द
[10] उण्डै- उन्हें
[11] पोथी- किताब

अनूदित गीत

मैं भी पढ़ लूँ

मेरी सहेली के संग-संग, मैं भी पढ़ लू बालम
मैं तो पढ़ लूँ बालम, अनपढ़ नहीं अब रहा जाए
क, ख भी सीखूँगी, मैं तो गिनती भी सीखूँगी
सारा सीखूँगी हिसाब, अनपढ़ नहीं अब रहा जाए
पढ़ने का अभियान भी, देखो चलाया सरकार ने
गाँव मं खोला 'आखर धाम' अनपढ़ नहीं अब रहा जाए
हमारी आड़ोसन भी जाए, हमारी पड़ोसन भी जाए
अब तो मुझसे रहा नहीं जाए, अनपढ़ नहीं अब रहा जाए
मेरी देवरानी भी जाए, मेरी जेठानी भी जाए
साथ में जाने को ननंद भी हो रही तैयार, अनपढ़ नहीं अब रहा जाए
मेरा फूल सा बालम, उधर लगे न कोई दाम
मिले कागज-कालम मुफ्त में अनपढ़ नहीं रहा जाए।

दहेज से संबंधित

पढ़यों लिख्या होकर भी
क्यूँ नै छोड़ी उल्टी[1] लीक[2] जी।
मेहनत सूँ[3] कमाकर खाजाओ,
मत मांगो भीख जी।।
दहेज लेणो[4] इज्जत बनाबो,
कतई न ठीक जी।
गरीब को मिनख[5] पणो[6]
बिगाड़ो मत ना
चौखो[7] लेवो सीख जी।।
करो बिना देहज विवाह
खिल जाये केसरी क्यारी
सुधार करो नर नारी
मिट जाय समस्या सारी।।

गायक : कालू राम मीणा

---

[1] उल्टी- गलत
[2] लीक- रेखा
[3] सूँ- से
[4] लेणो- लेना
[5] मिनख- मनुष्य
[6] पणो- पन
[7] चौखी- अच्छी

अनूदित गीत

पढ़ा-लिखा होकर भी

क्यों न छोड़ी उल्टी सीख जी

मेहनत से कमाकर खाओ

मत मांगों भीख जी

दहेज लेकर इज्जत बनाना

ये नहीं ठीक जी

गरीब की दशा

मत ना बिगाड़ो जी

ये तो अच्छी सीख जी

करो विवाह दहेज बिना

तो खिल जाए खुशियाँ की क्यारी

सुधार करो नर-नारी

मिट जाए समस्या सारी।।

महिला सशक्तिकरण पर 'ढांचा गीत' लोकगीत

राजी बोल्याँ[1] जा रै राजन्ती,
आगो[2] राज[3] गोलमा को।
राजी रह रै- बावड़ी[4], छः[5] रै गोलमा को राज।
पढ़ी लिखी छः री बावडी, ठाली[6] करे छः लाज॥
तोनै[7] हद कर दी महुवा[8] मै,
आरी भई गोलमा काकी।
महुवै गोलमा काकी नै,
काटी डोर कतणी[9] सूँ[10]
थारे[11] लैर[12] की डोकर्यां[13] तो फैर घर मैं चाखी[14]
खूब जीतगी महुवा सूँ तू वाह रै गोलमा काकी
दोन्यू जणां[15] ने जोड़ा मै,
एक रिकाड़ तोड्यो छः
काकी देगी रे असतिफो[16],
घुसगो शेर तबारी[17] मै।

गायक : विष्णु मीणा (मेहर कैसेट्स)

---

[1] बोल्यां- बोला जा

[2] आगो- आ गया

[3] राज- शासन

[4] बावड़ी- बावली/पगली

[5] छः- है

[6] ठाली- बेकार

[7] लाज- घूँघट

[8] तोनै- तुमने

[9] महुवा-दौसा जिला का एक नगर

[10] कतणी- कैंसी

[11] सूँ- से

[12] थारै- तुम्हारे

[13] लैर- साथ

[14] डोकर्यां- बुढ़ी जन

[15] चाखी- चक्की

[16] दोन्यू जणां- दोनो स्त्री-पुरुष

[17] असतिफा- इस्तीफा

अनूदित गीत

जय बोला रे राजन्ती

आ गया शासन गोलमा का

खुश हो जा बावली, अब है गोलमा का राज

पढ़-लिकर कर भी, तू करती है घूँघट

तुने तो हद कर दी, महुवा में

अरे गोलमा काकी

महुवा में गोलमा काकी ने

काटी डोर कैंची से सबकी

तेरे संग-साथ तो घुमाए घर में चक्की

खूब जीती महवा से तू वाह रे गोलमा काकी

जीते दोनों जोड़े से

अच्छा रिकॉर्ड टूटा है

काकी देगी रे इस्तीफा

जबकि शेर घुस गया गुफा में।

महिला सशक्तिकरण पर आधारित

बागा बैठी बनड़ी[1], पान चाबै फूल सूंधे,
करै ये बाबा जी जी सूँ बीनती
बाबाजी देश देता, परदेश दिज्यो
म्हारी[2] जोड़ी रो वर हेर[3] जो॥
उसी के संग ब्याहजो बाबा
जों कबूतर के जोड़े की तरह
रहबे हरदम साथ
म्हारी जोड़ी रो वर हेर जो बाबा॥

गायिका: रेखा मीणा, उम्र-26,
ग्राम- मांदल

---

[1] बनड़ी- दुल्हन
[2] म्हारी- हमारी
[3] हेर- ढूँढना

अनूदित गीत

बाग में बैठी बन्नी, पान चबाए और सूंघे फूल

करे है विनती बेटी माँ बाबुल से

देश के बदले चाहे परदेश देना

पर मेरी जोड़ी का सा खोजना

उस ही से ब्याहाना बाबुल

जो कबूतर के जोड़े सा हरदम संग-संग

मेरी जोड़ी सा ही खोजो मेरे बाबुल।।

महिला सशक्तिकरण पर आधारित

गायन शैली- पद

नयो बण्यो[1] इस्कूल[2]

जेको[3] सीदो रस्तो (रास्ता)

पढ़वा मैं भी चालूँ सायब[4]

यारो ले... रे बस्तो (स्कूल बैग)

वोट देबा चालेंगा

जोड़ा सूँ[5] जूती खोलेगा।

---

[1] बण्यों- बना

[2] इस्कूल- स्कूल

[3] जेको- जिसका

[4] सायब- साहब

[5] सूँ- से

अनूदित गीत

नया बना है स्कूल,

जिसका है सीधा रास्ता,

मैं भी चलूंगी सहाब

लेकर तेरा बस्ता (बैग)

वोट देने जाएंगे

जोड़े से जूतियाँ खोलेंगे।

भ्रष्ट राजनेताओं पर आधारित लोकगीत

अरे देश-म्हारे[1] में तुम, देखो बापु महात्मा गाँधी
सच्चाई पर अड़ कर उनने[2] देश को दिन्ही[3] आज़ादी
अरे आजकल का नेता देश की कर लिन्ही[4] बर्बादी
और नहीं जाने कक्खा[5] की पूँछ पर फैरे धोड़ी खादी
इन सबको खाबो चईए, कोई सा मे कसर हत[6] नई है
ये खाबा का डांकी[7], छोड़े नई कोई में बाकी
चाहे होवे काका-काकी, ऐसी तैसी कर दे बाकि
देखो रहते जेंटलमैन, हो जाणे ये हैं जैसे चेयरमैन
जेब में टांके[8] फोनड़ेण[9] पेन, इनसे कैसे तो बचे हे राम
अरे है के ऐसे नेता भारत मे हे हे...

गायक : हरसाय मीणा

ग्राम : कैमडा जिला : करौली (राजस्थान)

---

[1] म्हारे- हमारे
[2] उनने- उन्होंने
[3] दिन्ही- देदी
[4] लिन्ही- लेली
[5] कक्खा- व्यंजन
[6] हत- है
[7] डांकी- राक्षस
[8] टांके- टाँगना
[9] फोनडेण- फाऊनटेन पेन

अनूदित गीत-

अरे देश-हमारे में तुम देखो, बापू महात्मा गाँधी
सच्चाई पर अड़ कर, देश की दी आज़ादी
अरे आजकल के नेता, देश की कर दी बर्बादी
और नहीं जाने क, ख की पूँछ, पर पहने उज्ज्वल खादी
इन सबको खाने को चाहिए, कोई कमत्तर नहीं है,
ये खाने के भूखे, छोड़े नहीं कोई में बाकि
चाहे होए चाचा-चाची, बाकि कर दे ऐसी-तैसी
देखो बनकर रहते जेंटलमैन, हो जाने कहीं के चेयरमैन
जेब में टांके फाऊनटेन पेन, इनसे कैसे तो बचे हे राम
अरे हे... ये ऐसे नेता भारत में हे हे...

मीरा पद

चांदि[1] कि दिवार को तोड़ों, मीरा ने घर छोड़ दिया।
एक राजा कि रानी ने गिरधारी से नाता[2] जोड़ लिया॥
नाचे गावे मीरा बाई, लेकर कर[3] में इकतारा।
पग[4] में घुँघरू गले में माला, भेष जोगिया[5] का धारा॥
चांदि कि दिवार...
हर गायनमें बसै कन्हैया, भक्ति भाव का स्वाद भरा।
ज्योती में ज्योती मिलाली तन से नाता जोड़ दिया॥
चांदि कि दिवार...
सास कहे कुलनासी मीरा लेके[6] गले में फाँसी रे।
कैसे जीना होगा मैरा जग करत हाँसी[7] रे॥
चांदि कि दिवार को तोड़ों मीरा ने घर छोड़ दिया
एक राजा कि रानी में गिरधारी से नाता जोड़ लिया
चांदि कि...

गायिका : पद्मावती मीणा
ग्राम- मौरेड़, जिला- दौंसा

---

[1] चांदि- चाँदी
[2] नाता- रिश्ता
[3] कर- हाथ
[4] पग- पैर
[5] जोगिया- जोगिन (वैरागिनी)
[6] लेके- लेकर
[7] हाँसी- हँसी

अनूदित गीत

चांदी की तोड़ दीवार, मीरा ने छोड़ दिया।

एक राजा की रानी ने, गिरधर से जोड़ लिया।।

नाचे गावे मीरा बाई, ले हाथ में इकतारा

पाँव में घुँघरू गले में माला, भेष जोगिन का धारा

चांदी की तोड़...

हर गीत में बसा कन्हैया, भक्ति का स्वाद है भरा

ज्योती से ज्योती मिलाई, तन से नाता जोड़ लिया

चांदी की तोड़...

सास कहे कुलनासी, मीरा लेकर गले में फाँसी रे

कैसे जीना होगा मेरा, जग करता हँसी मेरी रे

चांदी की तोड़...

एक राजा की...

चांदी की तोड़...

मीरा पद (भजन)

ओ... कईयाँ[1] फैरूँ[2] राम थारी माड़ा[3] ने, ... (2)

आरी या माड़ा मीरा ने फेरी..... (2)

अरी या माडा मीरा ने फेरी-(2)

अरे वाने जहर का प्यालो पी गाल्यो[4]

औ कईयाँ फैरूँ.....मीरा ने फेरी

अरे या माडा हनुमत[5] ने फैरी,

अरे बाने कसर नहीं छोड़ी सीता का पतो लगावा में,

कईयाँ फैरूँ राम थारी माड़ा ने,

आरो या माड़ा मीरा ने फेरी...।

गायिका : रेखा मीणा

---

[1] कईयाँ- कैसे

[2] फैरूँ- फिराऊँ

[3] माड़ा- माला

[4] गाल्यो- लिया

[5] हनुमत- हनुमान जी

अनूदित गीत

ओ कैसे फेरू राम तुम्हारी माला को-2

अरी या माला मीरा ने फेरी

अरे उसने जहर का प्याला पीया

औ कैसे फेरू राम...

अरे मा माला हनुमत ने फैरी

अरे उसने सीता का पता लगाया

ओ कैसे फेरू राम तेरी माला ने।

सीता पर आधारित (भजन)

वन कि विपक्ती बड़ि भारी मेरे संग चले मत प्यारी।

वन कि विपक्ती बड़ि भारी मेरे संग चले मत प्यारी॥

उस वन से सीया[1] पैदल चलोगी उस वन मे प्यारी पैदल चलोगी।

न मीलेगी रथ सवारी, यही रहजावों राज दुलारी,

उस वन सीया भुखी रहूँगी उस वन में प्यारी भूखी रहोगी।

ना मीलेगो हलवा पूड़ी घर रह जावों राज दुलारो

उस वन में स्वामी भूखी रहूँगी इन बन में पति भूखी रहूँगी

न चाहे हलवा पूड़ी तेरे संग चलेगी प्यारी

उस वन सीया प्यासी रहोगी; उस वन प्यारी प्यासी रहोगी।

ना मिलेंगे झरना झारी[2], मत चले मेरे संग प्यारी

उस वन सीया झूपड़ी में रहोगी, उस वन प्यारी झूपड़ी में रहोगी।

ना मिलेंगे महल अटारी मेरे संग चले मत प्यारी।

उस वन मे सीया इकली रहोगी-(2)

ना मीलेगी अम्मा प्यारी मेरे संग चले मत प्यारी वन...

गायिका : पद्मावती मीणा

---

[1] सीया- सीता

[2] झारी- लहर

अनूदित गीत

वन की विपत्ति बड़ी भारी, मेरे साथ चलो मत प्यारी

वन की विपत्ति बड़ी भारी, मेरे साथ चलो मत प्यारी

उस वन में सीता पैदल चलोगी, उस वन में प्यारी पैदल चलोगी

न मिल पायेगी रथ सवारी, यही रह जाओ राज दुलारी

उस वन में सीता भूखी रहोगी, उस वन में प्यारी भूखी रहोगी

न मिलेगा हलवा पूरी, घर रह जाओ राज दुलारी

उस वन में स्वामी भूखी रह लूँगी, इस वन में पति भूखी रह लूँगी

न चाहिए हलवा पूड़ी, तेरे साथ चलेगी प्यारी

उस वन में सीता प्यासी रहोगी, उस वन में प्यारी प्यासी रहोगी

न मिलेगा झरना-झारी, मत चले मेरे साथ प्यारी

उस वन सीता झोपड़ी में रहोगी, उस वन में प्यारी झोपड़ी में रहोगी

न मिलेंगे महल अटारी, मत चले मेरे साथ प्यारी

उस वन में सीता अकेली रहोगी, उस वन में प्यारी अकेली रहोगी

न मिलेगी अम्मा प्यारी मत चले मेरे साथ वन में प्यारी

सीता पर आधारित (भजन)

सीता रुंदन[1] मचावे बनवास, जन्म लियो लव-कुश ने।

सीता रुंदन मचावे वनवास, जनम लियो लव-कुश ने॥

आज म्हारा सुसरो दशरथ होतो-(2)

वे तो देते गाम[2] को दान, जन्म लियो लव-कुश ने।

सीता रुंदन...

आज अगर म्हारी सासु होती-(2)

वे देती गले का हार, जनम लियो लव-कुश ने।

सीता रुंदन...

आज म्हारो देवर लक्ष्मण होतो-(2)

वेतो लेते नेग[3] पे नेग जन्म लियो लव-कुश ने

सीतां रुंदन...

आज म्हारी दौराणी[4] जिठाणी होती-(2)

वे तो गाती मंगला[5] चार, जन्म लियो लव-कुश ने

सीता रुंदन...

गायिका : पद्मावती मीणा

---

[1] रुंदन- रोने की पुकार

[2] गाम- गाँव

[3] नेग- उपहार

[4] दौरानी- देवरानी

[5] मंगला- शुभ

अनूदित गीत

सीता नीर बहावे बनवास में जन्म लिया लव-कुश ने-(2)

आज मेरा ससुर दशरथ होते-(2)

वे देते गाँव-गाँव को दान, जन्म लिया लव-कुश ने

सीता नीर बहावे...

आज अगर मेरी सासु होती-(2)

वे देती गले का हार, जन्म लिया लव-कुश ने।

सीता नीर बहावे.....

आज अगर मेरा देवर होता-(2)

वे लेते नेग पर नेग, जन्म लिया लव-कुश ने।

सीता नीर बहावे....

आज अगर मेरी देवरानी होती-(2)

वे तो गाती मंगल गीत, जनम लिया लव-कुश ने।

(शिव-पार्वती) लोककथा से लोकगीत में परिवर्तित

स्त्री संबंधित लोकगीत

भोजा शिवजी म्हाने पिहारिया[1] रो चाव
पीहर म्हाने भेज दयो भोला नाथ
पारवती जे थे पीहर जाओ म्हाने भी लार ले चलो भोले नाथ।
महादेव जी जोगी की आवे म्हाने लाज।
सहेल्या म्हारी हँस पड़े भोलानाथ।
महादेव कर मोची को भेस
मोचाँ बेचण[2] नीकल्या भोलानाथ
पारवती हेला[3] देर बुलायो
कहो र मोची मोल कांई, भोलानाथ।
पारवती जी यो ही म्हारी मोचो रो मोल
मोची के लार चल पड़ो गोरा नार
मोची का रे मारु रे थप्पड़ दोय चार
मोँचा[4] थारी खोस ल्यू भोलानाथ।
पारवती फिर आई हाट बाजार
उस्सी मोचाँ नहीं मिल्यी भोलानाथ
पारवती फिर हेलो देर बुलायो
फिर कहो इनको मोल हें भोलानाथ।
पावरती यो ही म्हारी मोचां को मोल
मोची के संग जीमल्यो[5] गैर नार

---

[1] पिहारिया- मायका

[2] बेचण- बेचने

[3] हेला- आवाज़ देकर पुकारना

[4] माँचा- जूतियाँ

[5] जिमल्यो- खाना खा लिया

अनूदित गीत

भोला शिवजी मुझे है पिहर से चाव

सो पीहर मुझे भेज दो भोलानाथ

पार्वती जे तुम पीहर जाओ सो संग हमें ले चलो भोलेनाथ

महादेव जी जोगी हो, सो मुझे आती लाज

सहेलिया मेरी हँस पड़ती है भोलानाथ

महादेव कर मोची का भेष

जूतियाँ बेचने निकला भोलानाथ

पार्वती हाथ दिखा बुलाया

कहे रे मोची, दाम क्या है भोलानाथ

पार्वती जी ये है मेरी जूतियाँ का दाम

मोची संग चल पड़ो गौरा नार

मोची क्या मारू रे, थप्पड़ दो-चार

जूतियाँ तेरी छिन लूँगी भोलानाथ

पार्वती फिर गई बाजार

पर वैसी जूतियों नहीं मिली पूरे बाजार

पार्वती ने फिर हाथ दिखा बुलाया भोलानाथ

फिर बोले इनका दाम हे भोलानाथ

मोची के साथ भोज करो पराई नार

पारवती जी लिया जी गास्या[1] दोय चार
लट्टाधारी[2] हँस पड्या भोलानाथ।
पारवती जी जोगी से आवे छी लाज
मोची के संग जीमिया गौरा नार
अम्मा ए मरुँ ये क जीऊँ म्हारी माय
भोला सम्भू छल लीणी भोलानाथ।
बेटी ये थारी तो मरेली बलाय[3]
भोला सम्भू थे र छलो गौरा नार
भिलणी[4] बन प्रभू न छलया गौरा नार
कांधे चढ़ शिव ने छल्या गौरा नार।

रवि प्रकाश नाग के द्वारा राजस्थानी गीतारा
बाजरो पुस्तक में संकलित

---

[1] गास्या- निवाला
[2] लट्टाधारी- जट्टाधारी
[3] बलाय- बिल्ली
[4] भिलणी- आदीवासी औरत

पार्वती जी ने लिया ग्रास दो-चार

जट्टाधारी हँस पड़ा भोलानाथ।

पार्वती जी को जोगी से आ गई लाज

मोची के संग खाया गौरा नार

अम्मा अब न जीवित रहा जाए

भोला शम्भू ने छली ली भोलानाथ।

बेटी ये तुम्हारी ही करनी

भोला शम्भू को अब तुम छलो गौरा नार

भीलनी बन प्रभू को छला गौरा नार

कंधे ऊपर चढ़ गौरा छला शिव की भोलानाथ।

भात (मायरा)

बीरा म्हारा माँथा ने मेंमद[1] ल्याजो
बीरा म्हारा कानं[2] ने कुडंल[3] ल्याजो
म्हारी रखड़ी[4] रतन[5] जड़ाज्यो[6] जी
म्हारी रिमा-यें-झिमा[7] से बीरो आज्यो
बीरा म्हारा थे भी आज्यो, भाभी लाज्यो
सिरदार भतीजो लैरां[8] ल्याजो जी
म्हरो रिमा.....
बीरा म्हारी हिवड़ा[9] ने हँसली[10] ल्याजो
बीरा म्हारा हाथाँ ने बँगड़ी[11] ल्याजो
म्हारे चुड़ला[12] रै चूँप[13] लगाज्यो जी
म्हारे रिमा... भारे
बीरा म्हारो म्हारी कमर कुणकती[14] ल्याजो
बीरा म्हारा पगल्यों[15] ने छान्छर ल्याजो
म्हारी चूँदड़ रतन जड़ाज्यो जी
म्हारे रिमा...
बीरा म्हारा थे भी आज्यो, भोजन लाज्यो
उमराव भतीजे, गोद्याँ ल्याजो जी
म्हारे रिया...

रवि प्रकाश नाग के द्वारा राजस्थानी गीता रा गजरो पुस्तक में संकलित

---

[1] मेंमद- सर पर पहने जाने वाला आभूषण

[2] कानं- कान

[3] कुंडल- झुमकी

[4] रखड़ी- गले में पहनने वाला आभूषण

[5] रतन- रखडी में लगने वाला हीरा

[6] जड़ान्यो- जड़ाना

[7] रिमा-ये-झिमा- धूम-धाम

[8] बौरां- संग

[9] हिवड़ा- छाती

[10] हँसली- गले में पहनने वाला आभूषण

[11] बँगड़ी- बाजु में पहनने वाला आभूषण

[12] चूड़ला- चूड़ा

[13] चूँप- एक प्रकार का नग

[14] कुणकती- कमरबंद

[15] पगल्यों- पैरों में

हिन्दी अनुवाद

भाई मेरे माथा पर "मेंमद" लाइयो
भाई मेरे कानों को झुमकी ल्याजो
मेरी 'रखड़ी' रत्न जड़ाइओ जी
धूम-धाम से भाई में आजो
भाई आना, संग भाभी ने भी
संग मेरे भतीजा ने भी लाना जी
भाई मेरे
भाई मेरे छाती पर हंसली लाना
भाई मेरे हाथ पर 'बँगड़ी' लाना
मेरे चुड़ा में 'चूँप' लगाना जी
मेरे धूम-धाम से आना
भाई मेरे मेरी कमट पर कमरबंद लाना
भाई मेरे पाँवो में पायल लाना
मेरी चूँदरी रहन जड़ाना जी
भाई मेरे धूम-धाम से आना जी
भाई मेरे तुम आना संग भाभी
संग गोदी में भतीजा भी लाना जी
भाई मेरे धूम-धाम

हास्य लोक गीत

अरे बीच गाम[1] में, भई बीच गाम में
नई हबैली[2] बामें[3] रहेबे खाती[4] को
भई, बामे रेहबे खाती को
ओ, मानी[5] लगा दे
घाट[6] फूट गो पाट[7] बिगड़ गो चाखी[8] को
तू बोले च्यूँ[9] ने रे...
ओ कंछड़ा[10] बोले च्यूँने...
अरे लालसोट का डूँगर[11] मै
ओ लालसोट का डूँगर मै, संदुर लगा दिया भाँटा[12] मै,
नमकीन मिला दी आटा मै, और आग लगा दी टाँटा[13] मै,
तू बोले च्यूँन रे... कंछड़ा बोले च्यूँने...
ऊँ...

गायिका : लखनबाई मीणा

---

[1] गाम- गाँव
[2] हबैली- हवेली
[3] बामें- उसमें
[4] खाती- लकड़ी का काम करने वाला
[5] मानी- चाखी के मुख्य द्वार पर लगाने वाली लकड़ी जिसमें धान डाली जाती है (कीला मानी)
[6] घाट- जौ का पिसा हुआ आटा
[7] पाट- चाखो का वह भाग जिससे धान पिसा जाता है
[8] पाखी- चक्की
[9] च्यूँ- क्यों
[10] कंछड़ा- बिच्छू
[11] डाँगरा- खेत का किनारा
[12] भाँटा- पत्थर
[13] टाँटा- घास-फूस की बनी झोपड़ी

अनूदित गीत

अरे बीच गाँव में, भाई बीच गाँव में

नई हवेली, उसमें रहता खाती का

भाई, उसमें रहता खाती का

मानी लगा दे ओ मानी (कीला-मानी) दे

घाट फूट गया, पाट बिगड़ गया चाखी का

तू बोले क्यों ना रे...

ओ कंछड़ा (बिच्छू) बोले क्यों ने रे...

अरे लालसोट के डगट में संदूर लगा दी भाट्टा (पत्थर)

नमकीन मिला दी आटा में और आग लगा दी टाटा में

तू बोले क्यों न रे कंछड़ा बोले क्यों ने रे...

अँ अ... अें।

"नरसी को भात" की लोककथा पर आधारित लोकगीत

अरे वो जूनागढ़ नरसी बसे और नित उठ हरी गुण गाय
संतन कि सेवा करे, सै[1] सब धन दियो रे लुटाए
अब सब धन दियो लुटाए भगत के पास बची ना पाई[2]...
और थी नरसी की सूता[3] देख कर सरसागढ़ में ब्याई
रमाबाई के घर ब्याव सुता को, अब सुनो सजन चितलाई
और भात नौतबे[4] की रामाबाई ने सलाह मिलाई
सुनो सासु जी मेरी जो आज्ञा पाऊँ तेरी, तो मैं पीहर कू जाऊँ...
और जुनागढ़ मे जार बाबुल के घर बात न्योताऊँ
हाँ... री [तेरो बाबुल बैरागी[5] भातईयाँ[6] बन आबेगो...
अरे म्हारी पोड़ी[7] पे बाबा जी लारे लाबेगो...]-(3)
हाँ...ऐ...ऐ...ऐ...रे
"तेरो बाबुल बैरागी भातईयाँ बण आबेगो
आरे म्हारी पोड़ी पे बाबा जी लारे लाबेगो]-(2)
अब रामाबाई... केह रई सास सूँ मैं चलयूँ और शादी के
दिन दो चार भात न्योताऊँ
सुनकर के इतनी बात सास न्यो[8] बोली, पिहर जाबे की बता
जबाँ क्यों खोली

---

[1] सैसब- सब कुछ
[2] पाई- पैसे
[3] सूता- बेटी
[4] नौतबे- न्योता देना
[5] बैरागी- संन्यासी
[6] भातईयाँ- जो भात लेकर आते हैं उन्हें भातई बोलते हैं।
[7] पोडी- सिड़ी
[8] न्यो- जैसे

अनूदित गीत

अरे जूनागढ़ में नरसी बसे, जो नित उठ हरी गुण गाये

संतों की सेवा कर-कर, सब धन दिया लुटाए

सब धन दिया लुटाए, भगत पास बची नहीं एक भी पाई

नरसी की बेटी रमाबाई, थी सरसागढ़ में ब्याई

रामाबाई के घर ब्याह बेटी का, अब सुनो ध्यान लगाए

और भात नौतने की रामाबाई ने सलाह करी

सुनो सासू जी आज्ञा दो मुझे, तो मैं पीहर जाऊँ

और जूनागढ़ में जाकर, बाबुल के घर भात न्यौत कर आऊँ

हाँ...री तेरा बाबुल वैरागी भाती बनकर आएगा-(2)

अरे मेरो द्वार पर बाबाजी संग में लाएगा।-(2)

अब रामाबाई कह रही सासू से, मैं शादी पर दो-चार न्यौत आऊँ

सुनकर बात सासू यूँ बोली, पीहर जाने की बात

जबान से कैसी खोली

बाने सब धन दियो लुटाए बचो नहीं बाकी अब गई,

बिगड़ बात सारी नरसी मेहता की

ऊ का देगो भात भतईया, ऊ तो शंख, झालर[1] संत बजईया

तू मत जा रामाबाई तू बड़े घरन में ब्याई[2]

एक कागज़ कलम मंगाओ और पाँती[3]

लिख दूत पठाओ...

अब बाकू लिखजो थारो हाल,

अनोखो माल संग में लईओ नहीं तो भात न्यौता मत आइयो

[नरसी नारद तुम आईयो हों तो कागद कलम लइयो

सो पंडित लियो बुलाए]-(2)

ओ तेरी बाबुल बैरागी भातईया आबेगो

आरे म्हारी पोड़ी पे बाबा जी लारे लाबेगो...-(2)

गायक : धवले मीणा (नियो कैसेट्स)

---

[1] झालर- किर्तन में बजाने वाले वाद्य

[2] ब्याई- शादी

[3] पाँती- पोथी

उसने सब धन दियो लुटा, बचा नहीं अब बाकि

बिगड़ गई सब बात नरसी मेहता की

वो देगा भात-भतईया, वो तो संत शंख, झालर बजाए

तू मत जा रामाबाई, बड़े घर में है ब्याई

एक कागज कलम मँगाया और पाती लिख पंडित भिजवाया

अब लिख दो सारा हाला, अनोखा माल संग लाना वरना मत आना भातईया

नरसी नारद तुम आना, कागज कलम लाकर पंडित लिया बुला

ओ तेरा बाबुल बैरागी भाती बनकर आएगा।

ओ ओ मेरे द्वार पर संग बाबा जी लाएगा।

कथा पर आधारित लोकगीत कथा

"डिग्गीपुरी का राजा"

सुड्डा गायन

अजी एक समय की बात सभा में हँसी परी कूँ आए ये...

और होयो क्रोध मे सुरपती[1] परी वाने तुरंत दी भजाये[2]

अब दयी तुरंत भजाये बारा बरस श्राप दियो बिचारी बा नाटे

तुरंत दी भजाए बारा बरस मृत्यु लोक में काटे

अरे दियो श्राप राजा ईद्रं ने पारी विदन में आई

और हे।

नहीं कोई ठोर ठिकाना दिल में नू घबराई

और विधाता कुण के द्वारे जाऊँ

और बारा बरस या मृत्यु लोक मे कैसे राम बिताऊँ,

अरे वन में इकेली भटकत डोलूँ।

अरे दिल में चिंता लग रही भारी कैसे तो नारी धर्म घटेगा

और झाड़ झाड़ लागू नारी, और निश्चय ही नारी धर्म घटेगा

अरे गेला गुआ...

अरे रे भईया मौसे बैहण धर्म की खिजो ओ... रे रे रे रे

अरे होण हार की बात वे दिन में, भूप डीग्गी को आयो राजो

अरे बन में तो मिल गई परी डोलती,

बासे न्यू बतड़ायाओ अरे तू हैं कौण गाँव से आई,

कौण[3] नगर की रहने वाली कौण पिता और माई,

---

[1] सुरपती- राजा

[2] भजाए- भगाये

[3] कोण- कौन

उसने सब धन दियो लुटा, बचा नहीं अब बाकि

बिगड़ गई सब बात नरसी मेहता की

वो देगा भात-भतईया, वो तो संत शंख, झालर बजाए

तू मत जा रामाबाई, बड़े घर में है ब्याई

एक कागज कलम मँगाया और पाती लिख पंडित भिजवाया

अब लिख दो सारा हाला, अनोखा माल संग लाना वरना मत आना भातईया

नरसी नारद तुम आना, कागज कलम लाकर पंडित लिया बुला

ओ तेरा बाबुल बैरागी भाती बनकर आएगा।

ओ ओ मेरे द्वार पर संग बाबा जी लाएगा।

कथा पर आधारित लोकगीत कथा

"डिग्गीपुरी का राजा"

सुड्डा गायन

अजी एक समय की बात सभा में हँसी परी कूँ आए ये...

और होयो क्रोध मे सुरपती[1] परी वाने तुरंत दी भजाये[2]

अब दयी तुरंत भजाये बारा बरस श्राप दियो बिचारी बा नाटे

तुरंत दी भजाए बारा बरस मृत्यु लोक में काटे

अरे दियो श्राप राजा ईद्रं ने पारी विदन में आई

और हे।

नहीं कोई ठोर ठिकाना दिल में नू घबराई

और विधाता कुण के द्वारे जाऊँ

और बारा बरस या मृत्यु लोक मे कैसे राम बिताऊँ,

अरे वन में इकेली भटकत डोलूँ।

अरे दिल में चिंता लग रही भारी कैसे तो नारी धर्म घटेगा

और झाड़ झाड़ लागू नारी, और निश्चय ही नारी धर्म घटेगा

अरे गेला गुआ...

अरे रे भईया मौसे बैहण धर्म की खिजो ओ... रे रे रे रे

अरे होण हार की बात वे दिन में, भूप डीग्गी को आयो राजो

अरे बन में तो मिल गई परी डोलती,

बासे न्यू बतड़ायाओ अरे तू हैं कौण गाँव से आई,

कौण[3] नगर की रहने वाली कौण पिता और माई,

---

[1] सुरपती- राजा

[2] भजाए- भगाये

[3] कोण- कौन

अनूदित गीत

अजी एक समय की बात सुनो, हँसी परी को आगी ये ये

हुआ क्रोध में सुरपति, परी को तुरंत भगाया

तुरंत दी भगाए, बिचारी के न कहने बारह बरस का श्राप दिया

तुरंत दी भगाए, बारह बरस मृत्यु में काटे

अरे दिया श्राप राजा इन्द्र ने, परी चिंता में आई

हे नहीं कोई ठोर-ठिकाना ये सोच घबराई

और अब विधाता किसके द्वार पर जाऊँ

और बारह बरस या मृत्यु लोक कैसे राम बिताऊँ

अरे वन में अकेली भटकती फिरू

अरे चिंता लग रही मारी कैसे तो नारी धर्म बचेगा

और कांटा-झाड़ चुबती नारी, ऐसे में निश्चय धर्म घटेगा

अरे ओ राह दिखा

अरे रे भाईया मुझसे, धर्म-बहन की कहना ओ... रे रे

अरे एक दिन भाग्यवश वन में, आया डिग्गीपूरी का राजा

अरे उसको वन में परी भटकती, उससे वो बोला

अरे तू है कौन गाँव से आई, कौन नगर की रहने वाली

कौन पिता और माँ

अरे कौण पिता और माई कैसे भटकत डोले अकेली,

नहीं कोई तेरी संग सहेली।

अरे के बोली परी अर्ज सुनों भाई

और आसमान ने पटकी और घरण मे झेली

और न मेरे भईया, भौजाई

रोती फिरूँ अकेली

अरे ओ गेला गुआ...

अरे ओ भईया मोसे बैहण धर्म की खिजो[1]...

अरे बोल्यो राजा डिग्गी पुरी को कि बहना तू चल मेरे संग में

अरे में हूँ राजा डिग्गीपुरी को निरबे[2] रेह महलन में,

अरे बोली परी अर्ज सुन भाई

और बणा[3] धर्म की बैहण बचन दे, जब मानूँगी तेरी

अरे के तू मोसे[4] तो रूठ गयो करतार,

बणा लेजा घर बैहण घर जातांई नार दाग मत खीजो

और बणा धर्म की बैहण

मोसू तो भाई बन रिहजो-(2)

दे दियो बचन, भूप संग आई-(2)

और देख पराई नार[5], गीरी गच खाए देख भोजाई अरे।

अेरे बोहत री समझावे राजा नई रे समझ मे आए

माहरे नही संतान पिया, न्यू नार दूसरी लायो

अरे या तो मोकू झूठो बहकावें[6] थारी साँच कतई नी आबे,

---

[1] खिजे- कहना

[2] निरबे- सदा

[3] म

[4] मोसे- मेरेसे

[5] नार-नारी

[6] बहकावे- बहकाना

अरे कौन पिता और माई, कैसे भटकती अकेली

नहीं कोई तेरे साथ सहेली

अरे बोली परी सुनो अर्जी भाई मेरी

आसमान पटकी और

धतरी ने झेली

और न मेरे भईया-भाभी, रोती फिरूँ अकेली

अरे ओ राह दिखा...

अरे भईया मेरे से धर्म-बहन ही कहना

अरे बोला राजा डिग्गी पुरी का, बहन तू चल मेरे संग में

अरे मैं हूँ राजा डिग्गीपुरी का, निर्भय हो रह महल में

अरे बोली परी अर्जी सुन भाई, बना धर्म-बहन के वचन जब मानूगी तेरी

अरे कि मेरे से तो भगवान भी गया, तो तू घर जाकर धोखा मत न देना

मेरे से भाई बन रहना-(2)

दे दिया वचन भूप साथ आई-(2)

और देख पराई नारी, देख गिरी रे भाभी

अरे बहुत ही समझाए राजा, पर एक समझ न आए

हमारे नहीं है संतान पिया, सो तू लाया दूसरी नार

अरे तो मुझे ही झूठा बहकाए, तेरी बात मं नहीं है रे सच्चाई

मैं तो थारी सौगन खाऊँ और सौ-सौ लिया रांड पिया में मईया के जाऊँ

आरे म्हारे गल्ला ही कुटूम्भ, कबिलो म्हारी तो हरी नई बात बिगड़ी और

अरे देदे तो एक डाल-(2)

राम जी पाबन रहती थारी-(2)

धर्म कर्म उठगो नाहि या लगे या बहण धर्म की मेरी

मत करजो कोई बेहम लगैया, नणद धर्म की तेरी

अरे बेहण धर्म की खीजो-(2)

अरे तू अब तू राख जार महल में, चोखो मन तेरो लग जाओगो

और खोटो समय बिचारो को इन महलन में कट जायगो-(2)

याका घर बाड़ा आ जाएंगा और न आया तो देख ठिकाणों

हम शादी कर दिंगा आ...

अब संग-संग रहबे दोनु नणंद और भोजाई

एक दिना राणी राजा डिग हँसती हँसती आई

अरे एक...(2)

अरे डोला है बहणा हूँ सोणिली-(2) अरे बहण आपंणी सोणिली[1]

की देण पिया जी ननंद महल मे आई और सूदी[2] होगी सारा

घर में दूब जमाई ओ गे...

अरे नंनणद आई महल में जद

तबसे होगो भारी पाँव, पिया अब सूदी आगी म्हारी

ओर छोरो सो हो जावे गाद्दी सूनी न व जावे थारी-(2)

और नौ महिना गये बीत राणी ने तो महल में सूत गायो

राजा ने तो धूमधाम से छोरा को ही कुआँ पुजाओ

ओ...गुआँ...

---

[1] सोणिलि- भाग्यशाली

[2] सूदी7 अक्ल

मैं तो तेरी खाऊँ कसम, सौ-सौ ले आ सौतन मेरी मैं माँ जाऊँ

अरे हमारे बड़ा है घर-परविार, मेरी तो भगवन ने ही बात बिगाड़ी।

अरे दे देता एक डाल-(2)

राम जी पवित्र रहती तेरी-(2)

धर्म-कर्म उठा नहीं रहे या तो लगे धर्म-बहन तुम्हारी

मत करना कोई वहम, ये लगै तेरी ननंद धर्म की तेरी

अरे बहन धर्म की कहना मेरे भाई-(2)

अरे तू अब तू रख में इसे, तेरा मन भी लग जाएगा।

और है बुरा समय बिचारी का, इन महलों में ही कट जाएगा-(2)

इसके घरवालो आ जाएँगे और न आए तो देख ठिकाना

हम शादी कर देंगे आ...

अब रहती संग-संग, दोनों ननंद-भाभी

एक दिना रानी राजा के पास, हँसती-हँसती आई

अरे पिया है बहन बहुत भाग्यशाली, अरे बहन है अपनी भाग्यशाली

पिया जिस से पिया ननंद महल में आई, और सीधी आ गई

घर में, नहीं घास जम जाती ओ गे...

अरे ननंद भाई महल में जबसे

तबसे होगा भारी पाँव, पिया अब तो सीधी आ गई हमारी

ओर छोआ सा हो जाए, गद्दी सूनी नहीं जाए तेरी रे

और नौ महीनो गए बीत, रानी ने तो महल में बेटा ही पाया

राजा ने तो धूमधाम से, कुआँ पुजाया छोरा का

औ... गुआँ

अरे नणंद ने भारी गरब लुटाओ

अरे नणंद ने भारी गरव लुटाओ के घर-घर मंगल मय रही नारी

हरी खुशी मेहल में भारी...

अरे के छारी खुशी महल में भारी

कि अमावस सोमोति जब आई और एक दिना रानी

राजा सू महलन मेरे बतड़ायी

ओ एक दिन रानी राजा सू महलन में रे बतड़ायी[1] राम जी ने धरो

पेऐ...

अरे राम जी धरोरे मूंड पे रे हाथ सुधरी तेरी रे बिगड़ी बात

अरे पिया जीरे मत भूले रे भगवान और गंगा नाहवे चलो आज

थम मेरो रे केहणों[2] मान

मोसू बैहण धर्म की खिजो[3] रे-(2)

अरे राजा राणी छोड़ बैहण कू गंगा नहाबा[4] जाबे। होणी

होणी होवे पेच विधणा से नहीं खेबे-(2)

रह गई आज अकेली बाई जब मंत्री ने नीत डिगाई

अरे मंत्री ने नीत[5] डिगाई[6] यातो है सुकुमारी बण जाए या

म्हारी घर वाड़ी अरे बण यातो म्हारी घर वाड़ी

या तो धर्म बेहण बण आई काँई करेगे राजो

राजी तो हो जाएगी बाई, अरे राजी तो हो जाएगी बाई

वा तो छिंड महलन पे आयो अरे वा तो छिंड महलन पे आयो

अरे वाने तो दुकड़ा जा खटकायो।

---

[1] बतड़ाई- बातें की

[2] केहणों- कहना

[3] खिजो- कहना

[4] नहाबा- नहाने

[5] नीत-नज़र

[6] डिगाई- ललचाना

पुजाया छोरा का...

अरे ननंद ने भारी गर्व जुटाया

अरे ननंद ने भारी गर्व जुटाया, के घर-घर मंगलमय रही नारी

हो रही खुशी महल में भारी

अब समोती अमावस जब आई और एक दिन रानी राजा से बोली

अरे राम जी रखा हाथ तुमने सर पर, सुधर गई बिगड़ी

अरे पिया जी भगवान ने मत भूलो और कहना मेरा मान लो

चलो गंगा स्नान को

अरे रे मुझसे बहन धर्म की खीजो...

अरे राजा रानी छोड़ बहन को गंगा नहाने को होगे तैयार

और करणी या विपत्ति कह नहीं आती

रह गई आज बहन अकेली, जब मंत्री ने देख बुरी नियत लगाई

अरे मंत्री ने बुरी नियत लगाई, या सुन्दर राजकुमारी बन जाए मेरी घरवाली

अरे बन जाए ये मेरी घरवाली

ये तो धर्म-बहन है बनकर आई, क्या करेगा राजा

खुश तो जाएगी बाई, अरे खुश हो जाएगी बारई

वो तो चढ महलों पर आया,

अरे वो तो चढ़ महलों पर आया

अरे उसने तो जा दरवाजा खटकाया

आगयो बेहम बैहण के मन में, क्रोध कर मंत्री कू महल सू खदेड़ भगायो

मंत्री सू अपमान सहन ना होयो बाई जी के पीछा सू भतीजा मार गिरायो

अरे भतिजे कू जगा रही बाई रे, भति जे कूजगा रही बाई...

और हले चले न कतई देख वा भारी घबराई, लाल कू या काँई होगोरे, लाल कू या काँई होगी ओ...

और उठा लियो भर बात पलंग पे सोतो हि रेहगो

धार नैन से लग रई है...

और देख भतीजे को बुआ भर-भर हिल्की[1] रोरई है

भ्रात जब आवेगो- (2) देख घबरावेगो।

कैसे करेगो मेरो बीर...(2)

अरे सुणी जब रानी ने वाणी-(2)

और छाती का होये दो टूक

छोड़ खां गयो रे लाल मेरी-(2)

मेरो जुड़तो दिपक भुजो आज देख लहू तेरो

बिल्ख रही मेहतारी रे बिल्क रही मेहतारी

और हो रही लोट-पड़ोट लाड़ले बैठी हित्यारी

बुढ़ापे में डाल दयी मोकू अरे बुढ़ापे में डाल दयी मोकू

मेरी खोंस लई दाल या आच्छो लगो नहो तोकू

बिल्ख रही हे राणी गिरे नैन पाणी कैसी करी रे करतार

बिल्ख रही है राणी।

गायिका : लखनबाई मीणा

उम्र : 45 साल, दानारपुर, करौली, राजस्थान

---

[1] हिल्को,- सिस्कियाँ

आ गया वहम बहन के मन, किया क्रोध मंत्री पर महल से खदेड़ भगाया
मंत्री से हुआ नहीं सहन अपमान, बाई के पीछे से भतीजा मार गिराया
अरे देख भतीजा को जगा रही बाई
भतीजे को ये क्या हो गया
है हल-चल न काई, देख वे तो बहुत घबराई
लाल को ये क्या हो गया रे-(2)
और उठा लिया भर बात पलंग से, सोता ही रह गया
धार नैन से लग रही है...
और देख भतीजे को बुआ भर-भर आँसू रो रही है
भाई जब आवेगी...(2)
देख घबराएगा कैसे करेगा मेरा भाई जी-(2)
अरे सुनी जब रानी या कहानी
और पापी का होए दो टुकड़े
छोड़ लाल कहा गया मेरा...(2)
मेरा जलता दीपक बुझ गया, जब आज देखा लहु तेरा
रो रही माँ री, रे रो रही माँ री
हो रही लोट-पड़ोट, लाड़ले बैठी हत्यारी
बुढ़ापे में डाल दी मुझे अरे बुढ़ापे में डाल दी मुझे
बिलख रही है रानी, गिर आँखों से पानी
कैसी करी रे भगवान बिलख रही रानी...।

हरदोड़ का भात की लोककथा पर आधारित लोकगीत

सुड्डा गायन

अरे हात जोड़ पहले गजानन को मनाते हैं

हम हात जो पहले गजानन को मनाते हैं

और सबल सभा मे सब शीशी को झुकाते हैं

होगी यदी भुल माफी हम चाहेंगे-(2)

और भक्त हरदौल की कथा को तो सुनाऐंगे

और बोलया दुत मानो भुत साँचा[1] मेरी बात को-(2)

और आँखो देखी तेरी राणी मैने आधी रात को

अरे जाने काँई[2] बतड़ाबे[3] रात तेरा भाई सूँ

या काँई-काँई बतड़ाबे रात तेरा भाई सूँ

और डरे नई कतई[4] जगत हसाँई सूँ

अब तेरी मेरी, मेरी तेरी दूँती चुगली

यायी दूँतन मेरो यार बनायो माहरो हिंदुस्तान गुलाम

"ओ... बदनामी सूँ को डरपे[5] समझादे मन मत बाड़ी ने...

देबर, झालो देर बुलाओ छीत्तर साड़ी ने...]-(2)

के राजा कर मेरा विसवास, भूप तू कर मेरो विश्वास

और या राणी करदई तेरे तो खानदान की ऐसी तैसी

घुट-घुट तो झुटों ही प्यार दिखाबे

घुट-घुट दैबर सू बतड़ाबे

मौसू तो झुठों ही प्यार दिखावे

जब महलन में होई अकेली और बुलवाले हरदौल मनावे रंगरेली अलबेली

---

[1] साँची- सच

[2] काँई- क्या

[3] बतड़ाबे- बात करे

[4] कतई- कभी

[5] डरपे- डरनी

अनूदित गीत

अरे हाथ जोड़ पहले गजानंन को मनाते हैं

हम हाथ जोड़ पहले गजानंन को मनाते हैं

और भरी सभा में हम सब जन शीश झुकाते हैं

यदि हुई कोई भुल माफी हम चाहेंगे-(2)

तो अब भक्त हड़दोड़ कथा हम सुनाएंगे

और बोला दूत मानो मेरी साँची बात

और देखी तेरी रानी मैने आधी रात को

जाने क्या बात करे, तेरे भाई से आधी रात

जाने क्या-क्या बातलावे संग तेरे भाई से

और डरे नहीं बिल्कुल जगत हँसाई से

अब तेरी मेरी, मेरी तेरी चुगली

इसी चुगली ने मेरा यार बनाओ...

ओ बदनामी से डर, समझावे अपनी मत मतवाली को

देवर हाथ हिलाकर बुलाया, चरित्र वाली ने

कर राजा मेरा विश्वास, देव तू कर मेरा विश्वास

या रानी कर देगी, तेरे तो खानदान का नाश

छिप-छिप देवर से बतलावे-2

मुझसे तो झुठा ही प्यार दिखाए

जब महल में होए अकेली और बुलवा कर हरदौड़ संग

खे कालो है भीतर से हड़दोल औ... काड़ो भीतर से हड़दोल
ठगले तौ से मीठे बोलके भारो बने भगत को बच्चा और देखत
मे लगे सीधो सो लागे पर है बैरिया का बच्चा
दिल भईय को याने तोड़यो, दिल भईया को बाने तोड़यो
नातो जाने भोजाई से जोड़ो, फिट में राजा के बेणई... बात
और इसलिए शादी की या बर-बर में नाटे
अहे लगादे इस भगत में आग, लगादे भात इस आग
म्हारे[1] जचो नही या राग जचति राजा के आबे और सौ
भुखन तु तोले और जियड़ो[2] बड़ जाबे
ये काँई बड़ा घरन की बात, अरे रे ये काँई बड़ा घरन की बात
हाँसी तो कर रही सातूँ जात वस्तु बहोत बुरी ये तीन
अरे भाई कू भाई पे मरवाबे बेजर, जोरू और जमीन
अब राजा मेरो कर विश्वास दुष्ट ने बैठा दई न्यू फूट-(2)
अरे तेरी आँखन[3] देखी बात नहीं तेरे दिल की झूठँ
[ओ... बदनामी से को डरपे...
...साड़ी ने...(2)
ऐ राजा ने रानी बुलवाई कैसे... राजा ने रानी बुलवाई
दूत की सारी बात बताई, सुणतेई[4] ठाड़ी-ठाड़ी रोबे
और कौण ने बहकायो रे काईकू बीज पाप का बोवै
झूठाई डाटै मनसा[5] पाप-(2) याको[6] नहीं है पश्चयाताप

---

[1] म्हारे- हमारे
[2] जियड़ो- मन
[3] आखन- आँखों से
[4] सुणतेई- सुनते ही
[5] मनसा- मन का
[6] याको- इसका

ठगे तुझे, बोले मीठे बोल, बना फिर भगत को बच्चा
लगे सीधा, पर है बैरी का बच्चा
दिल व्यंग्या का इसने तोड़ा, दिल भईया का उसने तोड़ा
जिसने रिश्ता जा भाभी से जोड़ा, ये बात राजा के एकदम सटीक
और इसलिए शादी की या बार-बार करे मनाही
ओ लगा के इस भगत में आग, लगा दे ऐसे में आग
मुझे तो भाया नहीं यह काम, अब सब सच राजा को लगे
ऐसे में राजा का दिल जलता जाए
ऐसी कोई होती बड़े घर की बात, अरे अरे कोई बड़े घरन की बात
हँसी कर रही सातों जाति। वस्तु बहुत बुरी ये तीन
अरे भाई से भाई को मरवाने बेजर, पत्नि और जमीन
अब कर विश्वास, दुष्ट ने डाल दी फूट-2
अब तेरे आँखों देखी बात, नहीं तेरे दिल की झूठ
ओ बदनामी से नहीं डरती, समझाते मनमतवाली को
देवर हाथ हिलाकर बुलाया, चरित्र वाली ने
फिर राजा ने रानी को बुलवाया-2
दूर की सारी बात बताई, सुनते ही वह खड़ी खड़ी बहुत रोई
और किसने है बहकाया आप, क्यों बो रहे पाप का बीज
झूठ में रोके मन का पाप, इसका नहीं है रे पश्चाताप

तोकू तनिक शर्म नहीं आबे,
मेरे बेटो जैसो देबर तो सोने को बाके दाग लगाबे च्यो[1]
सोना के च्यूँ दाग लगावे
अरे भारो निको अरेरे भाये सुंदर भारो निको
रिश्तो देबर और भाभी को जे के तू अपराध लगाबे
अरे से बलम तू मत पाडे बदला-(2)
बाकी सुन-सुन झूठी बात रो रही ठाड़ी-ठाड़ी अबला
रे बलत मत करे पाड़े बदला
या बे मतलब बदनाम करे मेरी नणदी को भाईया
बलम मेरा करले तु विश्वास बलम तु कर ले विश्वास
सारा बदला गले में कटाए[2] मेरो देवर भोलो सो...
अब तेरे छा गयो मनसा पाप बलम तू तो नहीं रियो[3] सोदी मे
तेरे छागयो मनसा पाप बलम तूतो नहीं है सोदी में ऐ...
अरे तू कायकू करे अन्याय, खिलायो मैंने देबर गोदी में...
[अरे बदनामी सू को डरपे...
...एड़ी ने]-(2)
के मोकू मत समझाए हत्यारो के मै तो याकी भाभी प्यारी
जेके याको एहसान चुकायो, अरे छोड़ बलम को तेने
दिल देवर से जार लगायो, तेरी को मानू मैं साँच
तेरी तो नहीं मानू में साँच, नहीं है कतई साचँ कू आँच
साँची खेबे दुनिया दारी, अरे माहरे बलम कू है ये सक है,
ये एसी है मारी
ए तू तो मोसे झूठाँई प्यार दिखाबे, ऐरे तू तो मोसू झूठों ढोंग दिखाबे
और देवर कू बलम बनाबे, घड़याली आँसू मत लयाबे

---

[1] च्यों- क्यों

[2] कटाए- मारना

[3] रियो- रहा

तुझे थोड़ी शर्म नहीं आई, मेरा बेटा जैसा देवर क्यों सोने पर दाग लगाबे
अरे मेरा देवर बहुत अच्छा, अरे साजन अच्छा बहुत
रिश्ता देवर ओर भाभी का जिस पर तू अपराध लगाए
अरे रे साजन तू मत ले बदला
बात सुन-सुन खड़ी-खड़ी रो रही अबला
अरे साजन मत करे बदनाम मत ले बदला
मत बेमतलब बदनाम करे मेरी नंनद को भईया
साजन मेरा कर ले तू विश्वास-(2)
सारे बदले में गले कटाए मेरे देवर भोला सा
अब तेर छा मन में पाप, साजन नहीं रही तुझको समझ रे...
अरे तू क्यों करे अन्याय, खिलायो मैंने देवर गोदी में...
अरे बदनामी से डर.... समझाले ले मन मतवाली ने
देवर हाथ हिलाकर बुलाया चरित्र वाली ने...
मुझे मत समझाए हत्यारा, मैं तो भाभी हूँ उसकी प्यारी
जिसका या एहसास चुकाया, अरे छोड़ साजन का तुमने
दिल देवर से जा लगाया, तेरी नहीं माँनू सच्ची बात
तेरी तो नहीं माँनू में सच, बिल्कुल नहीं यहाँ सच कोय
सच्ची कहती दुनिया सारी, अरे मेरे बलम को है ये शक
कि तुम झूठा ही मेरे से प्यार दिखावे प्यार का झूठा ढोंग दिखावे
और देवर को साजन बनावे। मत घड़याल आँसू दिखावे

और मेरे आँखन देख बात मे तू तो तल-तल भेख बनावे

झूठायो भारी बैरागी मक्कारो-(2)

चलरो जाने कबसू चक्कर, तोकू जब जानू सतबंती

अरे मेरे जब आवेगी साँच, शरत मेरी मानेगी लजवंती

अरे मेरे लगी बदन में आग बताऊँ मेरो जब निकड़े गौर बैर-(2)

अरे तू तेरा ही हाथ से सतवंती तेरा देबर कू देवे जहर

[ओ बदनामी सू को डरपे...

...साड़ी ने...]-(2)

अहाँ रे हाँ... रे मत मरबाबे[1] भईया ने...-(2)

एहे मत मत मरवाबे भईया ने सनम पच्छतावेगो...

[अरे मत मरवाबे भईया ने बलम पच्छताबेगो

कोई दिण खांडा[2] पे, मांडा पे भाई आडो आबेगो]-(2)

एहेरी ऐ... मत मरवाबे बीरा ने, ओ देखी मत मरबाबे भईया ने

तेरा तो भईया पिया मेरे बेसेई कलंक विचारो जो तू लगाबे

तुम ही तो माता, पिता तुम हो-(2) इसो थारो भ्रात कही ना मिलेगा

और बड़े भईया कू भईया कहो मेरे स्वामी-(2)

भरोसा जगत मै तो कोई न करेगा

थे आगयो जब महल में हरदइ

भाभी को नहीं निकड़े बोल, बरसे से दिव्य नयन सो नीर[3]

अरे तू जेहर देबई खातिर भाभी ने बनाई खीर...

बिल्की दे भर-भर कर डकराबे-(2)

फटो जिया बाको जावे

बिचारी ने खोल बताई बात सब

---

[1] मरवाबे- मरवाने

[2] खांडा-मंडप

[3] नीर- आँसू

अरे मेरे आँखों देखी बात

झूठा है वैरागी मक्कारा-(2)

चल रहा जाने कब से चक्कर, तुझे तब जानूँ पतिव्रता

और जब आएगी सोच, शर्त जब मेरी मानेगी लाजवंती

अरे मेरे लगी बदन में आग, मेरा मन का बैर जब निकलेगा

अरे तू जब तेरा हाथ से सतवंती, देगी तेरे देवर को जहर

ओ बदनामी से डर...

समझा ले मन मतवाली ने...

अहाँ रे हाँ रे... मत मरवा वे भईया ने...(2)

एहे मत मरवा वे भाईया ने बालम पछताएगा

अरे मत मरवावे भाईया सनम पछतावेगा

किसी खांडा पर, मांडा पर भाई काम आएगा।

ए हे री रे मत मरवाए भाई ने, ओ देख मत मरवाए भईया ने

मेरा तो भईया पिया मेरे वैस ही कलंक लगाया

तुम ही तो माता, तुम ही हो पितामा

साजन तुम्हारा सा भाई कही नहीं मिलेगा

फिर भरोसा जगत में कोई नहीं करेगा

आ गया महल में हरदौड़-(2)

भाभी का नहीं निकला बोल, बरसे आँखों से आँसू नीर

अरे जहर देने को, भाभी ने खीर बनाई

सिसकी भर-भर रोए फटा जिया बाको जावे

बिचारी ने खोल दी सारी बात

कि तेरो मैरो देवरिया दौ-चार मिनट के साथ

कर लाला जी मोकू माफ

रे भाभी थर-थर रई काँप

दोनू हाथ जोड़ ड़कराई और नागिन बनके ये ड़सेगी तेरी या भोजाई

अरे तू... अरे तू भोजन करले ऐ देबर लाडला-(2)

ऐ तेरा भाई ने... ओ तेरा भाई ने मलाओ यामे जहर देबर लाडला

अरे मेरी बेटा बाने दोष लागायो-(2)

भोजन में मोपे विष मिलवाओ-(2)

ओ तू चिंता मतकर ऐ भाभी मेरी लाडली-(2)

मैं तो हुकुम पे खाऊँ तेरी खीर भाभी मेरी लाडली-(2)

मेरी बेहणा को लड़ा जो लाड ओ भाभी मेरी लाड़ली-(2)

मेरी बहणा को, ओ जीजा बेहणा कू लड़ा जो मेरो लाड़ भाभी

मेरी लाड़ली

अब भारी रोएगी जब मेरी बेहणा मे थड़ जाएगो[1] बीर-(2)

अरे बाके कौण भरेगो भात

घटा-घट घट-घट पीगो खीर...

मत मरवाबे बलम पछतावबे गे.....

...माँडा पे बलम आड़ो आबेगो-(2)

घटना सुनी जब बहन ने रोती बिलकती[2], चीकती पिहर मे तो वो

आगई...

अरे भाभी तू मुझे बता मेरे बीर क्यों तू खा गई

अरे कायकू मरायो मेरो बीरो-(2)

मेरा भईया ने बेरो काँई सुख पायो-(2)

---

[1] थड़जाएगो7 संभालना

[2] बिलकती- गिड़गिडाना

कि है देवर तेरा-मेरा दो-चार मिनट का साथ

कर लाला जी मुझको माफ

रे भाभी थर-थर काँपी

दोनों हाथ जोड़ रोई और अब नागिन बन के डसेगी तेरी या भाभी

अरे तू भोजन कर ले देवर प्यारा-प्यारा

ऐ तेरा भाई ने... ओ तेरा भाई ने मिलाओ इसमें जहर ओ लाडला

अरे मेरी बैरी उसने दोष लगाया

और मुझ से भोजन में विष मिलवाया

ओ तू चिंता मत कर ऐ भाभी मेरी प्यारी-(2)

मैं तो तेरे कहने पर खाऊँ तेरी खरी प्यारी भाभी-(2)

मेरी बहना को करना प्यार ओ प्यारी भाभी-(2)

मेरी बहना, ओ जीजा-बहना को करना प्यार मेरी प्यारी भाभी

जब बहुत रोएगी मेरी बहना,

अरे उसके कौन भरेगा भात फटा-फट

एकदम से पी गया खीर...

मत मरवाए साजन पछतावैगा...

खांडा पर, माँडा पर साजन काम आएगा...(2)

घटना सुनी जब बहन ने रोती, बिलखती आई

चीखती पीहर में वो आई गई

अरे भाभी तू मुझे बता मेरे भाई को क्यों दिया मरवाए

अरे क्यों मारा मेरा भाई...(2)

मेरा भईया ने तेरा कया सुख पाया

तुने हर बाके एंलाड लगाओ
वाके खोट कू लगयो तेने बिरो रे
तेने कायकू मराओ मेरी बिरो
अरे कायकू मरायो मेरो बिरो-(2)
काई भाई तेरे बेईमानी आई अरे ते भईया तेरे बेईमानी आई
मत खऊ ले आबा कू भाई जैसे तेने ना मरवायो
और जायदाद के मारे तेने बाको झुठो नाम लगायो
तू तो बैरी[1] है मेरे भाई अरे ते बैरी है रे भाई
ले बैठो जो कतई कसाई नातो टूटो मेरो तेरो
अरे भाई जे तो मरगो अब काई लगे तू मेरो
अरे एसे सुनतेई[2] बोल्यो जैसै दुष्ट... सुन उसे जब बोल्यो या तो दुष्ट...
भैया होयो बेहण से रूष्ट, भगजा तु महलन से बाहर
अरे मारयो[3] तो मारयो तु कर लिजो कछु उपाय
लम्बी पड़ी गले या तेरी, अरी लम्बी पड़ी गेल या तेरी
बेहणा नाहे लगे तु मेरी, मोकु[4] मत दे तू उपदेश
अरे तो कू जब पतो पड़ेगो जब फेरेगी[5] मेरा बैस
अरी खेबे देखो मेरा बीर या, खागो मेरा बीर
मेरो खागयो हरदोल बीर कू, खागो आध खीर
आए मेरे सुनो अरे मेरो सुनो सावण जायगो मेरो बीर
बाँध दूँगी कुण के मैं राखी
अरे कायकू मरायो मेरो बीरो...
मरायो मेरो बीरो...।

गायक : धवले मीणा, नियो कैसेट्स, करौली, राजस्थान

---

[1] बैरी- दुश्मन

[2] सुनतेई- सुनते ही

[3] मारयो- मारता

[4] मोकु- मेरको

[5] फेरेगी- फिराना

तुमने उसके क्यों लगाम लगाई, क्यों उस पर इलजाम लगाया
तुमने क्यों मरवाया मेरा भाई...(2)
भाई तेरी बेईमानी आई अरे तो भईया तेरी बेईमानी आगे आई
मुझे लकर आने कह जैसे भईया तुमने उसको मरवाया
और जायदाद के खातिर उसका झूठा नाम लगाया
तुम तो बैरी है मेरे भाई का, रे तू तो बैरी रे भाई का
ले बैठा बिल्कुल कसाई, तेरा मेरा रिश्ता टूटा रे
अरे लाडला भाई तो मर गया, अब क्या लगता मेरा
अरे ऐसा सुनते ही बोला ऐसा दुष्ट... बोला वह दुष्ट
भरा छुआ बहन से हुआ रुष्ट, भाग जा तू महल से बाहर अरे,
मारा तो मारा तु कर लेना उपाय
लम्बा पड़ा ये रस्ता तेरा, अरे लम्बा या रस्ता तेरा
तू नहीं है अब बहना मेरी, मुझको मत ना दे उपदेश
अरे तुझे कभी चलेगा पता जब फेहरेगी भात रे
अरे या मेरा भाई, या खा गया लाडला भाई मेरा
मेरा था खा गया हरदौड़ वीर, खा गया आधी खीर
आ रे मेरी सुनो, अरे मेरी, सावण जाएगा मेरा वीर
बाँध दूँगी किसी को भी राखी
अरे क्यों मराया मेरा वीर....

परिशिष्ट 2
ढूंढाड़ के आदिवासी गायक / गायिकाओं से किये गए साक्षात्कार

साक्षात्कार 1

नाम : लखनबाई मीणा

उम्र : 45 साल

ग्राम : दानार पुर, करौली, राजस्थान

शिक्षा : अशिक्षित

गायन शैली : रसिया, सुड्डा

सीमा : आप कब से गा रही हैं? और क्या-क्या गाती हैं आप?

लखनबाई : गाबे कूँ तो (गाने को तो मैं) 15 साल होगे (हो गये) आज। पहले रसीया गाती थी अब सुड्डा गाती हूँ।

सीमा : राम रसीया और सुड्डा में कांई (क्या) अंतर है?

लखनबाई : अंतर सिर्फ गाबे का (गाने का) है। लेहजा का है। बाकि दोनों में धार्मिक कथाएँ ही होती है। रामायण, महाभारत, भृतहरि की कथा, श्रीकृष्ण पुराण और विष्णु पुराण सब गाते हैं।

सीमा : इनकी कथाएँ आप कहाँ से गाती हैं कहीं लिखी हुई है क्या ये कथाएँ आपने?

लखनबाई : ये कथाएँ वेदों में लिखी, रामायण, तुलसीकृत ही की गाते हैं और ये सारी कथाएँ हमें याद हैं कहीं लिखी हुई नहीं है।

सीमा : सुड्डा में क्या गाते हैं, हमने उनमें भी क्या कथाएँ होती हैं?

लखनबाई : हाँ इनमें यही कथाएँ ही होवे (होती है)।

सुड्डे तो आध-आध घंटे से ऊपर के होते हैं। जैसे मैं गाकर बताती हूँ। (वह हमें आधे घंटे तक डिग्गीपुरी के राजा की कथा गाकर सुनाती है जो शोध में उपयोग लाई गई है।)

सीमा : आप लोग सुड्डा की कथाएँ कहाँ से लेते हैं।

लखनबाई : मेरो (मेरा) गुरु है उससे सीखी है।

सीमा : कौन है ये गुरु?

लखनबाई : है मेरो काकी सुसरो (मेरे चचियाँ ससुर) गाबे हो! (गाता था) गुरु चरण। दनारपुर के ही है, उनसे सुन सुनर (सुनकर) सीखे, उन्होंने ग्रंथ में से बना दी। हमने याद कर ली है उन्हें भी सारी कथाएँ याद ही हैं कहीं लिखी हुई नहीं है।

सीमा : आप जोड़ भी लेती हो क्या गीतों को, आपके सामने विषय दे दिया जाए तो आप जोड़ भी लेते हो गीतों को?

लखनबाई : हाँ, जोड़ लेती हूँ। जैसे दहेज, कलयुग, भ्रूण हत्या पर, लड़का-लड़की मनपसंद करते हैं, उन पर भी आजकल जोड़ लेती हूँ। जैसे एक गार (गाकर) बताती हूँ। इन्हें ढांचा कहते हैं।

हा आ... रे डिजे बाजे शादी में सुपाई नाचे थाणा का-2

अरे दिख रे डिजे बाजे शादी में सुपाई नाचे थाणा का

तोरण मारा पेराई कर दिया टूक ठिकाना का-2

अब हट जा ताऊ चाले रे भाई गाणो पिटवा दई बारात और चाचा ताऊ नाच रहे- 2 पिके मदिरा साथ ओ... चालाण चलगो शादी में डिजे पे...

सीमा : आपको क्या लगता है कि दंगलों में और किस तरह के विषय गाये जा सकते हैं?

लखनबाई : हाँ समाज की बुराईयों पर भी गाना चाहिए परन्तु गाँव के लोग धार्मिक कथाओं को ही सुनना पसन्द करते हैं। इसलिए हम गाती तो धार्मिक गीत ही हैं, परन्तु बीच-बीच में मैं उन पर

(सामाजिक विषयों) भी गा देती हूँ।

सीमा : समाज का कोई ऐसा वर्ग है जो आपको समाज सुधार के गीत दंगलों में गाने के लिए कहता हो?

लखनबाई : वैसे दंगलों का आयोजन गाँव वाले धार्मिक कथाओं के गायन के लिए ही करते हैं, जहाँ हमें सामाजिक कार्यक्रमों में बुलाया जाता है। वहाँ कई बार नेता या बड़े लोग बोल देते हैं कि शिक्षा पर गाओ, दहेज पर गाओ। वैसे सामाजिक तौर पर कम ही बुलाते हैं।

सीमा : ऐसा कोई गीत जो आपके दिल को छूता हो?

लखनबाई : हर दौड़ की कथा का वह प्रसंग जिसमें अपने भतीजे को मरा हुआ देखकर जोर-जोर से उर्वशी रोते हुए अपनी पीड़ा गाती है।

सीमा : आप गाती हैं और दूसरी सामान्य महिलाएँ आपको सुनती हैं तो आपको कैसा महसूस होता है?

लखनबाई : बहुत अच्छा लगता है। सब जानने लग गए हैं। सब सम्मान करते हैं पति भी गर्व महसूस करता है। मुझे गाता देख वे भी हमारे साथ ही आते हैं जहाँ भी गाना गाने जाना होता है। गाँव वाले कहते हैं मैंने गाँव का नाम रोशन किया है और कमाई भी हो जाती है, अच्छा गाती हूँ तो इनाम के तौर पर मेरी पूरी लुगड़ी (चुनरी) नोटों से भर जाती है तो अच्छा लगता है कि मेरा गाना सबको पसंद आया।

सीमा : आप ये जो लोकगीत गाते हो तो आपको लगता है कि लोग इससे ज्ञान लेते हैं कि सिर्फ मनोरंजन के लिए सुनते हैं।

लखनबाई : हाँ जनता पर असर पड़ता है धार्मिक गीतों से ज्ञान बढ़ता है। भाई-चारे की भावना बढ़ती है और आजकल के नए विषयों में

भी रूचि दिखा रहे हो वे भी दहेज, भ्रूण हत्या, नारी अत्याचार को रोकना चाहते हैं।

सीमा : आपके इस काम में परिवार का पूरा-पूरा सहयोग है?

लखनबाई : हाँ पूरा-पूरा सहयोग है परिवार के साथ-साथ गाँव वालों का भी है। गाँव वालों के कहने पर ही मैं गाने लगी थी और मेरे पति का भी पूरा सहयोग न होता तो यहाँ गा नहीं रही होती।

सीमा : आपका गाने का शौक कब और कैसे हुआ?

लखनबाई : पहले जब मैं छोटी थी तो हमारे गाँव में कन्हैया दंगल होते, वे चौक में गाते थे और हम बाखड़ (आँगन) में ही उचक-उचक (उछल-उछल) कर गाते व नाचते।

सीमा : ये जो दंगल होते हैं इनकी व्यवस्था कौन करता है? इसका खर्चा कौन उठाता है?

लखनबाई : ये जो दंगल होते उनकी व्यवस्था पूरा गाँव मिलकर करता है तथा हमारे रहने, खाने आदि की व्यवस्था में गाँव के बुद्धिजीवी व पैसे वाले ही करते हैं। वह गाने वाले दलों को ग्यारह से 21 हजार तक दान कर देते हैं। वह सभी पार्टियों में मिलकर बाँटा जाता है।

सीमा : दंगलों का समापन कैसे किया जाता है।

लखनबाई : यह लोग हमें शॉल, बर्तन, कपड़े, दीवार घड़ी, टंकी (गेहूँ का आटा रखने का जार) कलाई घड़ी आदि ईनाम में देते हैं।

साक्षात्कार कर्ता

साक्षात्कार स्थान - ग्राम : नंगरास, लालसोट,
गंगापुर रोड़, राजस्थान
दिनाँक 16/04/2014

साक्षात्कार 2

नाम : हरसाय मीणा

उम्र : 50 साल

ग्राम : कैमड़ा, जिला- करौली, राजस्थान

शिक्षा : आठवीं

गायन शैली : कहैन्या गीत, 'हेला ख्याल', पद,

सीमा : आप कितने अरसे से गा रहे हैं और कब से गायकी की यह परम्परा चल रही है?

हरसाय : परम्परा तो काफी दिन पहले से है, हमारे बुजुर्ग गाते थे इसको। करीब सौ सालों से गाते आ रहे हैं और मुझे गाते हुए 43 साल हो गए हैं।

सीमा : पद-दंगलों की शुरूआत कब से हुई?

हरसाय : करीब इसको हो गए साठ-सत्तर साल। तियालीस वर्ष तो मुझे ही हो गए देखते हुए।

सीमा : गायकी की तो यहाँ बहुत सारी शैलियाँ हैं। 'कन्हैया' भी गाते हैं लोग। 'हेला ख्याल' भी गाते हैं। आपने 'पद' गायन शैली को चुना इसके पीछे कोई वजह?

हरसाय : हाँ, गाने तो कई सुरों में गाते हैं। 'पद' में कम आदमी चाहिए और वैसे मेहनत भी कम है इसमें। 'हेला ख्याल' में एकजुट होकर सब गाते हैं। अब इसमें पार्टी पद-पद को ही दोहराती है। पद का सम्पुट लगाती है बार-बार। बाकी एक आदमी का काम रहता है। एक आदमी कहीं भी तैयारी कर सकता है। कहीं भी काम करता हुआ और वो संगठन का काम है। हेला ख्याल में पच्चीस-तीस आदमी एक सुर में नहीं बोलेंगे तो वो

हेला ख्याल नहीं गा सकते। बहुत मेहनत है उसमें।

सीमा : दंगल कब-कब आयोजित होता है?

हरसाय : वैसे बारह मास (साल भर) परन्तु कटाई होने के बाद जब अधिक खाली समय होता है तो अधिक करवाए जाते हैं।

सीमा : दंगल लोक गीत में कैसे गीत हैं?

हरसाय : दंगलों में ज्यादातर प्राचीन धार्मिक कथाएँ होती हैं रामायण, शिव पुराण, विष्णु पुराण, भागवत, महाभारत, रामचरित मानस, भगवान शंकर, विष्णु, कृष्ण, राम के चरित्र भी गए जाते हैं।

सीमा : यहाँ रामचरित मानस किसकी लिखी हुई गाई जाती है?

हरसाय : तुलसीदास की गायी जाती है क्योंकि प्रामाणिक है, जो वेद से हट कर हो उनकी कोई मान्यता नहीं है।

सीमा : आपके ख्याल में दंगल क्यों करवाए जाते हैं?

हरसाय : सुनने से ज्ञान बढ़ता है जनमानस में निकटता और भाईचारा बढ़ता है। साथ में भगवान का नाम स्मरण कर लिया जाता है।

सीमा : दंगल आयोजनों में सर्वप्रथम किस गायन शैली को अपनाया गया?

हरसाय : सबसे पहले कन्हैया गीत फिर हैला ख्याल उसके बाद फिर पद रसिया, और अब नए सुड्डा चल रहे हैं।

सीमा : इन सभी गायन शैली में क्या अंतर है?

हरसाय : अंतर सिर्फ गाने के तरीके में, वाद्य यंत्रों का है और सब में तो कथा ही गायी जाती है।

सीमा : क्या आप भी ज्यादातर धार्मिक कथाओं पर ही गाते हैं?

हरसाय : गाते तो धार्मिक कथाओं पर ही है। बाकी ऐसी भी कोई बात

चले तो गा देते हैं। जैसे भ्रूण हत्या, दहेज, शिक्षा व अन्य सामाजिक बुराईयों से संबंधित विषयों पर भी गा देते हैं।

सीमा : दंगलों में गाये जाने वाले लोकगीतों की विषय वस्तु को कौन तय करता है कि किन विषयों पर गाया जाए?

हरसाय : ऐसा है गाँव में जो दंगल होते हैं, उनमें तो पौराणिक कथा ही चलती है। लेकिन कुछ बातें ऐसी हैं जिनसे आधुनिक, उसमें कुछ ताली मिले तो वो तो अच्छी लगती है। उनको लोग-बाग चाहते हैं, उनकी माँग भी करते हैं। आजकल जैसे शिक्षा के ऊपर गाओ। ऐसा हमारे दंगलों में भी होता है और धीरे-धीरे जैसे पद की शैली बदली ऐसे विषय भी तो बदल रहे हैं। परंतु अभी भी दंगलों में लोग पौराणिक धार्मिक कथाओं पर आधारित लोकगीतों में ही रुचि दिखाते हैं।

सीमा : लोक रुचि को बदलने का काम भी आपका ही है?

हरसाय : वो तो है, लेकिन पुराणों की आड़ लेकर किसी बात को कहते हैं। पीढ़ियों से लोग जिसको मानते हैं। उनको एकदम हटाएँगे तो लोग हमको हटा देंगे। गाँवों में धीरे-धीरे मोड़ना अच्छा नहीं लगता। इसलिए वहाँ पुराणों का उदाहरण देकर भी नई सामाजिक कुरीतियों पर बात की जा सकती है।

सीमा : दंगलों में स्त्रियों ने कबसे गाना शुरू किया?

हरसाय : पहले से ही गुजर महिलाएँ गाती थी परन्तु मीणा महिलाओं ने गाने की शुरूआत रसिया गायन से की लगभग 10 से 11 साल हुए हैं परंतु आजकल सुड्डों में स्त्रियाँ ही गा रही हैं। स्त्रियों की वजह से दंगलों गायन में श्रृंगारिकता आ गई क्योंकि वे गाने के साथ नाचती भी हैं तो इससे जनमानस में रुचि जगती है।

सीमा : जो आप लोकगीत तैयार करते हैं वो कहीं लिखते भी हैं क्या?

हरसाय : नहीं, किताब़ की शक्ल में तो नहीं है परंतु कुछ-कुछ गीत मैंने लिखे हुए हैं।

सीमा : आपको नहीं लगता की अगली पीढ़ी के लिए ये गाने कहीं लिखे होने चाहिए?

हरसाय : हाँ लिखे होने चाहिए, दस-बीस गीतों का संग्रह भी किया था। पूरे गीतों का नहीं हुआ। अलग-अलग डायरियों में लिखे तो पड़े हैं। अच्छा तो अब मेरी गाने की बारी आ गई है, मैं चलता हूँ। बाकी बाद में पुछना।

साक्षात्कार कर्ता

साक्षात्कार स्थान - ग्राम : नंगरास, लालसोट,
गंगापुर रोड़, राजस्थान
दिनाँक 16/04/2014

संदर्भ ग्रंथ सूची

संदर्भ ग्रंथ-सूची

आधार स्रोत

1. ढूंढ़ाडी आदिवासी लोक गायक-गायिकाओं द्वारा सुनकर लिपिबद्ध किए लोकगीत
2. ऑडियो कैसेट्स (नियो और मेहर इत्यादि)

संदर्भ ग्रंथ

1. डॉ. गोपीनाथ शर्मा : **राजस्थान का सांस्कृतिक इतिहास,** राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, ए-26/2, विद्यालय मार्ग, तिलक नगर, जयपुर, 1989

2. डॉ. मदनलाल शर्मा : **राजस्थानी लोकगीतों का सांस्कृतिक अध्ययन,** राजस्थानी साहित्य संस्थान, यू.आई.टी. के पास, भगवती पौधशाला के सामने, जोधपुर, 1987

3. डॉ. शकुंतला मीणा : **मीणा जाति का अभ्युदय,** आलोक प्रकाशन, चौड़ा रास्ता, जयपुर, 2011

4. डॉ. शकुंतला मीणा : **मीणा जाति का उत्कर्ष,** अजय प्रकाशन, चौड़ा रास्ता, जयपुर, 2011

5. रावत सारस्वत : **मीणा इतिहास, राजस्थानी ग्रन्थागार,** सोजती गेट, जोधपुर, राजस्थान, 2012

6. रवि प्रकाश नाम : **राजस्थानी गीतं रो गजरो, साहित्यगार,** एम.एम. एस. हाइवे, जयपुर, 1987

7. लक्ष्मी नारायण मीणा : **मीणा जनजाति : एक परिचय,** मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, रबीन्द्रनाथ ठाकुर मार्ग, भोपाल 462003, 1991

अप्रकाशित शोधप्रबंध

1. पुष्य मित्र सिंह देव : **जयपुर क्षेत्र का भौगोलिक एवम् ऐतिहासिक परिचय,** शोध प्रबंध, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, 1984

2. भवगती लाल शर्मा : **भारतीय संगीत को राजस्थान की देन, शोध-प्रबंध,** राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, 1989

3. मंजुलता भट्ट : **राजस्थान के भट्ट परिवारों का संगीत में योगदान,** राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, 1995

4. संध्या गुप्ता : **राजस्थान के लोक वाद्यों का संक्षिप्त परिचय,** लघु शोध-प्रबन्ध, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, 1996

सहायक ग्रंथ सूची

1. डॉ. गोविन्द राजनीश : **राजस्थान का पूर्वी अंचल का लोक साहित्य,** राजस्थान ग्रन्थाकार प्रकाशन, जोधपुर, 1996

2. डॉ. प्रकाश चंद मेहता : **आदिवासी संस्कृति में प्रथाएँ,** डिस्कवरी पब्लिशिंग हाऊस प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, 110002

3. भँवर लाल मीणा : **भील और मीणा गीत,** अलख प्रकाशन, चौड़ा रास्ता, जयपुर, 2012

4. रावत सारस्वत : **ढूंढाड़ : संस्कृति और परम्परा,** प्रकाशन झूंथालाल नांढ़ला, जयपुर, 2006

5. राय बहादुर एवं हरदयाल सिंह : **राजस्थान की जातियों का इतिहास एवम् रीति-रिवाज,** महाराजा मानसिंह पुस्तक प्रकाश शोध केन्द्र, जोधपुर, 2010

पत्र-पत्रिकाएँ

1. अरावली उद्घोष : संस्थापक- सम्पादक वी.पी. वर्मा, ''पथिक'', उदयपुर, राजस्थान 313001

2. जनसत्ता : इंडियन एक्सप्रेस समूह, दिल्ली

3. राजस्थान पत्रिका : केसर, जवाहर लाल नेहरू मार्ग, जयपुर

4. संगीत (मासिक) : संगीत कार्यालय, हाथरस

शब्द कोश

1. सीता राम 'लालस' : **राजस्थानी शब्द कोश,** राजस्थानी हिन्दी वृहत कोश, राजस्थानी शोध संस्थान, जोधपुर, राजस्थान 1962

ढूंढाड़ के आदिवासी लोकगीतों में प्रयुक्त होने वाले वाद्य यंत्रों का चित्रांकन

मंजीरा

चंग

नंगाड़ा

झांझ

तबला

ढोल

नौबत

ढोलक

पूँगी

सारंगी

शहनाई

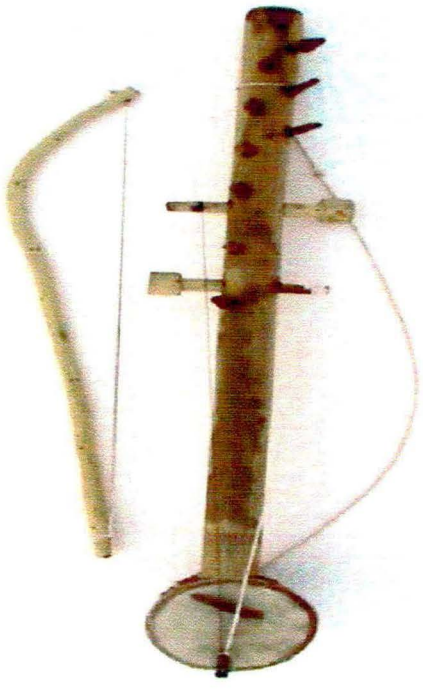

रावणहत्था

हारमोनियम

खड़ताल

इकतारा

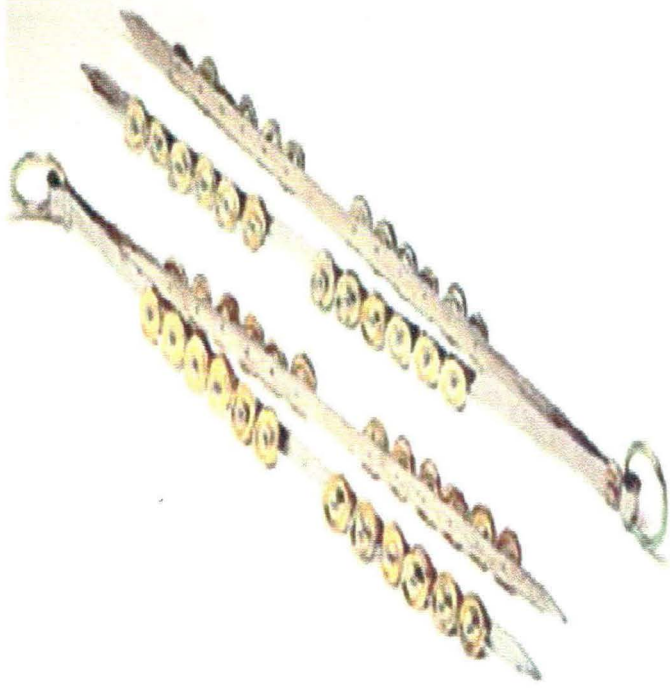

चिमटा